दैनिक सांध्य प्रकाश

भोपाल की धड़कन

वर्ष 53/ अंक 263/ पृष्ठ 8 / मूल्य₹ 2.10

संस्थापक- स्व. सुरेंद्र पटेल

■आर.एन.आई 22296/71 ■डाक पंजीयन मप्र/भोपाल/125/12-14

भोपाल, शुक्रवार 03 मई 2024 भोपाल से प्रकाशित

dainiksandhyaprakash.in

सांध्यप्रकाश विशेष

विदेश मंत्रालय ने भारत में धार्मिक स्वतंत्रता पर यूएससीआईआरएफ की रिपोर्ट को किया खारिज, कहा- यह पक्षपात पूर्ण

नई दिल्ली। भारत ने गुरुवार को संयुक्त राज्य अमेरिका अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता आयोग (यूएससीआईआरएफ) की एक रिपोर्ट को खारिज कर दिया, जिसमें देश में धार्मिक स्वतंत्रता पर चिंता व्यक्त की गई थी, यह कहते हुए कि पैनल दुष्प्रचार में लिप्त था और आम चुनाव में हस्तक्षेप करने का प्रयास कर रहा था। यूएससीआईआरएफ, एक स्वतंत्र, द्विदलीय अमेरिकी संघीय सरकारी एजेंसी, जो दुनिया भर में धार्मिक स्वतंत्रता पर एक वार्षिक रिपोर्ट जारी करती है, ने 2024 के लिए अपनी रिपोर्ट में कहा कि उसे भारत के बारे में ष्लगातार चिंताएं बनी हुई हैं, जहां उसे पीछे हटते हुए

देखा गया है।

यूएससीआईआरएफ को राजनीतिक एजेंडे वाले एक पक्षपाती संगठन के रूप में जाना जाता है। बुधवार को जारी रिपोर्ट के बारे में पूछे जाने पर विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जयसवाल ने एक नियमित मीडिया ब्रीफिंग में कहा, श्वे वार्षिक रिपोर्ट के हिस्से के रूप में भारत पर अपना प्रचार प्रकाशित करना जारी रखते हैं।

हमें वास्तव में कोई उम्मीद नहीं है कि यूएससीआईआरएफ भारत के विविध, बहुलवादी और लोकतांत्रिक लोकाचार को समझने की कोशिश भी करेगा। दुनिया की सबसे बड़ी चुनावी प्रक्रिया में हस्तक्षेप करने की उनकी कोशिशें कभी सफल नहीं होंगी। नई दिल्ली अक्सर यूएससीआईआरएफ जैसे संगठनों की रिपोर्टों पर भड़कती रही है और उन पर भारत के खिलाफ पक्षपाती होने का आरोप लगाया है। हाल के वर्षों में इसने हमेशा ऐसी रिपोर्टों को खारिज किया है।

यूएससीआईआरएफ ने अपनी नवीनतम रिपोर्ट में कहा कि आयोग की सिफारिशों और देश में विशेष रूप से गंभीर धार्मिक स्वतंत्रता के उल्लंघन पर राज्य विभाग की रिपोर्टिंग के बावजूद अमेरिकी विदेश विभाग ने 2023 में भारत को सीपीसी के रूप में नामित नहीं किया था। इसने सिफारिश की कि राज्य विभाग को अफगानिस्तान, अजरबैजान, भारत, नाइजीरिया और वियतनाम को सीपीसी के रूप में नामित करना चाहिए।

रिपोर्ट में तर्क दिया गया कि 2023 के दौरान भारत में धार्मिक स्वतंत्रता की स्थिति बिगड़ती रही और सरकार ने भेदभावपूर्ण राष्ट्रवादी नीतियों को मजबूत किया और मुसलमानों, ईसाइयों, सिखों, दलितों, यहूदियों और आदिवासियों को प्रभावित करने वाली सांप्रदायिक हिंसा को संबोधित करने में विफल रही।

रिपोर्ट में आरोप लगाया गया कि गैरकानूनी गतिविधियां रोकथाम अधिनियम, विदेशी योगदान विनियमन अधिनियम, नागरिकता संशोधन अधिनियम और धर्मांतरण विरोधी कानूनों के कार्यान्वयन के परिणामस्वरूप धार्मिक अल्पसंख्यकों की मनमानी हिरासत, निगरानी और लक्ष्यीकरण हुआ। रिपोर्ट के अनुसार, गैर सरकारी संगठनों ने 2023 में ईसाइयों के खिलाफ हिंसा की 687 घटनाओं की सूचना दी, जून 2023 में मणिपुर में झड़पों के दौरान 500 से अधिक चर्च और दो आराधनालय नष्ट हो गए और 70,000 से अधिक लोग विस्थापित हुए।

1989 बैच के पूर्व आईपीएस, ईओडब्ल्यू के पूर्व डीजी बनर्जी के खिलाफ विभागीय जांच पर कैट ने लगाई रोक

भोपाल। भारतीय पुलिस सेवा में 1989 बैच के पूर्व आईपीएस अधिकारी और ईओडब्ल्यू के पूर्व डीजी सुशोभन बनर्जी के खिलाफ डिपार्टमेंटल इंक्वारी पर कैट ने रोक लगा दी है। बता दें कि राज्य सरकार ने ईओडब्ल्यू के तत्कालीन डीजी सुशोभन बनर्जी के खिलाफ 24 फरवरी 2021 को चार्ज शीट जारी करते हुए डिपार्टमेंटल इंक्वारी के आदेश दिए थे।

इस पर बनर्जी ने पहले राज्य शासन को अपना प्रतिवेदन देकर इस पर रोक लगाने की मांग की थी। पर राज्य शासन ने उनकी इस मांग को खारिज कर दिया और जस्टिस वीरेंद्र सिंह को जांच सौंप दी। बनर्जी ने इस जांच के खिलाफ केंद्रीय प्रशासनिक अधिकरण में याचिका दायर कर डिपार्टमेंटल इंक्वारी को चुनौती दी। बनर्जी ने कहा कि उनके खिलाफ बिना किसी आधार के जांच बैठाई गई है। शासन इस मामले में हाई कोर्ट के आदेश का पालन नहीं कर रहा है।

कल कैट में हुई सुनवाई के बाद कैट ने इस मामले में फिलहाल विभागीय जांच पर रोक लगा दी है और शासन से जवाब मांगा है। बता दें कि पिछले चुनाव से पहले कमलनाथ के सलाहकार राजेंद्र मिगलानी सहित तीन लोगों के यहां हुई आयकर छापेमारी में 14.6 करोड रुपए जप्त किए गए थे। जांच के दौरान कुछ पर्चियां पर तीन आईपीएस अधिकारियों के नाम मिले थे जिनमें सुशोभन बनर्जी का नाम भी शामिल था। केंद्रीय चुनाव आयोग ने इन अधिकारियों के खिलाफ विभागीय जांच के आदेश दिए थे। केंद्रीय चुनाव आयोग ने इसे चुनाव में काले धन के इस्तेमाल का मामला मानते हुए जांच के आदेश दिए थे।

शहजादे को वायनाड से हार का डर, अमेठी से भागकर रायबरेली पहुंचे: मोदी

दुर्गापुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को पश्चिम बंगाल के बर्धमान-दुर्गापुर में सभा की। उन्होंने अपने भाषण की शुरुआत जय मां दुर्गा, जय मां काली और हर-हर महादेव के उद्घोष के साथ की। शहजादे को वायनाड से हार का डर है, इसलिए अमेठी से भागकर रायबरेली पहुंचे। वे सबको कहते हैं- डरो मत। मैं उनसे कहता हूं- डरो मत...भागो मत।

39 मिनट की स्पीच में मोदी पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी सरकार, संदेशखाली, राम मंदिर, राम नवमी, वोट जिहाद, कांग्रेस और राहुल गांधी के रायबरेली सीट से चुनाव लड़ने पर बोले। उन्होंने कहा- टीएमसी के एक विधायक कहते हैं, हिंदुओं को भागीरथी में बहा देंगे। ये कौन सी भाषा बोल रहे हैं। बंगाल सरकार ने यहां हिंदुओं को दोयम दर्जे का नागरिक बनाकर रख दिया है। प्रधानमंत्री बोले- संदेशखाली में दलित बहनों के साथ अत्याचार हो रहा था और यहां की सरकार आरोपी को बचाने में लगी हुई थी। वो भी सिर्फ इसलिए क्योंकि उसका नाम शाहजहां शेख है। श्री मोदी ने कहा- विपक्ष के लोग दो फेज की वोटिंग के बाद मोदी के खिलाफ वोट जिहाद कर रहे हैं। जिहाद का मतलब देश की जनता अच्छे से समझती है।

मैं मौज करने के लिए पैदा नहीं हुआ हूं

आप भी जानते हैं अगर पद-प्रतिष्ठा की लालसा हो तो एक बार इंसान पीएम की शपथ ले ले फिर उसके जीवन में ऊंचाई को प्राप्त हो ही जाती है, इतिहास में नाम दर्ज हो ही जाता है। लोगों को लगता है कि मोदी जी 2 बार पीएम रहे दुनिया में इतना नाम हो गया, अरे कभी तो आराम करो। मैं मौज करने के लिए पैदा नहीं हुआ हूं। मैं 140 करोड़ देशवासियों की सेवा करने के लिए निकला हूं।

मुझे देश और आप सबने बहुत आशीर्वाद दिया

मोदी बोले- मुझे देश ने और आप सबने इतना आशीर्वाद दिया है। शायद कोई इंसान अपने जीवन में ऐसी कल्पना तक नहीं कर सकता है कि ईश्वर रूपी जनता जनार्दन इतने आशीर्वाद बरसाएं और लगातार बरसाएं और सालों-साल ये आशीर्वाद बढ़ता ही जा रहा है। जीवन में इससे बड़ा संतोष क्या होता है।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा भोपाल से रवाना हुए। राजा भोज विमानतल पर उन्हें मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष विष्णु दत्त शर्मा, लोकसभा चुनाव प्रदेश प्रभारी डॉ महेंद्र सिंह, प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद ने विदाई दी।

सीएम योगी और एमपी के मुख्यमंत्री मोहन यादव पहुंचे संभल, जनसभा को कर रहे संबोधित

संभल लोकसभा क्षेत्र में जनसभा को संबोधित करने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और मध्य प्रदेश के सीएम मोहन यादव पहुंचे। दोनों नेताओं का मंच पर नेताओं ने जोरदार स्वागत किया गया। कैलादेवी धाम स्थित मैदान में एमपी के सीएम यादव ने कहा कि वर्तमान के युग में भाजपा जो कहती है वह करके दिखाती है। कहा कि मोदी और योगी की गारंटी इस बात का सबूत है। कहा कि कांग्रेस और सपा परिवारवादी पार्टी है। वह केवल वोट के लिए सारी चीजों का उपयोग करते है।

मोहन यादव से 6 देशों के प्रतिनिधिमंडल ने की भेंट

भोपाल। भारतीय जनता पार्टी के भाजपा को जानें अभियान के तहत शुक्रवार को 6 देशों के राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों ने मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा और प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी से भेंट की। प्रतिनिधि मण्डल ने मुख्यमंत्री डॉ यादव से भाजपा की विचारधारा के आधार पर प्रदेश सरकार द्वारा चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं के सफल क्रियान्वयन पर चर्चा की।

प्रतिनिधिमंडल में अविच पॉलार ओक्वीर (डायरेक्टर, फॉरेन अफेयर्स, नेशनल रिजिस्टेंस पार्टी, युगांडा), उदय शुमशेर जे.बी. राणा (फेडरल पार्लियामेंट सदस्य और केंद्रीय कार्यसमिति सदस्य, नेपाल), डॉ. जय कांत राउत (अध्यक्ष, नेशनल कौंसिल ऑफ़ जनमत पार्टी, नेपाल), काकुलंडला लियानागे सुमुदु दिलंगा (अध्यक्ष, यंग प्रोफेशनल ऑर्गेनाइजेशन, युएनपी श्रीलंका), एरियल बुलश्टेइन, वकील (प्रभारी, फॉरेन अफेयर्स, लिकूड पार्टी, इजराइल), विजय मखान (इंटरनेशनल रिलेशन्स, मॉरिशियन मिलिटेंट मूवमेंट, मॉरिशस), त्रान थान हुओंग (पॉलिटिकल कौन्सेलर, कम्युनिस्ट पार्टी, वियतनाम), होथी होंग हान (प्रथम सचिव, कम्युनिस्ट पार्टी, वियतनाम) शामिल रहे। इस दौरान पार्टी के प्रदेश मंत्री राहुल कोठारी, प्रदेश मीडिया प्रभारी आशीष उषा अग्रवाल, विदेश विभाग के प्रदेश संयोजक रोहित गंगवाल उपस्थित थे।

एमपी बोर्ड की 10वीं और 12वीं की पूरक परीक्षा 10 जून से

भोपाल। एमपी बोर्ड ने 10वीं और 12वीं पूरक परीक्षाओं का शेड्यूल जारी कर दिया है। इसके अनुसार सप्लीमेंट्री एग्जाम 10 जून से शुरू होगी और 20 जून तक चलेगी। 10वीं की सप्लीमेंट्री एग्जाम का पहला परचा हिंदी का होगा। मप्र माध्यमिक शिक्षा मंडल की 10वीं-12वीं परीक्षा के परिणाम 24 अप्रैल को घोषित किए जा चुके है। 12वीं परीक्षा में केवल एक विषय व हाईस्कूल परीक्षा में दो विषयों में अनुत्तीर्ण छात्रों को पूरक की पात्रता प्रदान की गई है। दोनों परीक्षाओं का समय सुबह 8 से 11 बजे के बीच रहेगा। दसवीं की परीक्षा में 10 जून को पहला पेपर हिंदी का होगा। 11 जून को गणित, 12 जून को उर्दू, 13 जून को सामाजिक विज्ञान, 14 जून को विज्ञान, 15 जून को अंग्रेजी, 16 जून को संस्कृत, 19 जून को मराठी, गुजराती, सिंधी, पंजाबी, मूक बधिर व दृष्टिहीन छात्रों के पेपर, 20 जून को एनएसक्यूएफ के सभी विषय व एआई का पेपर होगा। माशिमं की दसवीं परीक्षा में 1,15,839 व 12वीं में 1,04,745 विद्यार्थियों को सप्लीमेंट्री मिली है। सप्लीमेंट्री परीक्षा के आवेदन एक मई से जमा होना शुरू होंगे। आवेदन परीक्षा शुरू होने के पूर्व 7 जून तक जमा होंगे। परीक्षा शुल्क पांच सौ रुपए व पोर्टल शुल्क 25 रुपए रहेगा।

रायबरेली से चुनाव लड़ेंगे राहुल, नामांकन के लिए निकले

नई दिल्ली। राहुल गांधी अपनी पुरानी सीट अमेठी को छोड़कर आज रायबरेली से पर्चा भरेंगे। राहुल गांधी के नामांकन को ऐतिहासिक बनाने के लिए कांग्रेस ने पूरी ताकत झोंक दी है। आज रायबरेली में कांग्रेस विशाल जनसभा करेगी। राहुल गांधी कांग्रेस के तमाम दिग्गज नेताओं के साथ रायबरेली पहुंच गए हैं।

भाजपा ने रायबरेली से योगी सरकार में मंत्री दिनेश प्रताप सिंह को टिकट दिया है, जबकि अमेठी से स्मृति ईरानी लड़ रही हैं। पहले कांग्रेस नेताओं ने राहुल के अमेठी और प्रियंका के रायबरेली से लड़ने की बात कही थी। अमेठी सीट पर भी आज नामांकन का आखिरी दिन है। फुरसतगंज एयरपोर्ट पर उतरने के बाद प्रियंका और गहलोत अमेठी आ गए। किशोरी लाल के रोड शो में हिस्सा लिया। प्रियंका ने कहा- हम अमेठी में एक बार फिर सच्चाई और सेवा की राजनीति वापस लाना चाहते हैं। अब मौका आ गया है। ये आपका चुनाव है, आप लड़ेंगे, आप जिताएंगे।

केएल शर्मा ने दाखिल किया नामांकन

अमेठी लोकसभा सीट से कांग्रेस प्रत्याशी किशोरी लाल शर्मा ने शुक्रवार दोपहर गांधी परिवार का गढ़ मानी जाने वाली इस सीट पर नामांकन दाखिल कर दिया। नामांकन के पहले कांग्रेस कार्यालय से रोड शो निकालते हुए वह कलेक्ट्रेट पहुंचे। इस दौरान सैकड़ों की संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता मौजूद रहे।

कहा जा रहा है कि के एल शर्मा को गांधी परिवार से वफादारी का इनाम मिला है। वह मूल रूप से पंजाब के लुधियाना के रहने वाले हैं। 1983 के आसपास राजीव गांधी उन्हें पहली बार अमेठी लेकर आए थे। तब से वह यहीं के होकर रह गए। 1991 में राजीव गांधी की मौत के बाद जब गांधी परिवार ने यहां से चुनाव लड़ना बंद किया तो भी शर्मा कांग्रेस पार्टी के सांसद के लिए काम करते रहे।

इंदौर में नामवापसी के खिलाफ हाईकोर्ट में हुई सुनवाई, फैसला सुरक्षित

इंदौर। कांग्रेस के वैकल्पिक प्रत्याशी मोती सिंह पटेल (सब्स्टिट्यूट कैंडिडेट) ने एकल पीठ के याचिका खारिज करने के फैसले को खंड पीठ में चुनौती दी है। इस पर सुनवाई आज शुक्रवार को हुई। कांग्रेस नेता मोती सिंह पटेल का कहना है कि सिंगल बेंच के आदेश को लेकर गुरुवार को डबल बेंच में याचिका दायर की है। कोर्ट में मोती सिंह की ओर से एडवोकेट विभोर खंडेलवाल ने पक्ष रखा। मामले में जस्टिस सुश्रुत अरविंद धर्माधिकारी ने सुनवाई की।

हाईकोर्ट ने कहा, आपके 10 प्रस्तावकों के साइन कहां हैं। इसी वजह से फॉर्म रिजेक्ट हुआ। एडवोकेट खंडेलवाल ने कहा, नेशनल पॉलिटिकल पार्टी के लिए केवल एक प्रस्तावक के साइन मान्य हैं। 10 प्रस्तावकों के साइन निर्दलीय उम्मीदवारों को चाहिए।

सुप्रीम कोर्ट ने मध्य प्रदेश हाई कोर्ट के आदेश पर लगाई मुहर, अनारक्षित वर्ग में शामिल करने का मामला

जबलपुर। सुप्रीम कोर्ट ने मध्य प्रदेश हाई कोर्ट के उस आदेश पर मुहर लगा दी है, जिसके अंतर्गत यह अभिनिर्धारित किया गया था कि लोक सेवा आयोग की चयन प्रक्रिया के प्रत्येक चरण में आरक्षित वर्ग के प्रतिभावान अभ्यर्थियों को अनारक्षित वर्ग में शामिल करें।

सुप्रीम कोर्ट ने अपने उक्त आदेश के जरिये मप्र हाई कोर्ट की दो युगलपीठों के परस्पर विरोधाभासी आदेशों के कारण उपजे विवाद का पटाक्षेप कर दिया। प्रारंभिक व मुख्य परीक्षा में आरक्षित वर्ग के प्रतिभावान अभ्यर्थियों को शामिल न किए जाने से संबंधित युगलपीठ क्रमांक-दो के आदेश को सुप्रीम कोर्ट ने असंवैधानिक करार दिया। सुप्रीम कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि यदि आरक्षित वर्ग के अभ्यर्थियों ने कोई छूट प्राप्त नहीं की है तो भर्ती के प्रत्येक चरण में अनारक्षित वर्ग में उन्हें शामिल किया जाएगा। सुप्रीम कोर्ट ने मध्य प्रदेश आरक्षण अधिनियम 1994 की धारा-4 (4) को परिभाषित करते हुए कहा कि आरक्षित वर्ग के प्रतिभावान अभ्यर्थियों को अंतिम स्टेज में शामिल

किया जाना असंवैधानिक है। सुप्रीम कोर्ट ने पीएससी परीक्षा-2019 व राज्य सेवा परीक्षा भर्ती नियम 2015 में शासन द्वारा 20 दिसंबर, 2021 को नियम-4 में किए गए संशोधन को संवैधानिक बताया। इस नियम में प्रारंभिक व मुख्य परीक्षा में अनारक्षित पदों को सभी वर्गों के मेरिटोरियस अभ्यार्थियों से भरे जाने का प्रविधान है। इस मुद्दे को लेकर हाई कोर्ट की दो अलग-अलग युगलपीठों ने अलग-अलग आदेश सुनाए थे। ओबीसी एडवोकेट्स वेलफेयर एसोसिएशन के विधिक सहयोग से उन आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई थी। इसके साथ ही पीएससी-2019 के लगभग 200 से अधिक सामान्य वर्ग के अभ्यार्थियों ने भी विशेष अनुमति याचिका दायर की थी।

उल्लेखलीय है कि न्यायमूर्ति सुजय पॉल व न्यायमूर्ति द्वारिकाधीश बंसल की युगलपीठ ने सरकार द्वारा 17 फरवरी, 2020 को राज्य सेवा परीक्षा नियम-2015 में किए गए संशोधन को असंवैधानिक घोषित कर दिया था व पीएससी परीक्षा 2019 का रिजल्ट पुनः पूर्व नियमों के अनुसार जारी किए जाने का आदेश दिया था।

संत नगर में घर-घर जनसंपर्क अभियान प्रारंभ

संत नगर। लोकसभा प्रत्याशी आलोक शर्मा के समर्थन में विधायक रामेश्वर शर्मा की मुख्य उपस्थिति में एवं मंडल अध्यक्ष कमल विधानी के नेतृत्व में घर घर जनसंपर्क अभियान प्रारंभ किया गया, जिसमें 70 वर्ष से अधिक उम्र वाले बुजुर्ग लोगों का आयुष्मान भारत योजना के फॉर्म भी भर गए। इस अवसर पर राम बंसल, बसंत चेलानी, चंदू भैया, सूरज यादव, हर्षित दुबे, उमेश नागर, मनीष बागवानी सहित भाजपा के कार्यकर्ता मौजूद रहे।

नवनिध स्कूल में ग्रीष्मकालीन नि:शुल्क समर कैंप का शुभारंभ

संत हिरदाराम नगर। नवनिध हासोमल लखानी स्कूल की छात्राओं में खेलकूद एवं शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए ग्रीष्मकालीन अवकाश में समर कैंप का आयोजन किया गया है। विद्यालय प्राचार्य अमृता मोटवानी, उपप्राचार्य रेखा केवलानी के द्वारा ध्वज लहराते हुए कैंप का शुभारंभ किया गया। इस ग्रीष्मकालीन समर कैंप में छात्राओं को एरोबिक्स, जूडो, हूलाहुप, वॉलीबॉल खो-खो स्केटिंग आदि का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। संस्था के अध्यक्ष सिद्ध भाऊ ने अपने संप्रेषित संदेश में कहा कि विद्यार्थियों को खेलों एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनाना आवश्यक है, विद्यार्थी जीवन में इस तरह के खेल प्रशिक्षण की आवश्यकता है जिससे वे शारीरिक रूप से बलवान और स्वस्थ बनें ताकि भविष्य में अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पूरी ताकत से और मन लगाकर कर कार्य सकें। वे शारीरिक रूप से स्वस्थ और बलिष्ठ होंगे तो देश की रक्षा के कार्यों में भी आगे रहेंगे। 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है' विद्यार्थी स्वस्थ होंगे तो पढ़ाई भी अच्छे से कर सकेंगे।

कैंसर चिकित्सालय में सेवा भारती नानक मंडल द्वारा संचालित सेवा में भोजन वितरण किया

भोपाल जीनगर समाज के संरक्षक और विभिन्न सामाजिक संगठनों से जुड़कर सेवा कार्य करने वाले सामाजिक कार्यकर्ता भगवानदास ढालिया के जन्म दिवस पर जवाहरलाल नेहरू कैंसर चिकित्सालय में संचालित सेवा भारती माँ अन्नपूर्णा भोजन सेवा केंद्र में 6 वर्षों से निरंतर जारी कैंसर पीड़ित मरीज एवं उनके परिजनों हेतु निशुल्क भोजन सेवा मैं सहयोगियों के साथ सेवा सहयोग किया तत्पश्चात सेवा भारती नानक मंडल के सचिव चेतन पटेल और शहीद बीरबल ढालिया जन कल्याण परिषद के अध्यक्ष अशोक सांकले, नवनीत अग्रवाल, मनोज सोनी, मुकेश शर्मा, सुदामा शर्मा, ने पुष्प हार पहनाकर और मिष्ठान खिलाकर जन्मदिन मनाया इस अवसर पर सेवा भारती महानगर के सह मीडिया प्रभारी मनोज सोनी ने समाज सेवा में ढालिया जी के योगदान की सराहना करते हुए जन्म दिवस पर लिए संकल्प से और अधिक ऊर्जा से जनहित और समाज सेवा के कार्य करेंगे ऐसे शुभकामनाएं भी दी इस अवसर पर राकेश कुकरेजा, मुकेश सोलंकी, विमल भंडारी, सत्येंद्र अग्रवाल,अजय पवार, रोहन जैन,तृप्ती अग्रवाल,मीरा कांटेवाला,पृथ्वीराज चौहान,रमेश निर्वाण,सुनील सराठे,दिनेश पंवार,आदि उपस्थित थे।

लोकतंत्र के महापर्व में मतदान करने के लिए विशाल रैली का हुआ आयोजन

बैरसिया। गुरुवार को लोकतंत्र के महापर्व में भाग लेने के लिए मतदाता जागरूक अभियान रैली बैरसिया के विभिन्न विभागों के द्वारा स1द्ङ्ग्क्ष गतिविधि अंतर्गत एक विशाल जागरूकता रैली का आयोजन किया गया जिसमें रैली शहर के विभिन्न मार्गो से प्रारंभ होकर नगर के कलारी चौराहे पर एकत्रित हुई जहां से एक विशाल रैली मुख्य मार्ग से होते हुए अनुविभागीय कार्यालय मैदान पर पहुंची रैली में छात्र छात्राओं ने बैनर पोस्टर एवं नारे के माध्यम से लोकतंत्र के महापर्व में मतदाताओं से मतदान करने का आव्हान किया साथ ही सभी मतदाताओं को मतदान करने की शपथ भी दिलाई गई इस रैली में समस्त विभागीय कर्मचारी, शासकीय स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय ,शासकीय सीएम राइस विद्यालय ,शासकीय पीएम श्री सरोजिनी नायडू कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ,एंजेलिक स्कूल ,रैंकर्स पब्लिक स्कूल ,पारस पब्लिक स्कूल ,के विद्यार्थी शामिल हुए इस मौके पर अनुविभागीय अधिकारी आईपीएस आनंद कलादगी थाना प्रभारी नरेंद्र कुलस्ते तहसीलदार लाखन सिंह चौधरी महिला बाल विकास अधिकारी प्रियंका दीवान समाजसेवी दीपक दुबे, समस्त विभाग के अधिकारी कर्मचारी मौजूद रहे

हार्ट मरीजों के लिए राहत भरी खबर, कैथेटर से वॉल्व इम्प्लांटेशन से बच सकेगी हाई रिस्क वाले मरीजों की जान

सर्जरी की जरूरत नहीं, बिना चीरा लगे बदलेगा वॉल्व

भोपाल। हार्ट वॉल्व की समस्या से ग्रसित मरीजों की पांच से सात घंटे चलने वाली जटिल ओपन हार्ट सर्जरी की जरूरत नहीं पड़ेगी। एम्स भोपाल में जल्द ट्रांसकैथेटर एओर्टिक वॉल्व इह्लश्वलांटेशन (टीएवीआई) की शुरूआत होने जा रही है। इसमें मरीज का हार्ट वॉल्व बिना चिरा लगाए ही बदला जाएगा। इसके लिए तीन मरीजों की कार्डियक सर्जरी विभाग में स्क्रीनिंग व अन्य जांच अंतिम चरणों में हैं।

वॉल्व खराब होने पर रुक जाता है रक्त संचारः कार्डियक सर्जरी विभाग के एचओडी डॉ. योगेश निवारिया ने बताया कि हार्ट में चार चैंबर होते हैं। सभी चैंबर में ब्लड स्लो होने पर वॉल्व खुलते हैं। जिससे यह सुनिश्चित होता कि खून सही दिशा में सही मात्रा में पहुंच रहा है या नहीं। वॉल्व खराब होने पर यह प्रक्रिया बाधित हो जाती है। कुछ बच्चों में यह स्थिति जन्मजात होती। वहीं इसकी अन्य वजह जेनेटिक, इन्फेशन और ज्यादा उम्र भी हो सकती है।

क्यों जरूरी है टीएवीआईः हार्ट वॉल्व की समस्या से ग्रसित ऐसे मरीज जिनकी आयु ज्यादा है और अन्य बीमारियां है। पारंपरिक सर्जरी में बड़ा चीरा लगाने पर खून ज्यादा निकलता है। वहीं इम्यूनिटी कमजोर भी होती है। अन्य अंगों के खराब होने व इन्फेशन का खतरा पैदा होता है।

तीन मरीजों का हुआ चयन

डॉ. निवारिया ने बताया ऐसे में अब तक ओपन हार्ट सर्जरी करनी पड़ती थी। अब टीएवीआई में स्टंट की तरह ही कैथेटर के जरिए वॉल्व रिप्लेसमेंट होगा। इसके लिए जरूरी मशीनें आ गई हैं। तीन मरीजों का इसके लिए चयन भी किया गया है। यह तकनीक देश के गिने चुने अस्पतालों में ही मौजूद है।

खराब होने पर समस्याएं

वॉल्व खराब होने पर मरीज में कई समस्याएं देखने को मिलती हैं। यह स्थिति मुल्य रूप से बुजुर्गों में देखी जाती है। जिसके चलते उनके सीने में दर्द, बेहोशी व सांस लेने में समस्या जैसे लक्षण देखने को मिलते हैं। समय पर सही इलाज ना मिलने पर हार्ट फेलियर के चलते मौत तक हो सकती है। एम्स का कार्डियक सर्जरी विभाग लगातार प्रोग्रेस कर रहा है। प्रदेश के बाहर से लोग इलाज के लिए पहुंच रहे हैं। तकनीक की मदद से प्रदेश के मरीजों को उनके राज्य में ही बेहतर इलाज की सुविधा मिलेगी।

डॉ. अजय सिंह, कार्यपालक निदेशक, एम्स भोपाल

निगम आयुक्त हरेन्द्र नारायन ने शहर के विभिन्न क्षेत्रों में साफ-सफाई व्यवस्था का किया निरीक्षण

भोपाल। निगम आयुक्त हरेन्द्र नारायन ने शहर के विभिन्न क्षेत्रों में साफ-सफाई व्यवस्था व अन्य नागरिक सुविधाओं का निरीक्षण किया और साफ-सफाई एवं कचरा, मलमा उठवाने की व्यवस्था और अधिक बेहतर ढंग से सुनिश्चित करने, नाला-नालियों की बेहतर ढंग से सफाई कराने, कोहेफिज़ा क्षेत्र में सड़क का संधारण कार्य कराने, हलालपुर बस स्टैंड की बेहतर साफ-सफाई कराने, कचरा उठवाने, अस्थायी दुकानों को हटाकर मुख्य मार्ग की बेहतर साफ-सफाई कराने और नागरिकों को साफ-सफाई रखने एवं सड़कों पर पानी न बहाने की समझाइश देने तथा साफ-सफाई न रखने वाले व पानी व्यर्थ बहाने वालों पर जुर्माना करने के निर्देश दिए। निगम आयुक्त ने सूफिया मस्जिद क्षेत्र में पेयजल की पाईप लाईन में लीकेज पाए जाने पर संबंधित सहायक यंत्री जलकार्य को नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। इस दौरान निगम आयुक्त श्री नारायन ने वी.सी. के माध्यम से भी निगम अधिकारियों/कर्मचारियों को निर्देशित किया। निरीक्षण के दौरान उपायुक्त योगेन्द्र सिंह पटेल सहित निगम के अन्य अधिकारी मौजूद थे। निगम आयुक्त हरेन्द्र नारायन ने गुरूवार को मालीपुरा, पीरगेट, हवा महल रोड, हमीदिया अस्पताल, कोहेफिज़ा, हाउसिंग बोर्ड कालोनी, सूफिया मस्जिद, हलालपुर, संत नरहरि दास बस स्टैंड आदि क्षेत्रों में साफ-सफाई व अन्य नागरिक सुविधाओं का निरीक्षण किया। निगम आयुक्त श्री नारायन ने मालीपुरा, पीरगेट क्षेत्र में साफ-सफाई कराने और कचरा तत्काल उठवाने, हवा महल रोड पर कचरे की ढ़ेरियां उठवाने व नालियां साफकराने के निर्देश दिए। निगम आयुक्त ने इस क्षेत्र में पार्किंग की बेहतर व्यवस्था के दृष्टिगत चिरायु अस्पताल के पीछे स्थित पार्किंग स्थल पर बेहतर साफ-सफाई व्यवस्था रखने हेतु लोक निर्माण विभाग से समन्वय करने के निर्देश दिए। निगम आयुक्त श्री नारायन ने हमीदिया अस्पताल गेट के सामने सड़क का संधारण कार्य कराने के निर्देश दिए। निगम आयुक्त श्री नारायन ने कोहेफिज़ा सी-सेक्टर हाउसिंग बोर्ड कालोनी में पडा कचरा व सी.एण्ड.डी वेस्ट उठवाने, सड़क की मरम्मत हेतु यांत्रिक विभाग से समन्वय कर संधारण कराने के निर्देश दिए। निगम आयुक्त श्री नारायन ने सूफिया मस्जिद के पीछे पडे कचरे, मलमे के ढेर उठवाने के निर्देश दिए साथ ही इस क्षेत्र में पानी की पाईप लाईन में लीकेज से पानी व्यर्थ बहने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए जलकार्य विभाग के सहायक यंत्री अमरीश सिंह को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए।

मतदाता जागरूकता अभियान : रैली से कदमताल

भोपाल। स्वामी विवेकानंद शासकीय महाविद्यालय बैरसिया मे मतदाता जागरूकता अभियान के अंतर्गत विगत दिवसों से आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की श्रृंखला में गुरुवार को रैली का आयोजन करते हुए मतदान का संदेश शहर के कोने-कोने में पहुंचने का प्रयास किया गया।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राजू तिलंथे जब अपने समस्त स्टाफ एवं लगभग 700 छात्र-छात्राओं के साथ रैली के रूप में बस स्टैंड पहुंचे तो मतदाता जागरूकता के लिए इस संस्थान के सतत प्रयासों को नगर के प्रबुद्ध जन प्रसन्न भाव से निहार रहे थे।

संस्थान के इन प्रयासों के संबंध में जब हमने महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राजू तिलन्थे ने कहा कि एक शिक्षण संस्थान के रूप में यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम ज्यादा से ज्यादा लोगों को मतदान के लिए प्रेरित कर सकें और यह रैली इसी जिम्मेदारी के निर्वहन का एक प्रयास है। कार्यक्रम की प्रभारी डॉ.चंद्रकांत अहिरवार ने कहा कि एक महिला के रूप मे मैं चाहती हूं कि क्षेत्र की शत - प्रतिशत महिलाएं मतदान में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें और इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए महाविद्यालय की छात्राओं ने अपनी पूर्ण ऊर्जा के साथ इस रैली में हिस्सा लिया है।

भोपाल में मतदाताओं को जागरूक करने KBC की तर्ज पर हुआ क्विज शो

कलेक्टर ने युवा छात्र-छात्राओं से पूछे सवाल

महाविद्यालयों में आयोजित कौन बनेगा वोटर नंबर वन के टाप 10 विद्यार्थी हुए फाइनल क्विज कांपटिशन में शामिल, विजेता छात्र-छात्राओं को किया गया पुरस्कृत

भोपाल। मतदान के वक्त लगाए जाने वाले निशान को क्या कहते हैं, संविधान के किस अनुच्छेद में मतदान करने की आयु 21 से 18 वर्ष की गई। कुछ ऐसे ही प्रश्न पूछेगए मतदाता जागरूकता कार्यक्रम अंतर्गत कौन बनेगा वोटर नंबर वन फाइनल क्विज प्रतियोगिता में। एमपी नगर के एक मॉल में आयोजित प्रतियोगिता में कलेक्टर व जिला निर्वाचन अधिकारी कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने भोपाल के सभी मतदाताओं से 07 मई को मतदान कर भोपाल को नंबर वन बनाने की अपील की। इस दौरान सीईओ जिला पंचायत ऋतुराज सिंह एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्रायें एवं प्रतिभागी उपस्थित रहे।

300 छात्रों का चयन किया गयाः मतदाता जागरूकता अभियान अंतर्गत पिछले एक माह से युवा वोटरों को जागरूक करने के उद्देश्य से कौन बनेगा वाटर नंबर वन का आयोजन भोपाल के विभिन्न महाविद्यालय में किया गया। इसमें बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं को मतदाता जागरूकता से जुड़े प्रश्नों के माध्यम से जागरूक किया गया। इनमें से 300 छात्रों का चयन किया गया, जिन्होंने गुरुवार को फिनाले में भाग लिया। मतदाता जागरूकता से जुड़े हुए सवाल-जवाब कौन बनेगा करोड़पति की तर्ज पर आडियो विजुअल के माध्यम से पूछा गए। कार्यक्रम में विजेता रहे छात्र-छात्राओं को आकर्षक इनाम भी दिए गए।

ये रहे विजेताः नीरज शाह - कारपोरेट कालेज (प्रथम)द्वितीय स्थान पर सूर्यभान सिंह - पटेल केरियर कालेज (द्वितीय)तृतीय स्थान पर भावना गौर - सत्यसाई कालेज (तृतीय)।

सेन समाज प्रतिनिधिमंडल का जनसम्पर्क अभियान

कांग्रेस के भोपाल लोकसभा प्रत्याशी अरूण श्रीवास्तव के समर्थन में सेन समाज संगठन प्रतिनिधि-साथियों के साथ सीहोर के शेखपुरा गांव में ग्रामीण क्षेत्रों के सेन समाज बंधुओं की बैठकों के ,अलावा. ..बैरसिया के रूनाय , जमूसरकलां सहित स्थानीय बैरसिया में भी समाज के स्थानीय नेताओं के साथ बैठकें आदि सम्पर्क अभियान सम्पन्न,साथ ही जम्मूसरकलां स्थित भैरू बाबा के भव्य मंदिर में आदरणीय भाई साहब अरुण श्रीवास्तव जी की विजय हेतु कामना करते हुएआशीर्वाद प्राप्त किया ! इस अवसर पर हीरालाल श्रीवास, सेन समाज प्रदेश अध्यक्ष, प्रदेश महामंत्री मंत्री मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी ,कांग्रेस नेता सीताराम यादव ,सेन समाज पदाधिकारी मुकेश सेन, जगदीश सेन सहित क्षेत्रीय समाज बंधु सम्मिलित हुए।

बच्चों के उत्साह के साथ संस्कार विद्यालय में समर कैम्प का शुभारंभ

संत हिरदाराम नगर। प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी दीपमाला पागारानी संस्कार विद्यालय के प्रांगण में विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास हेतु ग्रीष्मावकाश में नाना प्रकार की गतिविधियों का संचालन किया जा रहा हैं। जिनमें नृत्य, खेलकूद, संगीत, कम्प्यूटर एवं आर्ट एण्ड क्राफ्ट की शिक्षा दी जायेगी। जिसका शुभारंभ 2 मई को मुख्य अतिथि कर्नल नारायण पारवानी, संस्था के अध्यक्ष सुशील वासवानी, सचिव बसंत चेलानी, कोषाध्यक्ष चन्दर नागदेव द्वारा किया गया। इस अवसर पर संस्था के सचिव बसंत चेलानी ने अभिभावकों एवं बच्चों का स्वागत किया और अभिभावकों को सम्बोंधित करते हुए कहा कि जो बच्चें इस शिविर में भाग ले रहे है, हम आपको विश्वास दिलाते है कि 25 दिन के इस शिविर में आपके बच्चों में वो गुण भर देंगे जिन गुणों के वे अधिकारी है। नारायण पारवानी ने कहा कि ग्रीष्मकालीन अवकाश सिर्फ अवकाश मनाने के लिए नहीं बल्कि समय का सदुपयोग करने के लिए है। सुशील वासवानी ने कहा कि जिन पालकों ने अपने बच्चों को इस शिविर में भेजा है उन्होंने बहुत समझदारी का काम किया है।

लूट में फरार चल रहे इनामी आरोपी को हथियार सहित किया गिरफ्तार

छेड़खानी कर धमकाने वाले आरोपियों को भी चंद घंटों में किया गिरफ्तार

भोपाल। लूट में फरार चल रहे 5000 के ईनामी आरोपी को धारदार छुरी सहित किया गिरफ्तार। इसी के साथ छेड़खानी कर धमकाने वाले आरोपियों को भी धारदार छुरी सहित चंद घण्टों में पुलिस ने किया गिरफ्तार। मामला थाना शाहजहाँनाबाद का है। 28 सितंबर 2023 को फरियादी ब्रजेश मालवीय पिता बिहारी लाल मालवीय उम्र 29 साल निवासी ग्राम गजीखेड़ा थाना बाड़ी जिला रायसेन। उसके साथ थाना क्षेत्र में हुई लूट की शिकायत पर थाना शाहजहाँनाबाद में अपराध क्रं. 515/23 धारा 394,506,34 भादवि तीन अज्ञात आरोपी के विरुद्ध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया । विवेचना के दौरान अपराध में लिप्त दो आरोपी अब्दुल बकार खान व मुस्तफा को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय के समक्ष पेश किया गया था। मामले के अन्य एक आरोपी उम्मू उर्फ उमर जो घटना दिनांक से ही फरार चल रहा था। उसकी गिरफ्तारी हेतु पुलिस उपायुक्त जोन-03 नगरीय पुलिस द्वारा 5000 रु के ईनाम की उद्घोषणा की गई थी । वहीं 30 अप्रैल 2024 को फरियादिका निवासी शाहजहाँनाबाद भोपाल की रिपोर्ट पर थाना शाहजहाँनाबाद पर अपराध क्रं. 234/24 धारा 354(क), (1) (IV),354 (घ),354,294, 323, 386, 506,34 भादवि आरोपी साबिर उर्फ सब्बी व नासिर उर्फ भूरा के विरुद्ध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया । पुलिस ने आरोपी उम्मू उर्फ उमर पिता आसिफ प्यारे उम्र 23 साल निवासी म.नं. 31 गली नं. 01 बाग मुंशी हुसैन खाँ शाहजहाँनाबाद भोपाल को धारदार छुरी सहित दिनांक 01 मई 2024 को गिरफ्तार कर मामले में धारा 25 आर्म्स एक्ट का ईजाफा कर आरोपी को माननीय न्यायालय के समक्ष पेश किया गया । इसी के साथ थाना शाहजहाँनाबाद के अपराध क्रं. 234/24 धारा 354(क),(1) (IV),354 (घ),354, 294, 323,386, 506,34 भादवि के आरोपी साबिर उर्फ सब्बी पिता मो. नसीम उम्र 30 साल निवासी म.नं. 44/265 गोसिया मस्जिद के पीछे गुड्डु किराना स्टोर के पास संजय नगर शाहजहाँनाबाद भोपाल व नासिर उर्फ भूरा पिता स्वं. श्री मोहम्मद जकी उम्र 25 साल निवासी म.नं. 360/77 संजय नगर शाहजहाँनाबाद भोपाल को चंद घण्टो में 01मई 2024 को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय के समक्ष पेश किया गया ।

गरीब, युवा, किसान और महिलाओं के कल्याण के लिए काम कर रहे प्रधानमंत्रीः सतीश उपाध्याय

मुरैना। भारतीय जनता पार्टी के लोकसभा चुनाव प्रदेश सह प्रभारी श्री सतीश उपाध्याय ने मुरैना में मुरैना विधानसभा के कार्यकर्ताओं की बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश में सिर्फ चार जातियां बताई हैं, गरीब, महिला, युवा और किसान। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी इन चारों जातियों के साथ हर समाज वर्ग के कल्याण, विकास और उत्थान के लिए कार्य कर रहे हैं। कांग्रेस पार्टी जात-पांत के नाम पर जनता को बांटती है।

भाजपा लोकसभा चुनाव के प्रदेश सह प्रभारी श्री सतीश उपाध्याय ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं। प्रधानमंत्री जी वर्ष 2047 तक भारत को विश्व गुरू बनाने का लक्ष्य लेकर कार्य कर रहे हैं। सभी भाजपा कार्यकर्ता श्री नरेन्द्र मोदी जी को तीसरी बार ऐतिहासिक बहुमत से प्रधानमंत्री बनाने के लिए घर-घर संपर्क कर डबल इंजन भाजपा सरकार के विकास कार्यों और उपलब्धियों के साथ गरीब कल्याण के लिए किए गए कार्यों को जनता तक पहुंचाएं। घर-घर संपर्क के समय भाजपा कार्यकर्ता आयुष्मान लाभ विस्तार अभियान के तहत 70 वर्ष से अधिक के वरिष्ठजनों का आयुष्मान भारत स्वास्थ्य योजना का फार्म भरवाएं और भाजपा के पक्ष में मतदान करने की अपील करें।

श्री सतीश उपाध्याय ने मुरैना में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के होने वाले रोड शो को लेकर तैयारियों की समीक्षा की और पार्टी पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए हैं।

इस अवसर पर लोकसभा प्रभारी श्री जयप्रकाश राजौरिया, जिला अध्यक्ष डॉ. योगेश पाल गुप्ता, लोकसभा संयोजक श्री अनूप सिंह भदौरिया, सह संयोजक श्री हमीर सिंह पटेल, श्री बृजकिशोर दण्डोतिया, विधानसभा प्रभारी श्री रामनरेश शर्मा, प्रदेश प्रवक्ता श्री ब्रजगोपाल लोया सहित पार्टी पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

देश को आर्थिक महाशक्ति बनाने के लिए मोदी जी के हाथ मजबूत करें: राजेंद्र शुक्ल

भिण्ड। प्रदेश के उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने भिंड लोकसभा के गोहद एवं भिंड में प्रबुद्धजन सम्मेलन को संबोधित कर भारतीय जनता पार्टी के लिए समर्थन मांगा। उन्होंने कहा कि बीते 10 वर्षों में श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने भारत को विकास के रास्ते पर तेजी से आगे बढ़ाया है। मोदी सरकार ने अपनी योजनाओं के माध्यम से हर व्यक्ति, हर वर्ग और हर गरीब के विकास की चिंता की है। विकास का रथ आगे बढ़ता रहे, इसके लिए तीसरी बार मोदी सरकार का बनना जरूरी है। सभी प्रबुद्धजन देश को आर्थिक महाशक्ति बनाने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के हाथ मजबूत करें। सम्मेलन को अनुसूचित जाति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री लाल सिंह आर्य, प्रदेश मंत्री एवं चुनाव प्रभारी श्री लोकेंद्र पाराशर एवं पार्टी प्रत्याशी श्रीमती संध्या राय ने भी संबोधित किया।

मोदी सरकार ने जीता जनता का भरोसा- उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने कहा कि भारत में दशकों तक कांग्रेस की सरकारें रही जिन्होंने मात्र भ्रष्टाचार और घोटाले किए। परिवारवाद और वंशवाद पर राजनीति करते हुए देश को विकास से दूर रखा। भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेई जी ने सबसे पहले किसानों के विकास के लिए चिंता की। उन्होंने प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क परियोजना के माध्यम से गांव-गांव में सड़कों का जाल बिछाना प्रारंभ किया और गांव के विकास पर जोर दिया। 2014 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में सरकार आते ही उन्होंने सबसे पहले गरीब, युवा, महिलाओं और किसानों के विकास के लिए काम किया। उन्होंने कहा कि 2019 के लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में 300 से अधिक सीटें हमें प्राप्त हुई। मोदी जी की सरकार ने अपनी योजनाओं से देश की जनता का भरोसा जीता है।

दशकों पुरानी समस्याओं का हल निकाला- उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि हमारे नेता डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने कश्मीर से धारा 370 हटाने की मांग कको लेकर आंदोलन किया और अपना जीवन बलिदान कर दिया। इसी धारा 370 की आड़ में पाकिस्तान भारत में आतंकवाद भड़काने का काम करता था। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने धारा 370 कश्मीर से हटाकर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की, यह देश में परिवर्तन आया है। उन्होंने कहा कि बाबर ने अयोध्या में प्रभु श्रीराम की जन्मभूमि पर बने मंदिर को तुड़वाकर मस्जिद बनाई और सनातन धर्म को कुचलने का प्रयास किया। मोदी जी के नेतृत्व में अयोध्या में भगवान श्री राम का भव्य मंदिर उनकी जन्मभूमि पर तैयार हो चुका है, जिसका कांग्रेस के लोग विरोध कर रहे हैं। श्री शुक्ल ने कहा कि भगवान राम हमारे नहीं 140 करोड़ जनता के आस्था के प्रतीक हैं और सनातन धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए प्रधानमंत्री जी ने लगातार प्रयास किए हैं।

2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाना मोदी जी का लक्ष्य- उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ला ने कहा कि कांग्रेस की सरकारों ने भारत की अर्थव्यवस्था को जमीन पर लाकर खड़ा कर दिया था। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की सरकार के कार्यकाल में देश की अर्थव्यवस्था लगातार मजबूत हो रही है। मोदी जी के नेतृत्व में आज भारत दुनिया की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने और विश्वगुरु के आसन पर विराजमान करने के संकल्प को लेकर आगे बढ़ रहे हैं। उनके इस अभियान में हम सभी को अपनी-अपनी भूमिकाओं का निर्वाह करना है, उनका समर्थन करना है। श्री शुक्ला ने कहा कि पूरे देश में मोदी जी की गारंटी की लहर चल रही है और सिर्फ मैं नहीं, बल्कि पूरा देश यह कह रहा है-अबकी बार, 400 पार। भिंड में सम्मेलन के दौरान पूर्व विधायक श्री शिवशंकर समाधिया, रिटायर्ड प्रिंसिपल श्री ओपी शुक्ला, भाजपा जिला अध्यक्ष श्री देवेंद्र सिंह नरवरिया, श्री राम भरोसे पुरोहित, श्री रमेश पाठक तथा गोहद के सम्मेलन में श्री रामबाबू उपाध्याय, श्री ब्रजकिशोर भाटेले, श्री चंद्रशेखर शर्मा, श्री राममिलन शर्मा एडवोकेट, श्री अविनाश भाटेले, पूर्व जिला अध्यक्ष श्री संजीव कांकर मंचासीन रहे।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा मध्यप्रदेश के सागर लोकसभा के सिरोंज में

जब तक भाजपा और मोदी हैं तब तक एससी, एसटी और ओबीसी के आरक्षण कोई नहीं छीन पाएगा: नड्डा

सिरोंज। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी ने आज बृहस्पतिवार को मध्यप्रदेश के सागर लोकसभा क्षेत्र के सिरोंज में जनसभा को संबोधित करते हुए कांग्रेस के भ्रष्टाचार और विभाजनकारी नीतियों पर करारा प्रहार किया। इस कार्यक्रम में मध्यप्रदेश मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, मध्यप्रदेश भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा और सागर प्रत्याशी श्रीमती लता वानखेड़े ने भी जनसभा को संबोधित किया।

श्री जगत प्रकाश नड्डा जी ने कहा कि यह चुनाव विकसित भारत के संकल्प लेने का चुनाव है। 20 वर्ष पहले मध्यप्रदेश को बीमारू राज्य के रूप में जाना जाता था। बीमारू का अर्थ 'ब' से बिहार, 'म' से मध्यप्रदेश और 'र' से राजस्थान हुआ करता था। लेकिन जबसे भारतीय जनता पार्टी की सरकार मध्यप्रदेश में बनी है, तबसे मध्य प्रदेश सर्वांगीण विकास की ओर बढ़ गया और अग्रणी राज्य के रूप में खड़ा है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश के 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आए हैं। 10 वर्ष पूर्व भारत विश्व की 11वीं अर्थव्यवस्था था, मगर आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की कुशल नीतियों के कारण आज विश्व की 5वीं बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। भाजपा सरकार के तीसरे कार्यकाल में भारत का अर्थव्यवस्था विश्व का तीसरा सबसे बड़ा अर्थतंत्र बन जाएगा।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी ने कहा कि आज भारत ऑटोमोबाईल मेन्यूफैक्चरिंग में तीसरे और दवाई बनाने के क्षेत्र में दूसरे स्थान पर है। भारत दुनिया को सबसे सस्ती और असरदार दवा निर्यात कर रहा है, भारत का दवा निर्यात 138त्न तक बढ़ा है और भारत दुनिया की डिस्पेंसरी बन गया है। 10 साल पहले देश के लगभग सभी मोबाईल फोन चीन और जापान में निर्मित किए जाते थे, मगर आज लगभग 97त्न मोबाईल का विनिर्माण भारत में ही किया जा रहा है। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की नीतियों ने देश के गांव, गरीब, दलित, वंचित, पीड़ित, शोषित, युवा, किसान और महिलाओं को ताकत प्रदान की है। 20 साल पहले एक गांव के विकास के लिए 2 से 3 लाख रुपए की अनुदान राशि मुहैया कराई जाती थी, लेकिन आज भाजपा सरकार में एक गांव के विकास के लिए 3 से 5 करोड़ रुपए तक की राशि प्रदान की जाती थी।

श्री जगत प्रकाश नड्डा जी ने कहा कि 1993 में जब वे विधायक थे तब इंदिरा आवास योजना के तहत एक पंचायत में केवल 2 घर आवंटित किए जाते थे। लेकिन आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पीएम आवास योजना के तहत एक पंचायत में 40 घर मिल रहे है और पिछले 10 वर्षों में 4 करोड़ घरों का निर्माण किया गया है। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के तीसरे कार्यकाल में 3 करोड़ नए घरों का निर्माण किया जाएगा। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में शुरू की गई आयुष्मान भारत योजना के तहत करोड़ों परिवारों को 5 लाख रुपए तक का इलाज निःशुल्क मुहैया करवाया जा रहा है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने घोषणा पत्र में वादा किया है कि 70 वर्ष से अधिक आयु के सभी वर्गों और समुदायों के लोगों को भी आयुष्मान भारत के तहत निःशुल्क इलाज मुहैया करवाया जाएगा। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी तय किया है कि आगामी 5 वर्षों में 3 करोड़ माताओं बहनों को लखपति दीदी बनाएंगे। पीएम किसान सम्मान निधि के तहत 10 करोड़ 78 लाख किसानों को 2 हजार रुपए हर चौथे महीने भेजे जा रहे हैं और आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने ऐलान किया है कि आगामी 5 वर्षों तक यह योजना जारी रहेगी। जल जीवन मिशन के तहत 11 करोड़ परिवारों को हर घर नल हर घर जल से जोड़ा गया है और मध्यप्रदेश में भी 52 लाख लोगों तक इसका लाभ पहुँच रहा है।

श्री नड्डा जी ने कहा कि विधानसभा चुनाव के समय दिया हुआ नारा कि ÷मोदी के मन में एमपी है और एमपी के मन में मोदी है÷ को अब चरितार्थ करने का सही समय है। आज टैक्स के माध्यम से जो पैसा इकट्ठा होता है उसे मध्यप्रदेश को आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी 4 गुना अधिक कर के दे रहे हैं। मध्यप्रदेश को अनुदान राशि में भी 4 गुना पैसा दिया जा रहा है। रेलवे की आधारभूत संरचना को मजबूत करने के लिए आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने मध्यप्रदेश का रेलवे बजट 24 गुना बढ़ा दिया है। मध्यप्रदेश में पीएम मित्रा पार्क भी स्थापित किया जा रहा है जिसके माध्यम से करीब 2 लोगों के लिए रोजगार के अवसर सृजित होंगे। भोपाल से 4 वंदे भारत ट्रेन दौड़ रही है, ग्वालियर में सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ केमिकल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी स्थापित किया जा रहा है, 14 नए मेडिकल कॉलेज खोले गए हैं। तात्या मामा आर्थिक कल्याण योजना और भगवान बिरसा मुंडा स्वरोजगार योजना के तहत

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने नरेला विधानसभा में भाजपा प्रत्याशी आलोक शर्मा के समर्थन में रोड शो

रोड शो के माध्यम से मुख्यमंत्री ने किया अभिवादन, मांगा जनता से आशीर्वाद

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गुरूवार को भोपाल लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी श्री आलोक शर्मा के समर्थन में नरेला विधानसभा में रोड शो किया। आचार संहिता को सम्मान देते हुए मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रात्रि 10 बजे के पूर्व उपस्थित जनसमुदाय से लोकसभा चुनाव में समर्थन मांगा तथा अभिवादन कर उनसे विदा ली। रोड शो के दौरान मुख्यमंत्री डॉ. यादव के साथ रथ पर सवार होकर प्रदेश शासन के मंत्री श्री विश्वास सारंग, भाजपा प्रत्याशी श्री आलोक शर्मा, महापौर श्रीमती मालती राय ने जनता का अभिवादन किया।

मुख्यमंत्री के स्वागत के लिए नरेला में उमड़ा जनसैलाब

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गुरूवार की शाम भोपाल जिले के नरेला में भाजपा प्रत्याशी श्री आलोक शर्मा के समर्थन में ढाई कि.मी. लंबा रोड शो किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने स्थानीय ओल्ड सुभाष नगर खेल मैदान से पंजाबी बाग, गुप्ता कालोनी, नेहरू चौराहा, परिहार चौराहा होते हुए विवेकानंद चौराहे तक खुले रथ पर सवार होकर जनता का अभिवादन किया और पार्टी प्रत्याशी के लिए आशीर्वाद मांगा। रोड शो के दौरान यात्रा मार्ग की दोनों तरफ की सड़कें भगवामय हो गयीं। जनता ने सड़क के दोनों ओर खड़े होकर पुष्पवर्षा कर मोदी-मोदी के गगनभेदी नारों के साथ मुख्यमंत्री का स्वागत किया। समाज के हर वर्ग के पुरुष, महिलाएं, युवा, बच्चे और बुजुर्ग मुख्यमंत्री के स्वागत के लिए मौजूद रहे और जगह-जगह मंच से पुष्पवर्षा कर मुख्यमंत्री का स्वागत किया। रोड शो के दौरान आतिशबाजी कर बैंड, ढोल नगाडें एवं शंख बजाकर मुख्यमंत्री का स्वागत किया।

पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने गुना, भिंड और विदिशा संसदीय क्षेत्र में 7 जनसभाओं को संबोधित किया

मोदी जी भारत के लिए भगवान का वरदान हैः शिवराज सिंह चौहान

भोपाल। पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान लोकसभा चुनाव को लेकर प्रदेशभर में घूमकर प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। गुरूवार को भी पूर्व सीएम ने भिंड से भाजपा प्रत्याशी संध्या राय के समर्थन में मेहगांव व सेवड़ा और गुना लोकसभा से भाजपा प्रत्याशी ज्योतिरादित्य सिंधिया के समर्थन में कोलारस, ईसागढ़ और बमोरी में चुनावी सभाओं को संबोधित किया। साथ ही पूर्व सीएम ने अपने संसदीय क्षेत्र विदिशा के ओबेदुल्लागंज और मंडीदीप में भी जनसभाओं को संबोधित किया। सभाओं से पहले श्री चौहान भिंड जिले स्थित प्रसिध्द आजी माता मंदिर पहुंचे और पूजा-अर्चना कर देश व प्रदेशवासियों के सुख-समृध्दि की कामना की। इस दौरान पूर्व सीएम ने कहा कि, हम राजनीति में केवल दो ही उद्देश्यों

के लिए हैं। पहला देश की सेवा और दूसरा जनता की सेवा। जनता की जिंदगी को बेहतर बनाने के लिए काम करना है। राजनीति मेरे लिए कोई शौक या धंधा नहीं है, राष्ट्र की सेवा का माध्यम है, राष्ट्रीय पुर्निर्माण के लिए राजनीति है, जनता के कल्याण के लिए राजनीति है, गरीबों की सेवा के लिए राजनीति है, और बहनों के उत्थान के लिए राजनीति है।

इंदिरा जी ने संविधान बदलने की कोशिश की- पूर्व सीएम ने कहा कि, कांग्रेस में ऐसा कुछ भी नहीं बचा है कि, उन्हें वोट दिया जाए। कांग्रेस ना दिल्ली में बची है ना भोपाल में बची है, और ना ही आगे कोई संभावना है। कांग्रेसी केवल भ्रम फैलाते हैं। कहते हैं कि, संविधान बदल देंगे। संविधान बदलने की कोशिश तो इमरजेंसी लगाकर इंदिरा गांधी जी ने की थी। संविधान को खंडित करने का काम कांग्रेस ने 1975 में किया था। उन्होंने कहा कि, बाबा साहब अंबेडकर जी का लिखा हुआ संविधान कोई बदल नहीं सकता है और बदलने का सवाल ही पैदा नहीं होता है। उल्टा कांग्रेस ने संविधान निर्माता डॉ. बाबा साहब अंबेडकर जी को हराने का काम किया है।

राहुल गांधी वामपंथियों के बंधक हैं- पूर्व मुख्यमंत्री ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि, कांग्रेस विरासत टैक्स की बात करती है। विरासत टैक्स का मतलब है, अगर मकान बना लिया, संपत्ति बना ली है, तो उसका 55 प्रतिशत सरकार जब्त कर लेगी और केवल 45 प्रतिशत ही बच्चों के लिए बचेगा। अब आप बताओ अपनी संपत्ति लूटने दोगे क्या..? पता नहीं कौन हैं ये सेम पित्रोदा, कहां-कहां के लोग कांग्रेस में आ गए हैं। राहुल गांधी तो वामपथियों के बंधक बन गए हैं। उलटे-सीधे फैसले कर रहे हैं। अब ऐसी कांग्रेस में कौन रहेगा। इंदौर से कांग्रेस के उम्मीदवार ही पार्टी छोड़कर भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए हैं। कांग्रेस के अच्छे और विचारवान नेता देश के विकास के लिए भाजपा में आ रहे हैं। कांग्रेस में अब कुछ बचा नहीं है। ये कभी भी देश और जनता का भला नहीं कर सकते हैं।

आयुष्मान भारत योजना के महाजन संपर्क अभियान अंतर्गत ग्राम तालचिरी में बुजुर्गों का किया मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने पंजीयन

बुजुर्गों के इलाज की प्रधानमंत्री दी गारंटीः गोविंद सिंह राजपूत

सागर। आयुष्मान भारत योजना के महाजन संपर्क अभियान के अंतर्गत गुरुवार को खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने सुरखी विधानसभा क्षेत्र के ग्राम तालचिरी में 70 वर्ष से अधिक आयु वाले बुजुर्गों के पंजीयन कर उनके इलाज के लिए आयुष्मान भारत योजना से जोड़ा इस अवसर पर मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने कहा कि 70 वर्ष के बाद लोग अधिक बीमार होते हैं ऐसे समय में उनके लिए इलाज की जरूरत होती है कई बुजुर्ग तो ऐसे होते हैं जिन्हें इलाज भी नहीं मिल पाता ऐसे करोड़ बुजुर्ग, माता-पिता के इलाज की गारंटी हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दी है जिसमें आयुष्मान भारत योजना से 70 वर्ष से अधिक आयु के बुजुर्गों को जोड़कर 5 लाख तक का इलाज उनके लिए निशुल्क उपलब्ध होगा इस योजना से हमारे बुजुर्गों के इलाज की समस्या खत्म हुई है। मंत्री श्री

राजपूत ने कहा कि अभी तक आयुष्मान योजना के तहत 70 साल से अधिक उम्र के सभी वर्गों के लोगों को योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा था। लेकिन अब इस योजना में उन सभी लोगों को शामिल कर 5 लाख तक का निशुल्क इलाज दिया जाएगा। अच्छी बात यह है कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 70 साल से अधिक उम्र के लोगों के लिए कोई नियम शर्तें नहीं रखी है।

लोकसभा चुनाव में अधिक से अधिक मतदान हो जिसको लेकर खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने गुरुवार को सुरखी विधानसभा क्षेत्र के जनपद अध्यक्ष, जनपद सदस्य, सरपंच, उप सरपंच, नगर परिषद अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, पार्षद तथा जिला पंचायत सदस्यों की बैठक ली। बैठक में मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि भाजपा ने हर वर्ग के लिए बिना भेदभाव किए हुए जनकल्याणकारी योजनाओं से जोड़कर उनके जीवन स्तर को सुधारा है हमारी लोकसभा प्रत्याशी बहन डॉ. लता वानखेड़े जमीनी कार्यकर्ता हैं जिन्हें हर समस्या से निपटने का अनुभव है वहीं दूसरी ओर कांग्रेस का आलम यह है कि उन्हें प्रदेश में प्रत्याशी नहीं मिला तो वह उत्तर प्रदेश से प्रत्याशी लेकर आए है इसलिए भाजपा प्रत्याशी लता वानखेड़े को भारी मतों से विजय बनाकर भाजपा को तथा हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मजबूत करें ताकि जनसेवा और विकास का यह यह क्रम निरंतर चलता रहे श्री राजपूत ने कहा कि लोकसभा चुनाव में अधिक से अधिक मतदान हो इसकी जिम्मेदारी जनप्रतिनिधियों की है सभी जनप्रतिनिधि अपने-अपने क्षेत्र में मतदाताओं से मिले तथा मतदान करने के लिए आग्रह करे।

मासूम बच्ची के साथ दुष्कर्म की घटना से मप्र में इंसानियत शर्मिंदाः विभा पटेल

भोपाल। मध्य प्रदेश महिला कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती विभा पटेल ने कहा कि भोपाल में इंसानियत को शर्मसार करने वाली घटना घटी है। आठ साल की मासूम बच्ची के साथ दरिंदगी का मामला सामने आने के बाद भी निजी स्कूल के हॉस्टल प्रबंधन के खिलाफ वैधानिक कड़ी कार्रवाई नहीं की गई। इसमें आरोपी रसूखदार है। पुलिस दबाव में है। अब तक दोषी व्यक्ति के खिलाफ कार्रवाई नहीं होना इसका प्रमाण है। भाजपा सरकार पर दुष्कर्म के आरोपियों को संरक्षण देने का भी आरोप लगाया। पुलिस मामले में जानबूझकर लापरवाही कर रही है।

श्रीमती विभा पटेल ने कहा कि मासूम बच्ची के साथ दुष्कर्म की दुखद और जघन्य घटना से लोगों में भारी आक्रोश है। भाजपा सरकार के नाकारापन से निरंकुश हुई पुलिस चुनाव जैसे संवेदनशील मौके पर भी लापरवाही करने से बाज नहीं आ रही है। हाल ही में जोबट में भी ऐसी ही एक घटना घटी है। इस सनसनीखेज और शर्मसार करने वाली दुष्कर्म की घटना ने मध्यप्रदेश में कानून व्यवस्था और सुशासन की कलई खोल दी है। इससे स्पष्ट है कि मध्य प्रदेश में कानून का राज नहीं है। प्रदेश में बेटियों के साथ हो रही इस तरह की घटनाएं सभ्य समाज के माथे पर कलंक है। इस दुखद घटना ने एक बार फिर मध्यप्रदेश में महिलाओं के खिलाफ हिंसा की चिंताजनक आवृत्ति को उजागर कर दिया है।

श्रीमती विभा पटेल ने कहा कि मुख्यमंत्री खोखले वादे, सभाओं में झूठे नारों के बूते पर अब लाड़ली बच्चियों और बहनों को गुमराह नहीं कर सकते हैं। प्रदेश की भाजपा सरकार बहन-बेटियों को सुरक्षा देने और अपराधियों को कड़ा से कड़ा दंड देने के बदले उन लोगों पर कार्रवाई करती है, जो पीड़ितों के साथ सहानुभूति व्यक्त करते हैं। जोबट में पीड़ित परिवार से मिलने गए कांग्रेस नेताओं के विरुद्ध केस दर्ज करना यही दिखाता है। भाजपा की मोहन यादव सरकार बेटियों के साथ हो रहे अत्याचार की घटनाओं को राजनीतिक बदले का हथियार बनाने के स्थान पर कानून व्यवस्था को सुधारें।

आज अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने भोपाल कमिश्नर के नाम 8 साल की मासूम के साथ ज्ञान गंगा इंटरनेशनल स्कूल में हुए दुष्कर्म के लिए जल्द से जल्द कार्रवाई करने के लिए ज्ञापन सोपा।

श्रीमती विभा पटेल ने कहा कि महिला कांग्रेस इस घटना की कठोर शब्दों में निंदा करती हैं। हमारी मांग है कि आरोपियों को सख्त से सख्त सजा मिलनी चाहिए।

सम्पादकीय

उदासीन मतदाता, चिंता में पार्टियां

आम चुनाव के दो चरणों का मतदान हो चुका है, लेकिन तीसरे चरण के दौरान तक चुनाव का माहौल बनना चाहिए था, अभी तक नहीं बन सका है। शत प्रतिशत मतदान की बात की जा रही है, लेकिन कई इलाकों में पचास प्रतिशत भी मतदान नहीं हुआ। और आगे के चरणों में भी बहुत ज्यादा मतदान होने की उम्मीद नहीं की जा सकती है। ऐसे में राजनीतिक से लेकर सामाजिक विशेषज्ञ यह विश्लेषण करने को विवश हैं कि आखिर इस बार मतदाताओं में चुनाव को लेकर उत्साह क्यों नहीं दिख रहा?

वैसे तो यह भी कहा जा सकता है कि देश के अधिकांश हिस्सों में तेज गर्मी पड़ रही है और फसलों की कटाई भी हो रही है, इस कारण मतदान में गिरावट आ सकती है। लेकिन यह पूरा सच नहीं माना जा सकता। सही बात तो यह दिख रही है कि देश के कई हिस्सों में मतदान करने की भावना ही कम हुई है। ऐसा लग रहा है कि आम मतदाता अपने सामने मौजूद विकल्पों को लेकर बहुत उत्साहित नहीं महसूस कर रहा है।

राजनीतिक समीक्षक तो ये भी मान रहे हैं कि चुनाव से पहले 'अबकी बार 400 पार' के नारे का शोरगुल भी इसके लिए कुछ हद तक जिम्मेदार है। ऐसा माना जा रहा था जैसे नतीजों का फैसला पहले ही हो चुका है और अब केवल यह देखना बाकी है कि 1984 में राजीव गांधी की 414 लोकसभा सीटों का रिकॉर्ड टूटेगा या नहीं। सत्तापक्ष का नारा कितना सच होगा, यह तो नहीं कहा जा सकता, लेकिन जनता ये कहते सुनी जा सकती है कि उन्हें तो जीतना ही है, फिर क्यों मेहनत की जाए? उनके वोट से क्या हो जाएगा? कौन सा बदलाव आ जाएगा।

लेकिन जैसे-जैसे चुनाव-अभियान आगे बढ़ रहा है, राज्य-दर-राज्य चुनावी-संघर्ष जमीन पर आता दिख रहा है।

यह अकारण नहीं है कि पहले दौर के मतदान में औसतन तीन प्रतिशत की गिरावट के ठीक एक दिन बाद भाजपा अपने मूल मुद्दों की तरफ लौटती दिखी। पहले सनातन और राम मंदिर चला, बीच में कुछ मुद्दे बदले। 2047 तक 'विकसित भारत' के वादे के साथ चुनाव-अभियान में प्रवेश किया गया था और अब डर की राजनीति सामने आती दिख रही है। जब कांग्रेस के घोषणापत्र की तुलना मुस्लिम लीग से की जाती है तो लगने लगता है कि 'सबका साथ, सबका विकास' की नेक बातें केवल दुनिया की स्वीकार्यता अर्जित करने के लिए ही हैं। लेकिन अगर भाजपा ने लंबे समय से निर्मित अपनी सांप्रदायिक छवि को पुनर्जीवित कर दिया है तो कांग्रेस भी काल्पनिक भय की शिकार हो रही है।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने अपनी रैलियों में संविधान की प्रति लहराते हुए चेतावनी दे रहे हैं कि अगर भाजपा सत्ता में आई तो वे दलितों, आदिवासियों और ओबीसी के लिए आरक्षण खत्म करने के लिए संविधान में संशोधन करेंगे।

जबकि औसत मतदाता आजीविका के बुनियादी सवालों से घिरा है और उस पर ये तमाम चुनावी बातें बेअसर साबित हो रही हैं। अ

पिछले पांच साल कई भारतीयों के लिए कठिन रहे हैं। महामारी, लॉकडाउन, महंगाई, नौकरियां छूटना, बेरोजगारी, घटती आमदनी आदि ने कोई ऐसा माहौल नहीं बनाया है कि मतदाता 'फील-गुड' करें। दुनिया में 'उभरता हुआ भारत' पांच सितारा समारोहों में भले ही चर्चा का विषय हो, लेकिन गर्मी और धूल से जूझते ग्रामीण भारत में आज भी पानी का टैंकर आठ दिनों में केवल एक बार आता है। एक तरफ उत्साहपूर्ण बयानबाजी और दूसरी तरफ जीवन की कठोर वास्तविकताओं के इस अंतर ने ही कई मतदाताओं को मतदान-प्रक्रिया के प्रति उदासीन बना दिया है।

इसके बाद भी लोग विकल्प को लेकर बेहद उदासीन लग रहे हैं। मतदाता तो ठीक, पार्टियों के राजनीतिक कार्यकर्ता भी अब चुनाव-प्रणाली को लेकर उत्साहपूर्ण नहीं दिखते हैं। सवाल भी वाजिब है कि जब नेता हर कीमत पर सत्ता में बने रहने के लिए लगातार समझौते कर रहे हों और कल के कट्टर विरोधी आज के गठबंधन सहयोगी बन जाते हों तो एक वफादार कार्यकर्ता जमीन पर मेहनत क्यों करेगा? अवसरवादिता ने कार्यकर्ताओं में राजनीति को लेकर संशय पैदा कर दिया है, वह भी भाजपा जैसी संगठन आधारित पार्टी में। मध्यप्रदेश जैसे मजबूत संगठन वाले राज्य में भाजपा का कार्यकर्ता आयातित राजनेताओं के कारण सुस्त होता जा रहा है।

हमारे देश का आर्थिक परिदृश्य भी काफी कुछ इसके लिए जिम्मेदार माना जा सकता है। एक तरफ ट्रिलियन इकानामी की बातें, दूसरी तरफ मुफ्त राशन बांटने को विवश सरकार। यानि गरीबी दूर नहीं हुई। अमीरों-गरीबों के बीच की खाई भी बढ़ती जा रही है। कुछ प्रतिशत लोग अधिकांश नागरिकों के बराबर सम्पत्ति वाले हो गए हैं। अधिसंख्य लोग कर्ज लेकर जीविका चला रहे हैं। ऐसे में क्या आश्चर्य कि राज्यभर के ग्रामीण इलाकों में मतदाताओं का अधूरे वादों से मोहभंग हो चुका है। तब सवाल उठता है कि मतदाताओं की इस थकी हुई मानसिकता से चुनावी तौर पर किसे फायदा या किसे नुकसान होगा?

एक तरफ सामूहिक नेतृत्व से व्यक्तिवादी होती भाजपा को पूरा भरोसा है कि एक ऐसे नेता के नेतृत्व में उनकी बेहतर चुनावी 'संगठन' मशीन जीत की हैट्रिक सुनिश्चित करेगी, जिस पर जनता को अभी भी भरोसा है। दूसरी ओर कांग्रेस इस उम्मीद पर टिकी है कि मतदाताओं की उदासीनता उसे कम से कम करीबी मुकाबले वाली सीटों पर लड़ने का मौका जरूर देगी। लेकिन मतदाता की उदासीनता का मुद्दा फिलहाल वहीं का वहीं दिख रहा है। राजनीतिक पार्टियों से लेकर चुनाव आयोग और उसके अधीन आने वाला स्थानीय प्रशासन वोट प्रतिशत बढ़ाने के प्रयासों में जुटा है। कथित तौर पर तमाम अभियान भी चलाए जा रहे हैं। अब अगले चरण के मतदान का इंतजार करते हैं।

विश्व प्रेस दिवसः प्रेस का कुशल मंगल आखिर किसके लिए?

-जयराम शुक्ल

संविधान के प्रावधानों से इतर लोकमानस में चौथे स्तंभ के तौरपर स्थापित प्रेस आज भी अन्य स्तंभों से ज्यादा विश्वसनीय, सहज और सुलभ है। समस्याओं से घिरा आम आदमी सबसे पहले अखबार के दफ्तर में जाकर फरियाद करता है। थाने, दफ्तरों और भी सरकारी गैर सरकारी जगहों में जब वह दुरदुराया जाता है तो उसका आखिरी ठिकाना भी प्रेस का ही दफ्तर होता है। यह छपे हुए शब्दों की ताकत है जो प्रेस को तमाम लानतों मलानतों के बावजूद प्रभावी बनाए हुए है।

बहुत सी धारणाओं की स्थापना लोकमानस के जरिये होती है। जैसे प्रेस का मतलब आज भी अखबार और पत्रिकाएं हैं न कि टीवी चैनल और बेव पोर्टल। इसलिए प्रेस के समानांतर मीडिया के नाम को चलाने के जतन शुरू हुए लेकिन प्रेस शब्द का रसूख कायम है। इस शब्द को अभी भी ऐसा उच्च सम्मान प्राप्त है कि अपराधी भी प्रायः इसे ढाल की तरह इस्तेमाल करने लगते हैं। कमाल की बात है कि जिस प्रेस शब्द को भारतीय संविधान ने अपने पन्नों में भी जगह नहीं दी उसे लोक मानस ने आगे बढ़कर सिरोधार्य किया।

अस्सी के दशक के शुरुआती वर्षों में जब टेलीविजन आया तो लोगों ने यह कहना शुरू कर दिया कि अखबारों के दिन गए। प्रेस के भविष्य पर गंभीर चर्चाएं शुरू हुईं। लेकिन टीवी का आना फायदे का ही साबित हुआ। अखबार ज्यादा सतर्क हुए। रंगीन होने का दौर शुरू हुआ। लेआउट्स और प्रोडक्शन की दृष्टि से क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। बड़े घरानों से लेकर मध्यम दर्जे तक के अखबार प्रतिष्ठानों में आर एंड डी(रिसर्च एन्ड डवलपमेंट) के विभाग खुले।

अस्सी के दशक को आप प्रेस का सुनहरा दौर कह सकते हैं। खुफिया कैमरे, और बटन रिकार्डर नहीं थे फिर भी एक के बाद एक सनसनीखेज खोजी रिपोर्ट्स आईं जिनकी नजीर आज भी दी जाती है। अंतुले सीमेंट घोटाला कांड का परदाफाश हुआ, इसके बाद खोजी खबरों की झड़ी सी लग गई। सबसे बड़ा धमाका 86-87 में बोफोर्स का हुआ।

रविवार, दिनमान, माया, इलस्ट्रेटेड वीकली, साप्ताहिक हिंदुस्तान, धर्मयुग जैसी पत्रिकाएं दैनिक अखबारों से लोहा लेने लगी। अखबार और पत्रिकाओं में आगे निकलने की कड़ी स्पर्धा शुरू हुई। इस दशक में रिकॉर्ड तोड़ पाठक बढ़े और उसी हिसाब से नए अखबार और जमे-जमाए अखबारों के संस्करण। दूरदर्शन काला- सफेद से रंगीन हुआ। दर्शक जीवंत खबरें देखने लगे। टीवी अखबारों के लिए कैटलिस्ट साबित हुआ। पढ़ने की भूख जगी। यह प्रेस पर पाठकों की कृपा है, ये इज्जत, शोहरत, ताकत लोक की वजह से है सरकार की वजह से नहीं, यह बात अच्छे से समझ लेना चाहिए।

छपे हुए शब्द आज भी सबसे ज्यादा विश्वसनीय और खरे हैं। हाल ही की एक सर्वे रिपोर्ट बताती है कि पाठकों का भरोसा मुद्रित माध्यमों के प्रति और बढा है। 1990 के बाद निजी क्षेत्र के चैनल आए। खबरों की बड़ी.स्पर्धा शुरू हुई। विदेशी चैनलों के लिए भी दरवाजे खोल दिए गए। एक बार फिर इस जनसंचार क्रांति से ऐसा लगा कि अखबार और पत्रिकाओं का भट्ठा बैठ जाएगा। कुछ शुरुआती असर दिखा भी लेकिन लोकमानस में चैनल्स खबरों को लेकर अपनी छाप नहीं छोड़ पाए, जबकि ये ऐसे माध्यम हैं कि खबरें जीवंत दिखती हैं।

सर्वे ये बताते हैं कि चैनल्स अखबारों के हित में ही रहे। खबरों की भूख बढ़ाने का काम किया अखबार और भी गंभीरता से पढ़े जाने लगे। प्रसार के हर साल जारी होने वाले आँकड़े बताते हैं कि अखबारों के प्रसार का दायरा दिनोदिन बढ़ता ही जा रहा है।

अब आते हैं प्रेस की स्थिति पर। प्रेस की इस महत्ता ने हर क्षेत्र के व्यवसाइयों को अपनी ओर खींचा है। बिल्डर,चिटफंडिये,खदानों और शराब का ठेका चलाने वाले, राजनीति में रसूख जमाने की लालसा रखने वाले नवकुबेर, प्रेस ने सभी को लुभाया।

एक बड़े व्यापारी ने सच्चा किस्सा बताया- मैं एक हजार करोड़ के टर्न ओवर वाला व्यापारी किसी काम से बल्लभभवन गया पीएस से मिलने। चार घंटे बैठे रहने के बाद भी मेरा नंबर नहीं आया जबकि विधिवत् अपाइंटमेंट ले रखा था। कुछ लोग आते सीधे चैम्बर में घुस जाते। मैंने पूछा ये कौन लोग हैं? चपरासी ने बताया कि ये प्रेस वाले हैं। तभी मेरे दिमाग में आया कि क्यों न हम भी प्रेस शुरू कर दें। उक्त व्यवसायी ने अखबार शुरू कर दिया। अच्छे पत्रकारों को नौकरी में रख लिया फिर हुआ यह कि जो कभी चार घंटे पीएस का इंतजार करते बैठा करता था उसके ही दफ्तर उस पीएस के मंत्री और यहां तक कि मुख्यमंत्री भी आने लगे।

ऐसे लोगों के लिए अखबार व्यवसाय का कवच और विजिटिंग कार्ड बन गया। यहीं से एक मुगालता और शुरू हुआ कि ऐसे व्यवसायी जो अखबार के मालिक बन गए, ने सोचा क्यों न अखबार के दम पर उल्टीसीधी फाइलें ओके करवा ली जाएं यानी कि अखबार को कट्टे की तरह इस्तेमाल करने की कोशिशें हुईं। प्रेस को जब आप प्राँस बनाएंगे तो प्रेस की आत्मा वहीं शरीर छोड़कर भाग जाएगी। एक मित्र गिनती लगाकर बता रहे थे कि कोई दो दर्जन से ज्यादा ऐसे अखबार और चैनलों के मालिक हैं जो जेल की हवा खा रहे हैं। कईयों के यहां ऐसे छापे पड़े कि वे अब तक सँभल नहीं पा रहे हैं।

कहने का आशय यह कि प्रेस को पेशेवराना अंदाज से ही चलाया जा सकता है इसलिये मीडिया के पुराने घराने ही इस मैंदान में कायम हैं। वे वो हर तिकड़म जानते हैं कि कैसे उनका रसूख भी कायम रहे और मीड़िया का धंधा भी चलता रहे। 1966 में प्रेस कौंसिल आफ इंडिया के गठन के बाद अखबारों में काम करने वालों के हित में कई वेजबोर्ड बने। तीस साल से बछावत, बेजबरुआ और मजीठिया का नाम सुन रहे हैं, शायद ही किसी मीड़िया घराने ने ईमानदारी से इनकी सिफारिशें लागू की हों। ये सभी बोर्ड सुप्रीम कोर्ट के माननीय जजों की अध्यक्षता में बने। इन दिनों मजीठिया की सिफारिशों को लागू करने पर जोर है।

प्रायः सभी बड़े मीडिया समूहों ने इसका रास्ता निकाल लिया। अपनी ही आउटसोर्स कंपनियां बना लीं और पत्रकारों को नौकरी छोड़ने या आउटसोर्स कंपनी में काम करने का विकल्प रखा। मजबूरी में पत्रकार ने इसे स्वीकार कर लिया। अभी कुछ दिन पहले दिल्ली के एक बड़े मीडिया समूह से निकाले गए एक पत्रकार की लावारिस मौत सुनकर दहल गया। वह न्याय को लेकर लड़ाई लड़ रहा था। व्यवस्था ने साथ नहीं दिया।

आज की तारीख में सबसे कच्ची नौकरी पत्रकारों की है। वे कल किस वक्त निकाल बाहर कर दिए जाएं इसका पता नहीं। अखबारों में दूसरों के शोषण की बात करने वाला खुद कितना शोषित है कि इसका जिक्र तक नहीं कर सकता। बड़े अखबारों में इस बात की घोषित मनाही है कि वह पत्रकारों की यूनियन से नहीं जुड़ेगा। पत्रकारों की यूनियनें बँटी हुई हैं। श्रम कानूनों को सरकारों ने ही बधिया बनाके रखा है। सो पत्रकार जो दुनिया की नजरों में बड़ा क्रांतिकारी है, घुट घुटकर मरता है।

आँचलिक पत्रकारिता की तो और दुर्गति है। पहले अखबार मालिक उन्हें उतनी ही गंभीरता से लेते थे जैसे बस मालिक अपने.कंडक्टर को। अब तो स्थित यह है कि मामूली से वेतन और विग्यापन के भारी टारगेट के आधार पर ब्यूरो खोले जाते हैं और जो बैठता है खुद को चीफ कहवा कर ही साँत्वना दे लेता है। इस प्रक्रिया में अपराधियों का तबीयत से पत्रकारीकरण हो गया है। चैनल्स के क्षेत्रीय संवाददाताओं की स्थिति तो और भी गई गुजरी है। इनके हितों की रक्षा कौन करे.?

प्रेस कौंसिल

प्रेस कौंसिल को 1966 में प्रेस के हितों की रक्षा व उन्हें मर्यादित करने के लिए गठित किया गया था। चूँकि 16 नवंबर से उसने काम करना शुरू किया था इसलिए इस दिन को राष्ट्रीय प्रेस दिवस घोषित कर दिया। इसके अध्यक्ष अमूमन सुप्रीम कोर्ट के रिटायर्ड जज होते हैं। इस संस्था को प्रेस का .वाँचडाग.. कहा जाता है। लेकिन इसके रहते ही वो पत्रकार न्याय माँगते हुए बाराखंभा रोड के फुटपाथ में मर गया। यह संस्था कुछ नहीं कर पाई। वह इसलिए कि जिस तरह के अधिकार बार कौंसिल, मेडिकल कौंसिल,टेक्निकल कौंसिल को मिले हैं वैसे अधिकार प्रेस कौंसिल के पास नहीं है।

प्रेस कौंसिल यह भी तय नहीं कर सकता कि किसे पत्रकार कहा जाए किसे नहीं। सबसे बड़ा झगड़ा यह है कि टीवी और डिजिटल मीडिया को प्रेस क्यों माना जाए..! और माना जाए तो प्रेस कौंसिल ने उसे किस तरह परिभाषित किया है इसपर कभी कोई गंभीर विमर्श नहीं हुआ। इसबीच समानांतर मीडिया की भी बात हाशिए से मुखपृष्ठ पर आ गई। फेसबुक के संस्थापक मार्क जुकरबर्ग ने वाशिंगटन की जार्जटाउन यूनिवर्सिटी के एक व्याख्यान में कहा कि सोशल मीडिया अब दुनिया का पाँचवाँ स्तंभ है। यह बात भारत के संदर्भ में और भी महत्वपूर्ण हो जाती है उसकी वजह यह कि यहां अमेरिका की तरह संविधान में प्रेस को परिभाषित नहीं किया गया है। इसलिए अभिव्यक्ति की आजादी का उपभोग हर वह व्यक्ति एक पत्रकार के तौरपर कर सकता है जिसके पास अभिव्यक्ति के तकनीकी माध्यम हैं।

सोशल मीडिया ऐसा ही माध्यम है। हम कह सकते हैं कि आज की तारीख में देश में जितने एँड्रायड फोन धारक हैं और नेट तथा सोशलमीडिया का उपभोग करते हैं वे सबके सब पत्रकार हैं। आप देख भी रहे होंगे कि फेसबुक और व्हाट्सएप में ब्रेकिंग न्यूज़ आ रही हैं। जिनका वास्ता टीवी या अखबारों से नहीं है वे भी अच्छे विश्लेषण पोस्ट कर रहे हैं। उनके पास भी इनवेस्टगेटिव रिपोर्ट है। कभी-कभी तो मुख्यधारा की मीडिया ही सोशल मीडिया का पिछलग्गू लगता है।

यह ठीक बात है की सोशल मीडिया ने अखबार वालों की लठैती पर बंदिश लगाई है..या उनके मुकाबले लठ्ठ लेकर खड़े हो गए हैं। सोशलमीडिया के साथ बड़ा खतरा दोधारी तलवार सा है। यदि ये मीडिया के भीतर या समानांतर हैं तो इनको नियंत्रित करने के लिए कोई संस्था नहीं। प्रेस कौंसिल भी नहीं।

प्रेस कौसिल तो ऐसा नखदंत विहीन वाँचडाग है जो सिर्फ भोंक सकता है इससे ज्यादा कुछ नहीं। अखबार मालिकों पर ऐसे भोंकने वालों का कभी असर नहीं पड़ा। हमारे संविधान निर्माताओं ने प्रेस के साथ ज्यादती की है। प्रेस को अभिव्यक्ति का उतना ही अधिकार है जितना कि एक आम नागरिक का। इस तरह हर व्यक्ति पत्रकार है जो अभिव्यक्ति की आजादी का इस्तेमाल करता है। भारत में पत्रकार कोई संवैधानिक शब्द नहीं है।

अमेरिका, यूरोप में ऐसी स्थिति नहीं है। वहां प्रेस संविधान के अनुच्छेद में है और उसकी स्वतंत्राता को चुनौती नहीं दी जा सकती। अमेरिकी पत्रकार सैमूरहर्ष ने मोरारजी को सीआईए का एजेंट लिखा। मोरारजी ने इसपर मुकदमा कायम किया। अमेरिकी अदालत ने बर्डन आफ प्रूफ का जिम्मा मोरारजी पर छोड़ दिया। सरकार इंदिरा जी की थी। मोरारजी को सरकार ने ऐसे दस्तावेज नहीं उपलब्ध कराए कि वे खुद को निर्दोष साबित कर सकें। सैमूरहर्ष जानते थे कि मोरारजी पर दोष नहीं निकलेगा। फिर भी मोरारजी कुछ नहीं कर पाए।यह कलंक लिए हुए ही मरे।

हमारे यहां इसकी उलट स्थिति है। क्योंकि पत्रकार की औकात सामान्य नागरिक से ज्यादा कुछ भी नहीं। पत्रकार पर मुकदमा लगता है तो उसे साबित करना होता है कि जो हमने लिखा वो ठीक लिखा। सो प्रेस की आजादी और सुरक्षा की बात करनी है तो संविधान संशोधन कर प्रेस को संविधान के दायरे में लाया जाए। उसका अलग अनुच्छेद बने। और लिखा जाए की प्रेस की स्वतंत्रता को चुनौती नहीं दी जा सकती। वकील,डाक्टर की तरह पत्रकार की न्यूनतम योग्यता तय की जाए। तभी हम भविष्य के प्रेस का कुशल मंगल देख सकते हैं। वरना कितने भी कानून आएं,आयोग और बोर्ड बनें, हर साल राष्ट्रीय प्रेस दिवस मनाएं कुछ होना जाना नहीं है।

देश किधर चलेगा ?

प्रेस दिवसः अनुशासनबद्ध स्वतंत्रता से समाज में व्यवस्था, शान्ति और समरसता पैदा होती है

योग गुरु महेश अग्रवाल

प्रेस किसी भी समाज का आइना होता है। आज प्रेस दुनिया में खबरें पहुंचाने का सबसे बेहतरीन माध्यम है। भारत में प्रेस की स्वतंत्रता भारतीय संविधान के अनुच्छेद-19 में भारतीयों को दिए गए अभिव्यक्ति की आजादी के मूल अधिकार से सुनिश्चित होती है। विश्व स्तर पर प्रेस की आजादी को सम्मान देने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा द्वारा 3 मई को विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस घोषित किया गया, जिसे विश्व प्रेस दिवस के रूप में भी जाना जाता है। प्रेस की आजादी से यह बात साबित होती है कि उस देश में अभिव्यक्ति की कितनी स्वतंत्रता है। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में प्रेस की स्वतंत्रता एक मौलिक जरूरत है। प्रेस और मीडिया हमारे आसपास घटित होने वाली घटनाओं से हमें अवगत करवा कर हमारे लिए खबर वाहक का काम करती हैं, यही खबरें हमें दुनिया से जोड़े रखती हैं। विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस का उद्देश्य प्रेस की आजादी के महत्व के प्रति जागरूकता फैलाना है। प्रेस की आजादी और समाचारों को लोगों तक पहुंचाकर, सशक्त हो रहे मीडियाकर्मियों का व्यापक विकास करना इसका उद्देश्य है।

जैसे आत्मज्ञान के लिए आंतरिक अनुशासन की आवश्यकता तो है ही, मानवता की रक्षा के लिए भी उसका महत्त्व है। हमारे परिवार, राष्ट्र, सरकार और मानवता की रक्षा अनुशासन को बनाये रखकर ही हो सकती है। महत्तर उपलब्धि, उच्चतर आत्म-प्रकाश और बाह्य-आभ्यंतर सुखों के लिए आंतरिक अनुशासन जरूरी है। योग इसी अनुशासन की बात करता है। आंतरिक अनुशासन का संबंध सामाजिक, राजनैतिक और दूसरे प्रकार के बाह्य अनुशासन से नहीं है। कुछ ऐसे कठोर अनुशासन हैं जिनका पालन कठिन है। इसलिए आप उनसे भागते हैं। किन्तु आपको उनका पालन करना है। यदि नहीं करेंगे तो दण्ड के भागी होंगे। यौगिक अनुशासन में ऐसा नहीं है। यहाँ अनुशासन का विकास ऐसे होता है जैसे हम फूल का विकास बीज से फूल खिलने तक करते हैं। अनुशासन का विकास क्रमशः होता है। यह धीरे-धीरे पूर्णता को प्राप्त करता है। तब अनुशासन हमारे चिन्तन, हमारी भावना और हमारे जीवन का अंश बन जाता है। फिर तो वह मित्रों और अमित्रों, भले और बुरे सभी प्रकार के लोगों के साथ हमारे अन्तर्सम्बन्ध का अविभाज्य अंश बन जाता है। इसी दृष्टि से हम लोग आंतरिक अनुशासन के आलोक में योग की चर्चा करते हैं। अधिकतर लोगों के लिए उनके जीवन में योग की एक सीमित भूमिका है। किसी स्कूल में जायें तो वहाँ बच्चे बड़े अनुशासित नजर आयेंगे। वहाँ बच्चे-बच्चियों को कैसे चलना चाहिए, कैसे पलकें झपकाना चाहिए, कैसे छींकना चाहिए, कैसे खाँसना चाहिए, कैसे खड़ा होना चाहिए,कैसे उठना-बैठना चाहिए - आदि सिखाया जाता है। अनुशासन के ये तरीके कवायती हैं। बच्चे उस प्रकार के अनुशासन को पसंद नहीं करते। वे मजबूरी में उनका पालन करते हैं, किन्तु भीतर से वे मुक्त होना चाहते हैं।

हर आदमी स्वतंत्र चिन्तन, स्वतंत्र भावना, स्वतंत्र कार्य करना चाहता है। बिना अनुशासन की स्वतंत्रता उच्छृंखलता है।

अनुशासनबद्ध स्वतंत्रता से समाज में व्यवस्था, शान्ति और समरसता पैदा होती है। यौगिक पद्धति - योग में स्वतंत्रता और अनुशासन दोनों की चर्चा साथ-साथ की जाती है। अनुशासनबद्ध स्वतंत्रता और स्वातंत्र्यपूर्ण अनुशासन कभी एक साथ नहीं चल सकते हैं जब तक हम अपने शरीर, अपने मन, अपने संवेग, अपनी अन्तरात्मा और अपनी चेतना से संबंधित नियमों का समुचित प्रशिक्षण नहीं प्राप्त कर लेते। अतएव योग की कई शाखाएँ हैं जो हमारे अस्तित्व के इन पहलुओं पर काम करती हैं। योगों का वर्गीकरण मुख्य रूप से चार शाखाओं, जैसे, कर्मयोग, भक्तियोग, राजयोग और ज्ञानयोग में किया गया है। इन चार मुख्य धाराओं के अन्तर्गत हठयोग, क्रियायोग, लययोग, नादयोग आदि अन्य प्रकार के योग हैं। इन चार प्रकार के योगों का संबंध हमारे शरीर, मन, बुद्धि, संवेग, वासना, कर्म, अन्तर्सम्बन्ध, प्राकट्य और अभिव्यक्ति से है। यदि हमारी क्षमताओं और हमारे व्यक्तित्व के विविध तत्त्वों का सुव्यवस्थित ढंग से विकास नहीं हो रहा है तो हमारा व्यक्तित्व असंतुलित होगा। इस प्रकार संभव है कि बौद्धिक विकास बहुत अधिक हो जाय, पर भावात्मक पक्ष अवरुद्ध हो जाय। इसलिए सभी प्रकार के योगों के एकीकृत रूप को ग्रहण करना चाहिए।

कोरोना वैक्सीनः सरकार शंकाओं का निवारण करे

राकेश दुबे

और कोरोना वैक्सीन बनाने वाली कंपनी एस्ट्राजेनेका ने स्वीकारा कि उसकी कोविशील्ड वैक्सीन के रेयर साइड इफेक्ट हो सकते हैं। इसको लेकर देश में नए सिरे से बहस शुरू हुई। विशेषज्ञ सलाह दे रहे हैं कि घबराएं नहीं, टीके से जुड़ा खतरा दस लाख में से एक व्यक्ति को होता है।

वैसे देश के चुनावी माहौल के बीच आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति के कोलाहल में यह तय कर पाना कठिन है कि हवा में तैर रही खबर की तार्किकता क्या है? यह भी कि यह खबर वास्तविक है या राजनीतिक लक्ष्यों के लिये गढ़ी गई है। वहीं दूसरी ओर व्यापारिक प्रतिस्पर्धा के चलते भारत के खिलाफ जो वैश्विक गुटबंदी चल रही है, कहीं आरोप इस कड़ी का हिस्सा तो नहीं है।

विशेषज्ञ कह रहे हैं कि कोविशील्ड वैक्सीन लेने के चार से बयालीस दिनों के भीतर टीटीएस प्रभाव हो सकता है, जो ब्लड क्लॉट बना सकता है। जिससे कालांतर प्लेटलेट्स की कमी शरीर में हो सकती है। दरअसल, वैक्सीन बनाने वाली कंपनी एस्ट्राजेनेका ने ब्रिटेन में एक अदालती सुनवाई के दौरान

वैक्सीन के दुर्लभ प्रभावों की बात को माना था। कंपनी के विशेषज्ञों का कहना है कि टीटीएस दिमाग, फेफड़ों, आंत की खून की नली आदि में तो पाया गया लेकिन किसी को हार्ट अटैक की समस्या नहीं हुई। साथ ही यह भी कि कोविड संक्रमण के कारण भी ब्लड क्लॉट के मामले सामने आए हैं।

कुछ विशेषज्ञ मानते हैं कि वैक्सीन से इम्यून सिस्टम में टी व बी सेल गतिशील होने से इम्यून प्रतिक्रिया बढ़ती है, जिसके बाद खून की नली में सूजन से ब्लड क्लॉट बनता है। जिसमें ज्यादा प्लेटलेट्स इस्तेमाल होने लगते हैं। जो कि टीटीएस की स्थिति होती है। विशेषज्ञ मानते हैं कि वैक्सीन ने महामारी की घातकता को नब्बे प्रतिशत तक घटाकर रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ाई। वहीं वैक्सीन के साइड इफेक्ट छह माह के भीतर सामने आ जाते हैं, इसके उपयोग को दो साल से अधिक का समय हो चुका है।

उल्लेखनीय है सरकार ने कोरोना संकट के दौरान कोविशील्ड लेने हेतु व्यापक जनसंपर्क अभियान चलाया था। अब जब इसके दुष्प्रभावों को लेकर संशय पैदा हुआ है तो उसे अपने संसाधनों का इस्तेमाल करके लोगों की शंकाओं का निवारण भी करना चाहिए। सेहत से जुड़े किसी भी मामले में किसी तरह का समझौता नहीं किया जा सकता। यदि किसी तरह असुरक्षा की भावना बढ़ती है तो सरकार को तुरंत दूर करना चाहिए। नागरिकों की शंकाओं का तुरंत ही समाधान किया जाना चाहिए। पब्लिक डोमेन में कंपनी द्वारा चुनावी बांड खरीदे जाने को लेकर भी सवाल उठाये जा रहे हैं। जिसके चलते लोगों के मन में कई तरह के सवाल उपजे हैं, जिनका निराकरण भी सरकार का प्राथमिक दायित्व है।

हमें यह भी स्वीकारना चाहिए कि संकटकाल में इस वैक्सीन की तुरंत उपलब्धता से देश की बड़ी आबादी को सुरक्षा कवच उपलब्ध कराया जा सका। बेहद कम समय में कोरोना से लड़ने के लिये उपलब्ध कराई गई वैक्सीन के साइड इफेक्ट से इनकार भी नहीं किया जा सकता। इस बात की आशंका भी है कि टीएसएस प्रभाव कोरोना संक्रमण के बाद भी सामने आ सकते हैं।

कुछ विशेषज्ञ मानते हैं कि लॉकडाउन के कारण लाइफ स्टाइल बिगड़ने से लोगों की गतिशीलता में कमी, मानसिक तनाव वृद्धि से मोटापे व मधुमेह के चलते भी हृदयाघात के मामले बढ़े हैं। वहीं दूसरी ओर कुछ हृदयरोग विशेषज्ञों का मानना है कि वैक्सीन बनाने वाली कंपनी को पहले ही बताना चाहिए कि वैक्सीन से टीटीएस जैसे साइड इफेक्ट हो सकते हैं। जानकारी होने पर लोग अपनी प्राथमिकता की वैक्सीन ले सकते थे। वहीं यह भी तार्किक है कि कोई दवा अथवा वैक्सीन यदि असर करती है तो उसके साइड इफेक्ट भी निश्चित रूप से होते हैं।

कुछ विशेषज्ञ वैक्सीन के दुष्प्रभावों के आरोपों के मूल में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चल रही वैक्सीन राजनीति को भी बताते हैं। कुछ अमेरिकी विशेषज्ञ वैक्सीन के दुष्प्रभावों को दूर करने के लिये हफ्ते में दो दिन सिर्फ एक बार खाना खाने की सलाह देते हैं, जिससे ब्लड क्लॉटिंग रोकने में मदद मिल सकती है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक भरत पटेल द्वारा इंडिपेंडेंट प्रेस 11, प्रेस काम्प्लेक्स, एमपी नगर, जोन-1, भोपाल से मुद्रित तथा 226, एमपी नगर जोन-2, भोपाल से प्रकाशित। संपादक — भरत पटेल, प्रबंध सलाहकार — भारती पटेल, संपादकीय सलाहकार — विष्णु कौशिक, सलाहकार संपादक - स्मिता पटेल, स्थानीय संपादक —संजय सक्सेना,
प्रकाशन से संबंधित समस्त समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार। समस्त न्यायिक कार्यवाहियों के लिए क्षेत्राधिकार भोपाल न्यायालय का रहेगा। रजि. नं. भोपाल डिवी. 48 म.प्र.। ई-मेल : dspbp167@gmail.com, वेबसाईट: dainiksandhyaprakash.in

तेज गर्मी की वजह से जिला अस्पताल में बढ़ी मरीजों की संख्या

विदिशा। भीषण गर्मी का दौर चालू हो चुका है। वर्तमान तापमान 42 डिग्री सेल्सियस से 43 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है। ऐसे में गर्मी की वजह से मरीजों की संख्या लगातार बढ़ रही है। जिला अस्पताल के साथ-साथ निजी अस्पतालों में भी मरीजों की संख्या लगातार बढ़ती दिखाई दे रही है। जिला अस्पताल में रोजाना 24 घंटे के दौरान 100 मरीज भर्ती किया जा रहे हैं। इन मरीजों में सबसे ज्यादा संख्या उल्टी, दस्त के मरीजों की है। लू लगने के कारण भी बड़ी संख्या में मरीज भर्ती हो रहे हैं। जिला अस्पताल की डॉक्टर के अनुसार लू से बचाव के लिए लगातार पानी पिए और धूप से बचने का प्रयास करें, हो सके तो घर पर ही रहें।

प्रदेश सरकार के उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा पहुंचे विदिशा

विदिशा। मध्य प्रदेश सरकार में उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा गुरूवार की शाम विदिशा पहुंचे, जहां उन्होंने शहर में विभिन्न जगहों पर भाजपा कार्यकर्ताओं के निवास पर पहुंचकर उनसे मुलाकात की और लोकसभा चुनाव को लेकर की जा रही तैयारी की समीक्षा की। बाद में चुनाव कार्यालय अग्रवाल धर्मशाला में पहुंचे और कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। मीडिया से बात करते हुए उन्होंने कहा कि केंद्र में फिर एक बार नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार बन रही है और विश्व गुरु बनने के रास्ते को हम आगे बढ़ा रहे हैं। वहीं शिवराज सिंह चौहान की जीत को भी ऐतिहासिक बताते हुए ज्यादा से ज्यादा वोटिंग करने की अपील उन्होंने की।

ट्रक एसोसिएशन ने ट्रैक्टर-ट्राली के बेजा इस्तेमाल पर ली कोर्ट की शरण

विदिशा। ट्रक ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन ने एक बार फिर प्रशासन से ट्रैक्टर-ट्रॉली पर कार्रवाई करने की मांग की है। संगठन के अध्यक्ष झिरमिल सिंह ने बताया कि ट्रैक्टर-ट्रॉली पर किसी प्रकार का टैक्स नहीं लगता है। जिसकी वजह से ट्रैक्टर-ट्राली का कई दुकानदार और अन्य व्यवसाई इसका व्यवसायिक उपयोग कर रहे हैं। जिससे शासन को तो नुकसान हो ही रहा है तो वहीं ट्रक एसोसिएशन और लोडिंग ऑटो चालकों के लिए भी रोजगार न मिलने से आर्थिक नुकसान हो रहा है। संगठन ने बताया कि पूर्व में भी ट्रैक्टर-ट्रॉली पर कार्रवाई की गई है, लेकिन कई दुकानदार उसका लगातार दुरुपयोग कर रहे हैं। उन्होंने यह भी बताया कि इस मामले को लेकर हाईकोर्ट की शरण ली गई है। फैसला आने के बाद प्रशासन और पुलिस अवश्य कड़ी कार्रवाई करेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने जनसभाओं में कांग्रेस पर साधा निशाना, कहा- ये लोग संविधान का अपमान कर रहे

इससे पहले कार्यकर्ता सम्मेलन व संत समागम में शामिल हुए एवं मंदसौर के जावर में बोहरा समाज के 53वें धर्म गुरू सैयदना मुफद्दल सैफुद्दीन साहब से भी मिले

देवास, राजगढ़, सागर 02/05/2024। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उज्जैन में उज्जैन उत्तर विधानसभा में आयोजित कार्यकर्ता सम्मेलन एवं संत समागम में शिरकत करने के साथ ही देवास लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी महेंद्र सिंह सोलंकी के समर्थन में आगर, राजगढ़ लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी श्री रोडमल नागर के समर्थन में बोड़ा, चाचौड़ा व मकसूदनगढ़ एवं सागर लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी श्रीमती लता वानखेड़े के समर्थन में सिरोंज में आयोजित जनसभाओं को संबोधित करते हुए कहा कि कांग्रेसी न राम के हुए, न राष्ट्र के हुए और राज्य का तो पहले ही दिग्विजय सिंह ने बंटाढार कर दिया। अयोध्या में श्रीराम का मंदिर बन गया तो कांग्रेस को लगा कि उनका वोट बैंक लुट गया है। इसके लिए वे 70 वर्षों तक श्रीराम मंदिर निर्माण में अड़ंगा लगाते रहे। यह चुनाव सनातन संस्कृति और सनातन संस्कृति को गाली देने वालों के बीच में है। कोरोना काल में जब हर तरफ हाहाकार मचा हुआ था उस समय हनुमान भक्त प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी ने देशवासियों की जान बचाई।

कांग्रेस के न वचन का ठिकाना है, न ही पार्टी का ठिकाना है: मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इस बार का चुनाव भाजपा-कांग्रेस और घमंडिया गठबंधन का चुनाव नहीं है, बल्कि इस बार का चुनाव तो सनातन संस्कृति और सनातन संस्कृति को गाली देने वालों के बीच का चुनाव है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी हमारी सनातन संस्कृति की रक्षा के लिए दिन-रात जुटे हुए हैं। वे देश का मान-सम्मान दुनियाभर में बढ़ा रहे हैं, लेकिन कांग्रेस और इसके घमंडिया गठबंधन ने हमेशा से देश की सनातन संस्कृति को बदनाम करने का काम किया है। हम सनातन संस्कृति को पूजन वाले, मानने वाले लोग हैं, लेकिन कांग्रेस और इनके नेता दिग्विजय सिंह सनातन संस्कृति का मजाक उड़ाने वाले हैं। वे आतंकवादियों को जी कहकर संबोधित करते हैं। उन्होंने उनके चुनाव प्रचार के लिए 200 मौलवी बुलवाए हैं। न श्रीराम, श्रीकृष्ण, बाबा महाकाल को पूजन वाले लोग हैं।

कांग्रेस के इतने पाप कि डिक्शनरी कम पड़ जाए: मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि कांग्रेस ने 70 सालों में इतने पाप कर डाले कि इनके पापों की डिक्शनरी भी कम पड़ जाए। इनके पापों का घड़ा भरा चुका है और अब फूटने वाला भी है। हमने 500 वर्षों तक अपने अराध्य के मंदिर का सपना देखा। आजादी के बाद से लगभग 70 वर्षों तक कांग्रेस ने देश में शासन किया, लेकिन वे भगवान श्रीराम को गर्भगृह में विराजमान नहीं करवा पाए। जब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी ने यह बीडा उठाया तो इसमें भी कई अड़ंगे लगाए। जब सुप्रीम कोर्ट का निर्णय आया तो उस पर भी आपत्ति उठाई। इतना ही नहीं सुप्रीम कोर्ट के निर्णय का हमारे मुस्लिम भाइयों ने भी स्वागत किया और उन्होंने भी भगवान श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा का आनंद लिया, लेकिन कांग्रेस वाले कोई नहीं आए। अब वे वोट मांगने के लिए आ रहे हैं तो उनसे पूछना कि एक फोटो दिखाओ भगवान श्रीराम के साथ में तो नहीं दिखा पाएंगे।

कांग्रेस संविधान का अपमान कर रही है: मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि कांग्रेस ने सबसे ज्यादा संविधान में संशोधन कराए और अब भी वे संविधान का अपमान कर रहे हैं। उनके नेता राहुल गांधी एक लाल किताब को संविधान बता रहे हैं। सभाओं में जाकर कह रहे हैं कि भाजपा की सरकार आ गई तो वे संविधान को बदल देंगे। वे कहते हैं कि संविधान खतरे में है, सबका आरक्षण हटा देंगे। उन्हें यह नहीं पता है कि भाजपा की सरकार 10 सालों से है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी ने लोकतंत्र के मंदिर में प्रवेश करने से पहले बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर द्वारा लिखे गए संविधान को अपने मस्तिष्क से लगाया था, प्रणाम किया था और उसके बाद वे लोकतंत्र के मंदिर में आए। राहुल गांधी को यह नहीं पता है कि आलू जमीन में नीचे उगते हैं या जमीन के उपर लगते हैं, अब वे कह रहे हैं कि संविधान खतरे में है। संविधान की रक्षा तो सच्चे अर्थों में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने ही की है।

कांग्रेस ने झूठ बोलकर बनाई थी सरकार: मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि कांग्रेस ने मध्यप्रदेश में झूठ बोलकर सरकार बनाई थी। उनकी सरकार में भाजपा द्वारा शुरू की गई योजनाओं को बंद कर दिया गया था। अब कह रहे हैं कि लाडली बहना योजना भी बंद हो जाएगी, लेकिन उन्हें यह नहीं पता है कि यह भाजपा की सरकार है, जिसमें योजनाएं बंद नहीं होती हैं, बल्कि नई-नई योजनाएं शुरू की जाती हैं। लाडली बहना योजना भी बंद नहीं होगी और हमारी बहनों को तय तारीख को इसका पैसा खाते में आता रहेगा। भाजपा सरकार में हर वर्ग और हर क्षेत्र में विकास ही विकास हुआ है। जिला बनने के बाद आगर की दशा बदली है। यहां पर शैक्षणिक संस्थाएं, कॉलेज सहित कई अन्य सौगातें दी गई हैं।

भारत को शक्तिशाली बनाने के लिए मोदीजी को जिताएं: मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि इस देश के नागरिकों का पहला वोट पड़ा तो देश से आतंकवाद खत्म हो गया, दूसरा वोट पड़ा तो भगवान श्रीराम गर्भगृह में मुस्कुरा रहे हैं। भव्य मंदिर का निर्माण हो रहा है और अब तीसरी बार वोट पड़ेगा तो भारत दुनिया का सबसे शक्तिशाली देश बनेगा। अबकी बार तीसरी बार सरकार बनाना है, क्योंकि भारत को शक्तिशाली बनाना है, सनातन धर्म की जय-जयकार पूरी दुनिया में करवाना है, दुनिया में मानवता की पुनर्स्थापना और भारत का मान-सम्मान बढ़ाना है। इसके लिए भाजपा को जीतना जरूरी है। अबकी बार-400 पार लाना है।

ये रहे उपस्थित: आगर में आयोजित जनसभा में श्री चिंतामण राठौर, श्री मधु गेहलोत, श्री जगदीश अग्रवाल, श्री सोनू गेहलोत, श्री बहादुर सिंह मुकाती, श्री करण सिंह, श्री बाबूलाल यादव, श्री शंकर सिंह सिसोदिया, श्री श्याम सिंह, श्री गोविंद सिंह, श्री लाल सिंह सहित अन्य जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।राजगढ़ लोकसभा में आयोजित जनसभा में प्रदेश शासन के मंत्री श्री गौतम टेटवाल, विधायक श्री मोहन शर्मा, श्री ज्ञान सिंह गुर्जर, श्री दीपेंद्र सिंह चौहान, श्रीमती प्रियंका मीणा उपस्थित थीं।

मुख्यमंत्री ने किया उज्जैन के वार्ड में, बूथ पर घर-घर जनसंपर्क: मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने उज्जैन में चुनाव अभियान के दौरान अपने विधानसभा क्षेत्र उज्जैन के वार्ड क्रमांक 38 के बूथ क्रमांक 60 पर पहुंचकर घर-घर जनसंपर्क कर लोकसभा चुनाव में भाजपा प्रत्याशी श्री अनिल फिरोजिया को वोट देने की अपील की। मुख्यमंत्री ने कार्यकर्ताओं से आग्रह किया कि हर कार्यकर्ता का मतदान केंद्र ही उसकी लोकसभा है। इस पर मतदान प्रतिशत बढ़ाने की जिम्मेदारी कार्यकर्ताओं की है। उन्होंने कहा देश में मोदीजी की गारंटी सबसे ज्यादा चल रही है और मोदीजी की गारंटी का ही परिणाम है कि आज मध्यप्रदेश के सभी काम तेजी से हो रहे हैं। आयुष्मान योजना में अब 70 वर्ष से अधिक बुजुर्गों को मुफ्त इलाज मिलेगा। यह मोदीजी की गारंटी का ही परिणाम है कि अब बीमार पड़ने पर बुजुर्गों को भी 5 लाख तक का इलाज मिल सकेगा। मुख्यमंत्री डॉ यादव ने मक्सी रोड स्थित गली से जनसंपर्क शुरू किया और हर घर जाकर मतदाताओं से मुलाकात की। मंच लगाकर मुख्यमंत्री डॉ यादव का अनेक जगह स्वागत हुआ। इस दौरान मुख्यमंत्री ने आयुष्मान योजना के लिए गली में निवास करने वाले श्री प्रकाश पाटनी जी (उम्र 70 वर्ष), श्रीमती यशोदा बाई और श्री फूलचन्दजी का फॉर्म भरा।

राष्ट्रवादी विचारधारा का समर्थक है बोहरा समाज: मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जावरा पहुंचकर बोहरा समाज के 53वें धर्म गुरू सैयदना मुफद्दल सैफुद्दीन साहब से मुलाकात की। मुख्यमंत्री डॉ यादव ने ताल नाका स्थित मुस्तफा तेलवाला के निवास पर पहुंचकर सैयदना साहब से आशीर्वाद लिया। मुख्यमंत्री ने सैयदना साहब का मध्यप्रदेश सरकार की ओर से स्वागत करते हुए कहा कि हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी पर सैयदना साहब का बहुत आशीर्वाद है। समूचा बोहरा समाज राष्ट्रवादी विचारधारा का समर्थक है। बोहरा समाज देश भक्त होने के साथ आर्थिक रूप से समृद्ध भी है। समाज के लोगों के रोम-रोम में व्यापार-व्यवसाय के साथ भारत की जड़ों से जुड़कर देश की सेवा करने का जज्बा है। सैयदना साहब ने मुख्यमंत्री डॉ यादव, प्रदेश शासन के मंत्री श्री चैतन्य काश्यप, सांसद प्रत्याशी श्री सुधीर गुप्ता, विधायक डॉ राजेन्द्र पाण्डेय का शाल भेंट कर स्वागत किया। मुख्यमंत्री ने भाजपा के सांसद प्रत्याशी श्री सुधीर गुप्ता से भेंट करवाई। इस दौरान जिलाध्यक्ष श्री प्रदीप उपाध्याय, श्री प्रदीप चौधरी भी उपस्थित रहे।

विदिशा संसदीय क्षेत्र से प्रत्याशी पूर्व मुख्यमंत्री ने भोजपुर विधानसभा में पहुंचकर किया रोड शो

तामोट रोड से सेल्फी ब्रिज से बाइक रैली के साथ आए चौहान, पटवा संग पचौरी, सैकड़ों कांग्रेसियों ने भाजपा की सदस्यता की ग्रहण

औबेदुल्लागंज । नगर में पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का औबेदुल्लागंज में ऐतिहासिक रोड शो हुआ एवं मकान से भाजपा कार्यकर्ताओं ने फूलों की वर्षा कर बहन माता भांजियों भांजो और भाजपा कार्यकर्ताओं और व्यापारी किसानों ने पुष्प वर्षा की मस्जिद के सामने विशाल फूल माला पहनकर समर्थन का ऐलान किया गौरगंज रोड से खुले रथ में पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश पचौरी भोपाल नगर निगम के पूर्व अध्यक्ष सुरजीत सिंह चौहान साथ थे औबेदुल्लागंज के इतिहास में की रैली और रोड शो पहली बार हुई है सीताराम चौराहे पर विशाल सभा को संबोधित करते हुए शिवराज सिंह चौहान ने भांजे भांजी लाडली माता बहनों का बंधन किया अभिनंदन करते हुए कहा की कांग्रेस को अपना अमूल मत देकर बेकार मत करना क्योंकि कांग्रेस समाप्ति पर है झूठ बोलते हैं कांग्रेस में कोई प्रत्याशी ही नहीं रहना चाहता कांग्रेस के लोग भाजपा क्योंकि कांग्रेस में विकास की बात कोई नहीं करता कांग्रेस में तो भ्रष्टाचार की बात भरपूर होती है विकास और जनता की हिट का कार्य नहीं होता श्री चौहान ने कहा मेरा जीवन माता बहनों लाडली बहनों भांजे भांजी और किसानों मजदूरों के लिए समर्पित है औबेदुल्लागंज के लोगों का प्यार और आशीर्वाद मेरे साथ है आपने फूल वर्षा की है मैं इस प्यार और फूल बरसा का जवाब आपकी सेवा कर विकास करूंगा माता बहन भांजे भांजे किसने हम बालों की सेवा को तत्पर रहूंगा इस अफसर पर पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश पचौरी ने और पटवा की प्रशंसा करते हुए कहा कि देश और प्रदेश में विकास उन्नति के लिए भाजपा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी से भारत विश्व गुरु बनेगा पूर्व मंत्री और विधायक सुरेंद्र पटवा ने कहां की भोजपुर क्षेत्र में रिकॉर्ड मतों से जीतेंगे हमारे पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान जन आशीर्वाद भाजपा के साथ है इस अवसर पर धाकड़ समाज अध्यक्ष मोहन पटेल पारखेड़ी एडवोकेट

सुभाष नागर , सुरजीत सिंह बिल्ले ,कमलेश बाबूजी ,भवानी सिंह, नेताजी के साथ 40 लोगो ने कांग्रेस छोड़ भाजपा में शामिल हुए इन सब का फूल माला पहनाकर शिवराज सिंह चौहान, सुरेंद्र पटवा, सुरेश पचौरी ने स्वागत किया इस अवसर पर नरेंद्र शर्मा, तेज सिंह नागर,भूपेंद्र नंदवंशी, रामकिशोर नंदवंशी, नीरज चावला, सुरजीत सिंह चौहान, आरती यादव पुरुषोत्तम शर्मा, मनोज चौरसिया ,रवि कमल ,वागीश अग्रवाल, नंदू शर्मा ,पवनजोत सिंह आदि भाजपा कार्यकर्ता और समर्थक उपस्थित थे।

2 हैंडपंप के भरोसे दो हजार की आबादी क्षेत्र ग्राम

गुजरसानी गांव में अब तक नहीं शुरू हो पाई नल-जल योजना

मण्डला।-जिले में पीने के पानी के लिए लोग हो रहे परेशान,भीषण गर्मी पड़ने के साथ ही जलसंकट की स्थिति भी जिले में कई स्थानों पर तूल पकड़ रही है।इस समय नारायणगंज जनपत पंचायत का गुजरानी ग्राम भीषण गर्मी के कारण पेय जल संकट समस्या से जुझ रहा है। करीब दो हजार की आवादी वाला गांव मात्र दो हैंडपंप के भरोसे ही है।गर्मी के दिनों में पानी की कमी को पूरा करने के लिए ग्रामीण सूखे कुओं को साफ कर- कर के पानी पीने को मजबूर है। वहीं गांव की महिलाओं को सुवह 4 बजे से ही हैंडपंप में अपनी बारी का इंतजार करना पड़ता है। इस तरह गांव में पानी की भीषण समस्या गर्मी बढ़ने के साथ ही वढ़ गई है।जिससे दूसरो के नल कूपो से 100 रुपए प्रति माह पानी का मोल चुका पानी खरीदने के लिए ग्रामीण मजबूर हैं और दूसरे कुआं में जाना पड़ता है। निजी बोर नल कूप से पानी खरीद कर ग्रामीणों ने पानी की व्यवस्था गांव तक वनानी चाही हे, परन्तु गांव में जनप्रतिनिधियों और शासन-प्रशासन द्वारा सिर्फ चुनाव के कुछ समय तक टैंकर से पानी की व्यवस्था बनाई गई, चुनाव खत्म होने के बाद पानी के टैंकरों का कोई पता नहीं हे।

गांव के सभी हैंडपंप प्रति वर्ष गर्मी में दम तोड़ती हैं

ग्रामीणों के अनुसार यह समस्या हर साल अप्रैल मई में बढ़ जाती है।गांव में वैसे तो 7 हैंडपंप है,लेकिन ये गर्मी आते ही दम तोड़ देते हैं और मुस्किल से गांव में दो हैंडपंप ही चालू रह जाते हैं, जिससे पानी निकलता है।लेकिन इसमें भी सुवह के समय भीड़ एवं कतार लग जाती है।ग्रामीणों ने बताया कि गांव की दो हजार की अबादी इस समय मात्र दो हेड पंप के भरोसे रहता है।गर्मियों के दिनों में औसतन प्रति परिवार जल की उपलब्धता कम से कम 40 लीटर की होती है।पेय जल की कमी को पूरा करने के लिए लोग गुजरसानी के लोग निजी नल कूपो से पानी खरीदने को मजबूर हे और शासकीय हेंडपंप से महिलाओं को भी सिर में वर्तन रखकर पानी भरना पड़ता है ग्रामीणों ने बताया कि गुजरसानी ग्राम में शासकीय वोर खनन किए गए हैं जिसमें सफल हुए लेकिन लोगो को पानी के लिए मजबूर बनाने के लिए बोर पर पत्थर भर कर उसे असफल कर दिया गया।ग्रामीणों का आरोप है कि चुनाव के समय उन्हें जनप्रतिनिधियों के बड़े-बडे वादे मिलते है,कहा जाता है कि हमें चुनाव में वोट दीजिए हम यहां की समस्या हल करेंगे,लेकिन चुनाव के बाद कोई जनप्रतिनिधी उनकी सुध लेने नही आता हे।चुनाव के बाद सभी नेता मटेरियल सप्लायर,ठेकेदारी करने में व्यस्त हो जाते है,जिन नेताओ को यहां की जनता चुनती है,वो जनता की सुध तक लेने नहीं आती है सभी मुर्गा-पार्टी करने में व्यस्त हो जाते हे।

इनका कहना है

पानी की समस्या को लेकर प्रशासन और नेताओं की आंख खोलने के लिए ग्रामीणों द्वारा कई निवेदन दिए हे,परन्तु आज तक कोई नतीजा नहीं निकला।

किरण उईके, ग्रामीण।

शासन द्वारा जल जीवन मिशन के तहत घर-घर नल-जल योजना के माध्यम से पानी पहुंचाने की बात कही जा रही है, परन्तु गुजरसानी गांव मे कागजों में ही जलजीवन मिशन योजना चल रहीं है।यह योजना गांव में कब आएगी ग्रामीण भी अंजान हैं।गांव को जल्द ही पानी की समस्या से निजात मिले।

दुर्गेश सिंगरोरे (समाज सेवक)

कलेक्टर ने नालों की सफाई का लिया जायजा

दमोह के अलावा तेन्दूखेड़ा और पटेरा में भी सफाई अभियान शुरू

दमोह। नगर को साफ-स्वच्छ और सुंदर रखने के लिये लगातार सफाई अभियान चलाया जा रहा है, बरसात के मौसम में पानी का भराव न हो इस दृष्टि से नाले-नालियों की सफाई की जा रही है, इसी के मद्देनजर आज कलेक्टर सुधीर कुमार कोचर ने नगर के कीर्ति स्तंभ से रेल्वे स्टेशन तक एवं केन्द्रीय विद्यालय के सामने वाले नाले की सफाई का जायजा लिया और मुख्य नगर पालिका अधिकारी सुषमा धाकड़ को आवश्यक दिशा निर्देश दिये। उन्होंने कहा अच्छा कार्य करने वाले नगर पालिका कर्मचारियों को सम्मानित किया जायेगा।

इस अवसर पर कलेक्टर सुधीर कुमार कोचर ने कहा सफाई अभियान को दमोह से शुरू किया था, अब सभी नगरीय निकायं मे शुरू किया जा रहा है, 5 मई तक सभी नगर परिषदें और नगर पालिकाएं अपने सारे स्थान चिन्हांकित कर उन चिन्हांकित स्थानों पर प्रतिदिन 8 बजे के पहले सफाई सुनिश्चित करेंगे। इसी श्रृंखला में तेंदूखेड़ा में भी ऐसे स्थान चिन्हित करके सफाई प्रारंभ कर दी है। आज नालियों की सफाई का दूसरा दिन है, दमोह नगर पालिका में नालियों की सफाई पूरे जोर-शोर से चल रही है। पटेरा में भी नालियों की सफाई आज से प्रारंभ हो गई है।

कलेक्टर श्री कोचर ने कहा नगर पालिका के सफाई कर्मी मित्र पूरी ताकत के साथ पूरी मेहनत के साथ दिन-रात लग करके नालियों की सफाई कर रहे हैं, अब यदि इसमें फिर से कचरा चला जाता है, तो ऐसी स्थिति में नागरिकों को बहुत दिक्कत आने वाली है। उन्होंने कहा चाहे वह दुकानदार हो, चाहे आवासीय क्षेत्र में रहने वाले लोग हो, कॉलोनी में रहने वाले लोग हो सभी से आग्रह है नालियों में कचरा बिल्कुल भी ना डालें, कचरे को डस्टबिन में डालिए। यदि नालियों में कचरे को डालेंगे तो यह नालियां फिर से वैसे ही भर जाएंगे जैसे कि पहले भरी हुई थी। कलेक्टर श्री कोचर ने नागरिको से कहा इसमें प्रशासन का सहयोग करिये और नाली में बिल्कुल भी कचरा ना डालें, ताकि हम आगे आने वाली वर्षा ऋतु में जल भराव की स्थिति को नियंत्रित कर सकें और सड़कों पर बिल्कुल भी पानी न भरे।

अरोरा परिवार की अनोखी पहल

शादी की वर्षगांठ पर रखवाई प्यासे पशुओं के लिए पानी की टंकी

गंज बासौदा। पंचतत्व संरक्षण समिति गर्मी के मौसम में प्यासे पशुओं को टंकी और प्यासे पक्षियों के दाना पानी के लिए जल पात्र का वितरण करती है. समिति के इसी पुण्य कार्य से प्रेरित होकर पंचतत्व के सदस्य गौरव अरोरा कला मंदिर वालों ने अनोखी पहल की.बालकृष्ण अरोरा के सुपुत्र मनीष अरोरा और श्रीमती सीमा अरोरा की शादी की 21वी सालगिरह पर वार्ड 17 , गोविंदपुरा मोहल्ला में प्यासे पशुओं को 2 टंकी रखवाकर वर्षगांठ मनाई . मनीष अरोरा पंचतत्व के सदस्य भी बने और पर्यावरण के हित मे काम करने का संकल्प भी लिया, इस अवसर नगर पालिका के पूर्व उपाध्यक्ष राजेश अरोरा ने कहा कि भीषण गर्मी में जगह जगह प्यासे पशु पानी के लिए घूमते रहते हैं .हम सभी को अन्य उत्सवों की जगह पानी की टंकी और सकोरे रखवाकर पंचतत्व का सहयोग अवश्य करना चाहिए पंचतत्व ने हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी जगह जगह सभी के सहयोग से प्यासे पशुओं के लिए टंकी रखने को संकल्प लिया है जिसमें से एसजीएस कॉलेज के पास, रजोदा कोर्ट के पास, गोकुलधाम, राजेंद्र नगर बीटी आई के पास, विद्युत मंडल के पास स्पंदन अकादमी के पास, गोविंद पुरा आदि अनेक स्थानों पर टंकी रखी जा चुकी है . इस शुभ अवसर पर पंचतत्व के अध्यक्ष सुरेंद्र सिंह दांगी प्रमोद सिंह राजपूत बालकृष्ण अरोरा श्रीमती रानी अरोरा, स्वीटी अरोरा दीपा अरोरा, सीमा अरोरा, राधा अरोरा राजकुमार अरोरा गौरव अरोरा हर्षित अरोरा, अवधेश तिवारी, सुरेंद्र दांगी, आयुष अरोरा, कार्तिक अरोरा उपस्थित थे

प्रारूप C–1

(अभ्यर्थी के द्वारा पत्रों दूरदर्शन में प्रकाशित करने हेतु)

अपराधिक प्रकरणों के संबंध में घोषणा

(2011 की रिट याचिका (सिविल) नंबर में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के 25 सितम्बर 2018 के निर्णय के अनुसार (पब्लिक इंटरेस्ट और ऑर्स बनाम भारत संघ एवं एएनआर)

अभ्यर्थी का नाम और पता ..*अरूण कुमार श्रीवास्तव*.....पता *म.नं. 167, ग्राम–झागरियाखुर्द, तहसील–हुजूर, जिला भोपाल म.प्र.462044*

राजनीतिक दल का नाम .....*इंडियन नेशनल कांग्रेस*....

निर्वाचन का नाम .....*लोकसभा निर्वाचन वर्ष 2024*.....

मैं ..... *अरूण कुमार श्रीवास्तव* .... (अभ्यर्थी का नाम) उपर्युक्त निर्वाचन के लिए अभ्यर्थी सार्वजनिक जानकारी के लिए अपने आपराधिक पूर्ववृत्त के संबंध में निम्नलिखित विवरण घोषित करता हूँ।

(A) लंबित आपराधिक प्रकरण

क.सं.	न्यायालय का नाम	प्रकरण संख्या एवं तारीख	प्रकरण की स्थिति	संबंधित अधिनियमों की धाराओं और अपराध (अपराधों) का संक्षिप्त विवरण
1	*न्यायालय श्रीमान् न्यायिक दण्डाधिकारी प्रथम श्रेणी जिला भोपाल (श्री तथागत यागनिक)*	*एससी पीपीएम 183/2021 आगामी दिनांक 26.04.2024*	*लंबित (आरोप तय नहीं)*	*धारा 341 भा.द.वि. किसी व्यक्ति का सदोष अवरोध करना (संज्ञेय, जमानतीय एवं मजिस्ट्रेट न्यायालय में विचारणीय)* *धारा 188 भा.द.वि.–लोक सेवक द्वारा विधिपूर्वक प्रख्यापित ओदश की अवज्ञा, यदि ऐसी अवज्ञा विधिपूर्वक नियोजित व्यक्तियों को बाधा, क्षोभ या क्षति कारित करें (संज्ञेय, अजमानतीय एवं मजिस्ट्रेट न्यायालय में विचारणीय)*

एचडीएफसी बैंक के पेजैप ऐप को सेलेंट मॉडल बैंक का पुरस्कार मिला

मुंबई, एजेंसी। एचडीएफसी बैंक के मोबाइल ऐप पेज़ैप को सेलेंट मॉडल बैंक अवार्ड मिला है। एचडीएफसी बैंक के पेज़ैप को यह अवार्ड्स पेमेंट इनोवेशन की श्रेणियों में सेलेंट मॉडल बैंक पुरस्कार समारोह में प्रदान किए गए।सेलेंट का वार्षिक मॉडल बैंक पुरस्कार बैंकिंग में प्रौद्योगिकी के उपयोग में सर्वोत्तम प्रथाओं का जश्न मनाता है और उन्हें स्वीकार करता है। पेज़ैप दुनिया भर के 36 देशों के 140+ नामांकनों में से चुने गए 19 विजेताओं में से एक है। इस अत्यधिक प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए निर्णायक मानदंडों में स्पष्ट व्यावसायिक लाभ, उद्योग के सापेक्ष नवाचार का स्तर और प्रौद्योगिकी उत्कृष्टता शामिल हैं।पेज़ैप को ज़ेटा और एचडीएफसी बैंक द्वारा संयुक्त रूप से विकसित किया गया है, जो ज़ेटा के अगली पीढ़ी के प्रोसेसिंग प्लेटफॉर्म, ज़ेटा टैचियन और इसकी विशेष इंजीनियरिंग पेशकश, ज़ेटा स्टूडियोज़ का लाभ उठा रहा है। मार्च 2023 में लॉन्च होने के बाद से पेज़ैप ने तेजी से 6+ मिलियन ग्राहक हासिल कर लिए हैं और लगभग आधे मिलियन ग्राहकों ने इसे आईओएस पर 4.8 और एंड्रॉइड पर 4.3 की रेटिंग दी है, जिससे यह फाइनेंस सेक्शन में भारतीय ऐप स्टोर्स पर टॉप रेटेड ऐप बन गया है।

न्युवोको विस्टास ने वित्त वर्ष 24 में कर उपरांत 147 करोड़ का लाभ कमाया

मुंबई, एजेंसी। न्युवोको विस्टास कॉर्प लिमिटेड, भारत की अग्रणी निर्माण सामग्री निर्माता कंपनी ने 31 मार्च, 2024 को समाप्त वित्तवर्ष 24 में बिक्री और लाभ में बढ़ोतरी की घोषणा की है। कंपनी ने समाप्त वित्तवर्ष 24 के लिए अपने ऑडिटेड वित्तीय परिणामों की घोषणा की। 25 एमएमटीपीए की संयुक्त स्थापित क्षमता के साथ, न्युवोको विस्टास कॉर्पोरेशन लिमिटेड, भारत में पांचवां सबसे बड़ा सीमेंट समूह है और पूर्वी भारत में प्रमुख सीमेंट निर्माता कंपनियों में से एक है। वित्तवर्ष 24 में कंपनी की कंसोलिडेटेड सीमेंट बिक्री की मात्रा 18.8 एमएमटी थी। कंपनी संचालन से कंसोलिडेटेड आय इसी अवधि के दौरान 10,733 करोड़ रुपये दर्ज की गई। सालाना आधार पर कंपनी का कंसोलिडेटेड एबिटिडा 35 प्रतिशत बढ़कर 1,657 करोड़ रुपये रहा। इसके अलावा, कंपनी ने शुद्ध ऋण 384 करोड़ रुपये कम करने में भी सफलता हासिल की है। बीते साल के मुकाबले कंपनी ने अपने शुद्ध ऋण में 384 करोड़ रुपये की कमी कर उसे 4,030 करोड़ रुपये पर लाने में सफलता हासिल की है, जिसके परिणामस्वरूप नेट डेट/एबिटिडा 2.4 गुणा रह गया है।इस वर्ष हरियाणा सीमेंट प्लांट में 1.2 एमएमटीपीए ग्राइंडिंग यूनिट की सफल शुरूआत हुई, जो कंपनी के क्षमता विस्तार में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। इस नए यूनिट के चालू होने से कंपनी की कुल क्षमता में उत्तर की हिस्सेदारी को 20 प्रतिशत से बढ़ाकर 24 प्रतिशत कर दिया है और इस क्षेत्र में हमारी मौजूदगी को और मजबूत किया जाएगा।

एयरबीएनबी ने लॉन्च किया आइकॉन्स

मुंबई, एजेंसी। एयरबीएनबी लोगों के लिए नए तरह का अनुभव आइकॉन्स पेश कर रहा है इसके तहत दुनिया के मशहूर संगीतकार, फिल्म व टेलीविजन कलाकार और खिलाड़ी आदि मेहमानों का अलग अंदाज में स्वागत करेंगे। आइकॉन्स आपको एक ऐसी दुनिया में ले जाएंगे, जिसके बारे में अबतक आप केवल सोचा करते थे। आप चाहें फेरारी संग्रहालय में सोएं या प्रिंस के पर्पल रेन हाउस में रहें या फिर बॉलीवुड आइकॉन जाह्नवी कपूर के समुद्र तट के समीप वाले घर में एक दिन बिताएं। आज, हम पूरे साल दुनिया भर में शानदार अनुभवों के साथ, एयरबीएनबी पर पहले 11 आइकॉन्स को पेश कर रहे हैं। एयरबीएनबी के भारत, दक्षिण पूर्व एशिया, हांगकांग और ताइवान के जनरल मैनेजर अमनप्रीत बजाज ने कहा आइकॉन्स' ऐसे अनुभवों को जीवंत करते हैं जो जादुई और वास्तव में कल्पना से परे होते हैं आइकॉन्स लॉन्च के हिस्से के रूप में हम इस विशेष अभियान के लिए जाह्नवी कपूर के साथ साझेदारी करके रोमांचित हैं, जो जाह्नवी के समुद्र तट के समीप वाले घर की एक अभूतपूर्व झलक पेश करेगा। जाह्नवी कपूर ने इस मौके पर कहा मेरे सबसे प्यारी यादें चेन्नई स्थित हमारे घर में परिवार के साथ बिताई गर्मियों की हैं। यह जगह हमेशा एक आरामदायक जगह की तरह महसूस होती है, और मैं इस खास एहसास को अपने प्रशंसकों के साथ साझा करना चाहती हूं, यही वजह है कि मैं पहली बार एयरबीएनबी के जरिए अपने घर के दरवाजे खोल रही हूं। मुझे अपने परिवार की परंपराओं को एयरबीएनबी मेहमानों के साथ साझा करने में खुशी हो रही है, जिन्हें कपूर परिवार की तरह आराम करने, पूल के पास जाने, हमारे कुछ पसंदीदा भोजन का आनंद लेने, योग का अभ्यास करने, मेरी मां के प्राकृतिक त्वचा देखभाल नुस्खों को आज़माने का मौका मिलेगा

नंद घर आंदोलन से जुड़े मनोज बाजपेयी

मुंबई, एजेंसी। देश भर में 14 लाख आंगनवाड़ियों में आमूल बदलाव लाने से उद्देश्य से नंद घर ने अभिनेता मनोज बाजपेयी के साथ एक राष्ट्रीय आंदोलन ङ्क अगर बचपन से पूछ खाना खाया, तो देश का कल बनाया- का अनावरण किया। नंद घर के इस आंदोलन का उद्देश्य है, समग्र स्वास्थ्य देखभाल, गुणवत्तापूर्ण पोषण और बच्चों के लिए सर्वोत्तम प्री-स्कूल शिक्षा सुनिश्चित कर भारत की भावी पीढ़ी का पोषण करना। मनोज बाजपेयी का इस आंदोलन में शामिल होने के लिए स्वागत करते हुए, वेदांता के अध्यक्ष, श्री अनिल अग्रवाल ने कहा, प्रोजेक्ट नंद घर एक राष्ट्रीय आंदोलन है, जो स्वास्थ्य और पोषण पर ध्यान देने के साथ बच्चों और महिलाओं के समग्र कल्याण का समर्थन करता है। हमें खुशी है कि मनोज बाजपेयी जी ने इस विस्तृत होते आंदोलन को अपना समर्थन दिया है। उनकी निजी जीवन की कहानी हमारी भावी पीढ़ियों के जीवन को पोषित करने और बदलने के नंद घर के उद्देश्य से गहराई से मेल खाती है। आज इस दिल छू लेने वाले अभियान के लॉन्च में, मनोज बाजपेयी को एक युवा थिएटर अभिनेता के रूप में अपनी व्यक्तिगत यात्रा के बारे में बताते हुए देखा गया और उन्होंने अभिनय के सपने को पूरा करने के दौरान अपने लिए नियमित पौष्टिक भोजन सुनिश्चित करने में दोस्तों के अमूल्य योगदान को रेखांकित किया।

एसके फाइनेंस लिमिटेड ने आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के लिए सेबी के समक्ष दाखिल किया डीआरएचपी

मुंबई, एजेंसी। वर्ष 1994 में स्थापित एसके फाइनेंस लिमिटेड ('कंपनी') वाहन फाइनेंसिंग सेगमेंट और एमएसएमई फाइनेंसिंग सेगमेंट में अपनी समकक्ष कंपनियों के मुकाबले सबसे तेजी से बढ़ने वाली कंपनी है, जिसका विश्लेषण वित्तीय वर्ष 2021 और वित्तीय वर्ष 2023 के बीच की अवधि के लिए संबंधित सेगमेंट में प्रबंधन के तहत परिसंपत्तियों ('एयूएम') सीएजीआर के आधार पर किया गया है (स्रोत- क्रिसिल रिपोर्ट)। कंपनी ने आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के लिए सेबी के पास ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) दाखिल किया है। कंपनी की योजना 2,200 करोड़ तक के इक्विटी शेयरों (प्रत्येक का अंकित मूल्य 1 रुपये) के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम के जरिए धन जुटाने की है। कंपनी के प्रमोटर राजेंद्र कुमार सेतिया, यश सेतिया और राजेंद्र कुमार सेतिया एचयूएफ हैं। आरंभिक सार्वजनिक निर्गम में 1 रुपये प्रत्येक इक्विटी शेयर के अंकित मूल्य के साथ 500 करोड़ रुपये तक के इक्विटी शेयरों का नया निर्गम और विक्रेता शेयरधारक की ओर से 1700 करोड़ रुपये तक के शेयरों का 'ऑफर फॉर सेल' (ओएफएस) शामिल है। बिक्री के लिए प्रस्ताव में राजेंद्र कुमार सेतिया द्वारा 180 करोड़ रुपये तक के इक्विटी शेयर, राजेंद्र कुमार सेतिया एचयूएफ (प्रमोटर सेलिंग शेयरहोल्डर) द्वारा 20 करोड़ रुपये तक, इवॉल्वेंस कोइन्वेस्ट फर्स्ट द्वारा 75 करोड़ रुपये तक, इवॉल्वेंस इंडिया फंड थ्री लिमिटेड द्वारा 25 करोड़ रुपये तक, नॉरवेस्ट वेंचर पार्टनर्स एक्स - मॉरीशस द्वारा 700 करोड़ रुपये तक और टीपीजी ग्रोथ फोर्थ एसएफ पीटीई लिमिटेड द्वारा 700 करोड़ रुपये तक के इक्विटी शेयर शामिल हैं ('निवेशक विक्रय शेयरधारक')।

विशिष्ट हस्तियों का मार्गदर्शन युवाओं की सहभागिता से 2047 के पहले ही भारत बनेगा विकसित राष्ट्रः वोहरा

बीएमए के शेपिंग यंग माइंड्स कार्यक्रम में 800 से अधिक स्टूडेंटस को मिला देश की विशिष्ट हस्तियों का मार्गदर्शन युवाओं की सहभागिता से 2047 के पहले ही भारत बनेगा विकसित राष्ट्र- वोहरा भोपाल। भारत युवाओं का देश है और युवाशक्ति ही हमारी ताकत है। इन युवा पेशेवरों की सहभागिता से ही साल 2047 से पहले ही भारत विकसित राष्ट्र बन जाएगा। लेकिन इसके लिए युवाओं को आगे बढ़कर राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभानी होगी। ये बात गुरुवार को लेसोथो, दक्षिण सूडान और लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय विकास परिषद में प्रधानमंत्री के राजदूत और विशेष सलाहकार के रूप में कार्यरत डॉ. दीपक बोहरा ने कही। डॉ. बोहरा ने भोपाल मैनेजमेंट एसोसिएशन (बीएमए) द्वारा एलएनसीटी सभागार में आयोजित शेपिंग यंग माइंड्स कार्यक्रम को संबोधित किया। इस कार्यक्रम में विभिन्न कॉलेजों के करीब 800 से अधिक स्टूडेंट उपस्थित रहे। इस दौरान प्रबंधन और इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों को डॉ. वोहरा ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में बताया कि किस प्रकार पेशेवर युवा राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सकते हैं। भारत कर रहा दुनिया के 150 देशों की सहायता डॉ. वोहरा ने कहा कि अपना पेट काटकर दूसरों की सहायता करना भारत की परंपरा रही है। यही कारण है कि हम आज भी दुनिया के 150 देशों की सहायता कर रहे हैं। भारत दुनिया की तीसरी बड़ी सैन्य शक्ति है। आज हमारे पास स्वयं की बनाई अग्नि प्राइम जैसी मिसाइल है। सबसे बड़े गर्व की बात ये है कि इस स्वदेशी मिसाइल को हमारी भारत की ही एक बेटी ने बनाया है। उन्होंने कहा आज हम जिस तरह तेजी से विकास कर रहे हैं, उससे लगता है कि हम 2047 के पहले ही विकसित राष्ट्र बन जाएंगे। डॉ वोहरा ने बताया कि आज देशभर की 140 कंपनियां स्पेस कार्यक्रम में हिस्सा ले रही हैं। हर सेकंड में 5 हजार डिजिटल ट्रांजेक्शन हो रहे हैं। देश के 1400 कॉलेज एआई का प्रशिक्षण दे रहे हैं। प्रतिदिन 28 किलोमीटर हाईवे का निर्माण, एक साल में 8 एयरपोर्ट का निर्माण और हर साल 02 मेट्रो का निर्माण हमारे विकास की गति का प्रमाण है। लीक से हटकर सोचें- रिचर्ड सुबह सरस्वती वंदना के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। पहले सत्र में उद्यमी बोर्ड के सदस्य और पूर्व सीईओ रिचर्ड रेखी ने युवाओं को संबोधित किया। आरंभिक सत्र का संचालन डॉ निष्ठा त्यागी और डॉ प्रशांत गंगराडे ने किया। आभार प्रदर्शन राजीव अग्रवाल ने किया। रेखी ने कहा कि सफलता का सबसे बड़ा मंत्र है लीक से हटकर सोचना। आपके मन में नवोन्वेषी विचार आना चाहिए और इसी आधार पर जीवन में निवेश करें। सफलता के लिए असफलता का जश्न मनाना जरूरी है। सफलता के लिए देखें सपने- मणि इसके बाद दूसरे सत्र में कोच फैक्ट्री के पूर्व महाप्रबंधक सुधांशु मणि ने वंदे भारत प्रोजेक्ट के अनुभव साझा कर लीडरशीप और टीम वर्क को लेकर मार्गदर्शन दिया। सफलता के लिए छात्रों से सपने देखने की अपील की और कहा कि अधिक संभावनाओं का सपना देखें, शुरुआतकर्ता बनें, अपने संगठन और काम से प्यार करें। यदि उत्साह के साथ बदलावों को अपनाएंगे तो आप ऊंचाइयों को छू सकेंगे। आत्मविश्वास और मेहनत सफलता के मंत्र- डॉ. शिखा दोपहर के सत्र में न्यूट्रवेल हेल्थ इंडिया लिमिटेड की संस्थापक डॉ. शिखा नेहरू शर्मा ने कहा कि सफल होने में समस्याएं भी आपकी मददगार बनती हैं। समस्याओं से निपटने के लिए आत्मविश्वास और मेहनत दो ऐसे मंत्र हैं, जो समस्याओं को सफलता में बदल देते हैं। इस दौरान उन्होंने अपने अनुभव साझा करते हुए छात्रों को सफलता के टिप्स दिए। उन्होंने बताया कि कैसे उन्होंने कॉलेज में अपने साथ हुई रैगिंग के खिलाफ आवाज उठाई और उन छात्रों को भी प्रोत्साहित किया जो अंतर्मुखी हैं। कार्यक्रम के दौरान विशेषज्ञों के साथ पैनल डिस्कशन भी हुआ। इस दौरान विशेषज्ञों ने उपस्थितजनों से सवाल-जवाब के माध्यम से संवाद भी किया। शाम को आभार प्रदर्शन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

बीएमए के शेपिंग यंग माइंड्स कार्यक्रम में 800 से अधिक स्टूडेंट्स को मिला देश की विशिष्ट हस्तियों का मार्गदर्शन युवाओं की सहभागिता से 2047 के पहले ही भारत बनेगा विकसित राष्ट्र- वोहरा भोपाल। भारत युवाओं का देश है और युवाशक्ति ही हमारी ताकत है। इन युवा पेशेवरों की सहभागिता से ही साल 2047 से पहले ही भारत विकसित राष्ट्र बन जाएगा। लेकिन इसके लिए युवाओं को आगे बढ़कर राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभानी होगी। ये बात गुरुवार को लेसोथो, दक्षिण सूडान और लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय विकास परिषद में प्रधानमंत्री के राजदूत और विशेष सलाहकार के रूप में कार्यरत डॉ. दीपक बोहरा ने कही। डॉ. बोहरा ने भोपाल मैनेजमेंट एसोसिएशन (बीएमए) द्वारा एलएनसीटी सभागार में आयोजित शेपिंग यंग माइंड्स कार्यक्रम को संबोधित किया। इस कार्यक्रम में विभिन्न कॉलेजों के करीब 800 से अधिक स्टूडेंट उपस्थित रहे। इस दौरान प्रबंधन और इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों को डॉ. वोहरा ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में बताया कि किस प्रकार पेशेवर युवा राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सकते हैं। भारत कर रहा दुनिया के 150 देशों की सहायता डॉ. वोहरा ने कहा कि अपना पेट काटकर दूसरों की सहायता करना भारत की परंपरा रही है। यही कारण है कि हम आज भी दुनिया के 150 देशों की सहायता कर रहे हैं। भारत दुनिया की तीसरी बड़ी सैन्य शक्ति है। आज हमारे पास स्वयं की बनाई अग्नि प्राइम जैसी मिसाइल है। सबसे बड़े गर्व की बात ये है कि इस स्वदेशी मिसाइल को हमारी भारत की ही एक बेटी ने बनाया है। उन्होंने कहा आज हम जिस तरह तेजी से विकास कर रहे हैं, उससे लगता है कि हम 2047 के पहले ही विकसित राष्ट्र बन जाएंगे। डॉ वोहरा ने बताया कि आज देशभर की 140 कंपनियां स्पेस कार्यक्रम में हिस्सा ले रही हैं। हर सेकंड में 5 हजार डिजिटल ट्रांजेक्शन हो रहे हैं। देश के 1400 कॉलेज एआई का प्रशिक्षण दे रहे हैं। प्रतिदिन 28 किलोमीटर हाईवे का निर्माण, एक साल में 8 एयरपोर्ट का निर्माण और हर साल 02 मेट्रो का निर्माण हमारे विकास की गति का प्रमाण है। लीक से हटकर सोचें- रिचर्ड सुबह सरस्वती वंदना के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। पहले सत्र में उद्यमी बोर्ड के सदस्य और पूर्व सीईओ रिचर्ड रेखी ने युवाओं को संबोधित किया। आरंभिक सत्र का संचालन डॉ निष्ठा त्यागी और डॉ प्रशांत गंगराडे ने किया। आभार प्रदर्शन राजीव अग्रवाल ने किया। रेखी ने कहा कि सफलता का सबसे बड़ा मंत्र है लीक से हटकर सोचना। आपके मन में नवोन्वेषी विचार आना चाहिए और इसी आधार पर जीवन में निवेश करें। सफलता के लिए असफलता का जश्न मनाना जरूरी है। सफलता के लिए देखें सपने- मणि इसके बाद दूसरे सत्र में कोच फैक्ट्री के पूर्व महाप्रबंधक सुधांशु मणि ने वंदे भारत प्रोजेक्ट के अनुभव साझा कर लीडरशीप और टीम वर्क को लेकर मार्गदर्शन दिया। सफलता के लिए छात्रों से सपने देखने की अपील की और कहा कि अधिक संभावनाओं का सपना देखें, शुरुआतकर्ता बनें, अपने संगठन और काम से प्यार करें। यदि उत्साह के साथ बदलावों को अपनाएंगे तो आप ऊंचाइयों को छू सकेंगे। आत्मविश्वास और मेहनत सफलता के मंत्र- डॉ. शिखा दोपहर के सत्र में न्यूट्रवेल हेल्थ इंडिया लिमिटेड की संस्थापक डॉ. शिखा नेहरू शर्मा ने कहा कि सफल होने में समस्याएं भी आपकी मददगार बनती हैं। समस्याओं से निपटने के लिए आत्मविश्वास और मेहनत दो ऐसे मंत्र हैं, जो समस्याओं को सफलता में बदल देते हैं। इस दौरान उन्होंने अपने अनुभव साझा करते हुए छात्रों को सफलता के टिप्स दिए। उन्होंने बताया कि कैसे उन्होंने कॉलेज में अपने साथ हुई रैगिंग के खिलाफ आवाज उठाई और उन छात्रों को भी प्रोत्साहित किया जो अंतर्मुखी हैं। कार्यक्रम के दौरान विशेषज्ञों के साथ पैनल डिस्कशन भी हुआ। इस दौरान विशेषज्ञों ने उपस्थितजनों से सवाल-जवाब के माध्यम से संवाद भी किया। शाम को आभार प्रदर्शन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

स्लोन इंफोसिस्टम्स लिमिटेड का आईपीओ 3 मई 2024 को खुलेगा

मुंबई, एजेंसी। स्लोन इंफोसिस्टम्स लिमिटेड आईटी हार्डवेयर उपकरणों और सॉल्यूशंस की एक प्रमुख प्रदाता, कंपनी ने 3 मई 2024 को इनिशियल पब्लिक आफरिंग (आईपीओ) के साथ पब्लिक में जाने की अपनी योजना की घोषणा की है. कंपनी का इरादा इस आईपीओ के मार्फत 79 प्रति शेयर मूल्य पर 11.06 करोड एकत्र करना है. कंपनी के शेयर्स सेट एनएसई इमर्ज प्लेटफार्म पर लिस्ट होंगे.

आईपीओ से प्राप्त होने वाली शुद्ध धनराशि का उपयोग उसके रेंटल बिजनेस के लिए लैपटॉप्स, डेस्कटॉप्स, एसएसडी और अन्य उपकरण जैसे आईटी उपकरणों की खरीदी के पूंजी खर्च का वित्त पोषण करने,कंपनी द्वारा लिए गए कुछ कर्ज का रीपेमेंट करने और आम कॉरपोरेट खर्चो को पूरा करने के लिए किया जाएगा. इश्यू 3 मई, 2024 को खुलेगा और 7 मई, 2024 को बंद होगा. इश्यू की लीड मैनेजर जावा कैपिटल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड के पास अनेक वर्षों का अनुभव होने के साथ उद्योग की एक्सपर्टीज का व्यापक रेंज है. उनका अनुभव ज्ञान और व्यापक पृष्ठभूमि इश्यू की जटिलताओं का समाधान करने में निपुण मार्गदर्शक के रूप में उन्हें स्थापित करती है. इश्यू की रजिस्ट्रार कैफिन टेक्नोलॉजिस लिमिटेड है.

स्लोन इंफोसिस्टम्स लिमिटेड के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर, श्री राजेश खन्ना ने कहा, हमारे वर्षो के व्यापक अनुभव और विभिन्न पोर्टफोलियो के साथ हमने हमारे ग्राहकों के साथ मजबूत संबंध बनाया है. इस आईपीओ की धनराशि से ना सिर्फ हमारी प्रोडक्ट आफरिंग बढ़ेगी और समृद्ध होगी बल्कि ग्राहक आधार में भी इजाफा होगा. हम इस सुअवसर के बारे में रोमांचित है और हमारी कंपनी को नई ऊंचाइयों पर ले जाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं. जावा कैपिटल सर्विसेस प्राइवेट लिमिटेड के डायरेक्टर, सीए श्री अनूप कुमार गुप्ता ने कहा, उनका ग्राहक केंद्रित सेवा अप्रोच और विभिन्न पोर्टफोलियो उन्हें उभरते अवसरों को सीज़ करने के लिए बेहतर स्थिति में लाता है. हम स्लोन इंफोसिस्टम्स लिमिटेड को हमारी हार्दिक बधाई देते हैं क्योंकि वह इस रोमांचक यात्रा पर हैं. वर्षो के व्यापक अनुभव और आशाजनक आउटलुक के साथ हमें उनके आईपीओ की सफलता का विश्वास है और हम उनकी यात्रा का हिस्सा बनकर सम्मानित है. एकत्र किया जाने वाला फंड निसंदेह रूप से उन्हें उद्योग के अंदर शोहरत दिलाने के लिए तैयार करेगा.

एक्सिस म्यूचुअल फंड ने लॉन्च किया 'एक्सिस निफ्टी बैंक इंडेक्स फंड'

मुंबई, एजेंसी। भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में नजर आने वाली गतिशील वृद्धि का लाभ उठाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए एक्सिस म्यूचुअल फंड ने एक न्यू फंड ऑफर (एनएफओ)- 'एक्सिस निफ्टी बैंक इंडेक्स फंड' की घोषणा की है। निफ्टी बैंक टीआरआई को ट्रैक करने वाला यह फंड एक ओपन-एंडेड इंडेक्स फंड है। इस फंड का उद्देश्य निफ्टी बैंक टीआरआई को ट्रैक करना है, जिससे निवेशकों को अग्रणी भारतीय बैंकों की विकास यात्रा में सीधे भाग लेने के लिए एक मैकेनिज्म प्रदान किया जा सके।

एक्सिस एएमसी के एमडी और सीईओ बी. गोपकुमार ने इस बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए कहा, ''हमारे देश की आर्थिक प्रगति के पीछे अनेक कारण सक्रिय हैं और अगर प्रभावी ढंग से प्रगति की इस रफ्तार को समझा जाए, तो हमारी विकास कहानी में देश को एक प्रमुख वैश्विक आर्थिक शक्ति बनने की दिशा में आगे बढ़ाने की क्षमता है। इस पृष्ठभूमि में ही देश का बैंकिंग क्षेत्र विकास और लचीलापन प्रदर्शित करना जारी रखता है। एक मजबूत नियामक ढांचे और डिजिटल बैंकिंग को तेजी से अपनाने से प्रेरित होकर, यह क्षेत्र निरंतर विस्तार के लिए अच्छी स्थिति में है। एक्सिस निफ्टी बैंक इंडेक्स फंड निवेशकों को इस विकास अवसर का लाभ उठाने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है। इनोवेशन पर ज़ोर देने और उच्चतम शासन मानकों का पालन करने से भी बैंकिंग सेक्टर को बहुत फायदा मिलता है, जिससे भारत के बैंकिंग परिदृश्य को एक नई पहचान देने वाले परिवर्तनकारी रुझानों का हम लाभ उठा सकते हैं।''

श्री कार्तिक कुमार और श्री आशीष नाइक द्वारा प्रबंधित, इस फंड का उद्देश्य ट्रैकिंग त्रुटियों के अधीन, निफ्टी बैंक टीआरआई के कुल रिटर्न के अनुरूप व्यय से पहले रिटर्न प्रदान करना है। हालाँकि, इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि योजना का निवेश उद्देश्य प्राप्त होगा।

इस इंडेक्स में भारत के कुछ सबसे बड़े और सबसे अधिक लिक्विड बैंकिंग स्टॉक शामिल हैं, जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के एक महत्वपूर्ण सेगमेंट का प्रतिनिधित्व करते हैं।

वेदांता की भारत में 4 साल में 20 अरब डॉलर निवेश करने की योजना, बोले अनिल अग्रवाल

नई दिल्ली, एजेंसी। वेदांता समूह के चेयरमैन अनिल अग्रवाल ने बुधवार को कहा कि समूह ने अगले चार साल में भारत में अपने सभी कारोबारों में 20 अरब डॉलर के निवेश का लक्ष्य रखा है। अग्रवाल ने कंपनी के एक कार्यक्रम के दौरान कहा कि समूह अपने इस्पात कारोबार को केवल सही कीमत पर बेचेगा और सही कीमत नहीं मिलने पर वह इसे चलाना जारी रखेगा। अग्रवाल ने कहा, फिलहाल हमारी योजना चार साल में विभिन्न क्षेत्रों में 20 अरब डॉलर निवेश करने की है। उन्होंने कहा कि यह निवेश प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रॉनिक्स और ग्लास व्यवसायों के अलावा ऐसे अन्य गतिविधियों पर केंद्रित होगा जिसमें समूह शामिल है। उन्होंने कहा कि स्मार्टफोन और लैपटॉप स्क्रीन बनाने में उपयोग किए जाने वाले सेमी-कंडक्टर और ग्लास भविष्य के दृष्टिकोण से बहुत आवश्यक हैं, उन्होंने कहा कि समूह पहले से ही दोनों व्यवसायों में मौजूद है। कंपनी के पास सेमीकंडक्टर संयंत्र के लिए गुजरात में जमीन है और वह एक विश्वसनीय और मजबूत साझेदार की तलाश कर रही है।

सैमसंग डाट काम और सैमसंग एक्सक्लूसिव स्टोर्स पर स्मार्टफोन, टीवी, लैपटॉप और डिजिटल उपकरणों पर बेजोड़ ऑफर के साथ सैमसंग के फैब ग्रैब फेस्ट की वापसी

टैबलेट, एक्सेसरीज और वियरेबल्स के चुनिंदा मॉडलों पर 77 प्रतिशत तक की छूट

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत के सबसे बड़े उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड, सैमसंग ने अपनी सबसे बड़े समर सेल फैब ग्रैब फेस्ट की घोषणा की है। इस सेल में सैमसंग डाट काम, सैमसंग शॉप ऐप और सैमसंग के एक्सक्लूसिव स्टोर्स पर ग्राहक सैमसंग के प्रॉडक्ट्स को असाधारण डील्स और रोमांचक कैशबैक के साथ खरीद सकते हैं।

फैब ग्रैब फेस्ट के दौरान, ग्राहक गैलेक्सी एस सीरीज, गैलेक्सी जेड सीरीज और गैलेक्सी ए सीरीज के स्मार्टफोन के चुनिंदा मॉडलों पर 64 प्रतिशत तक की छूट का लाभ उठा सकते हैं। गैलेक्सी टैबलेट, एक्सेसरीज़ और वियरेबल्स के चुनिंदा मॉडल 77 प्रतिशत तक की छूट पर उपलब्ध होंगे, वहीं गैलेक्सी बुक4 सीरीज के लैपटॉप के चुनिंदा मॉडलों की खरीद पर ग्राहक 24 प्रतिशत तक की छूट का लाभ उठा सकते हैं।

सैमसंग टीवी के चुनिंदा मॉडल जैसे फ्लैगशिप नियो-क्यूएलईडी 8के, नियो क्यूएलईडी, ओएलईडी, द फ्रेम टीवी और क्रिस्टल यूएचडी सीरीज 43 प्रतिशत तक की छूट पर उपलब्ध होंगे। नियो क्यूएलईडी 8के, नियो क्यूएलईडी और ओएलईडी टीवी के चुनिंदा मॉडलों की खरीद पर ग्राहक 20,000 रुपये तक के बैंक कैशबैक का लाभ उठा सकते हैं। इसके अलावा, ग्राहक सभी टीवी की खरीद पर एक्सचेंज बोनस के रूप में 5000 रुपये तक का लाभ उठा सकते हैं।

हमारे बाय मोर, सेव मोर प्लेटफॉर्म के साथ, ग्राहक सैमसंग डाट काम या सैमसंग शॉप एप के माध्यम से दो या दो से अधिक उत्पादों की खरीद पर अतिरिक्त 5 प्रतिशत की बचत कर पाएंगे। बाय मोर, सेव मोर प्लेटफॉर्म उपभोक्ताओं को सैमसंग के कई प्रॉडक्ट्स पर बंडल ऑफर का लाभ उठाने का मौका देता है।

इतना ही नहीं, ग्राहक साइड-बाय-साइड रेफ्रिजरेटर, एलिगेंट फ्रेंच-डोर रेफ्रिजरेटर और फ्रॉस्ट फ्री रेफ्रिजरेटर जैसे प्रीमियम उपकरणों की एक व्यापक श्रृंखला पर 48 प्रतिशत तक की छूट का लाभ उठा सकते हैं। वे तीन या अधिक चुनिंदा उत्पाद खरीदकर बीस्पोक एआई पैकेज के साथ अपने किचन अनुभव को और अधिक बेहतर बनाते हुए अतिरिक्त 10 प्रतिशत छूट का आनंद ले सकते हैं।

वॉशिंग मशीन के चुनिंदा मॉडल 50 प्रतिशत तक की छूट पर उपलब्ध होंगे। इसके अतिरिक्त, उन्हें फुली ऑटोमैटिक फ्रंट लोडिंग और फुली ऑटोमैटिक टॉप लोडिंग मशीनों दोनों के लिए डिजिटल इन्वर्टर मोटर पर 20 साल की शानदार वारंटी मिलेगी। आसान खरीदारी के लिए किफायती ईएमआई विकल्प भी उपलब्ध है, जो फुली

ऑटोमैटिक फ्रंट लोडिंग के लिए सिर्फ 1490 रुपये, फुली ऑटोमैटिक टॉप लोडिंग के लिए 990 रुपये और सेमी-ऑटोमैटिक वाशिंग मशीन के लिए 756 रुपये से शुरू होता है।

सैमसंग इंडिया में डी2सी बिजनेस के वाइस प्रेसिडेंट सुमित वालिया ने कहा, हम सैमसंग.काम और सैमसंग एक्सक्लूसिव स्टोर्स पर बहुप्रतीक्षित समर सेल को वापस लाकर खुश हैं। फैब ग्रैब फेस्ट के माध्यम से, हम अपने ग्राहकों को सबसे बेहतरीन डील और ऑफर देने की कोशिश कर रहे हैं। साथ ही हम बाय मोर, सेव मोर के प्रति जबरदस्त उत्साह देख रहे हैं, इसलिए इस फैब ग्रैब फेस्ट में, हम अपने ग्राहकों को न केवल संपूर्ण सैमसंग रेंज के साथ बंडल बनाने के विकल्प का विस्तार करेंगे, बल्कि उस पर अतिरिक्त 5 प्रतिशत छूट की भी सुविधा भी देंगे।

फैंटमएफएक्स को वीएफएक्स उद्योग में इनोवेशन और ग्लोबल विस्तार को बढ़ावा देने के लिए परिवर्तनकारी प्रोजेक्ट्स प्राप्त हुआ

मुंबई, एजेंसी। फैंटम डिजिटल इफेक्ट्स लिमिटेड एक क्रिएटिव विजुअल इफैक्ट्स (वीएफएक्स) स्टूडियो, ने अप्रैल 2024 में परिवर्तनकारी प्रोजेक्ट्स प्राप्त होने की घोषणा की है, जो कंपनी के इनोवेशन और विस्तार के क्षेत्र में आगे एक भारी छलांग को दर्शाता है.

एक क्रिएटिव विजुअल इफैक्ट्स (वीएफएक्स) स्टूडियो, फैंटम डिजिटल इफेक्ट्स लिमिटेड (एनएसई -क्काह्रअह्लस्न्ङ्ग) को दोनों घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में सीमाचिन्ह प्रोजेक्ट प्राप्त हुए हैं. ये प्रोजेक्ट इनोवेशन और विस्तार के प्रति कंपनी की दृढ़ प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं. अप्रैल 2024 में परिवर्तनकारी प्रोजेक्ट पर हस्ताक्षर हुआ, जो कंपनी के लिए आगे एक बड़ी छलांग को दर्शाता है. घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों को कवर करने वाले ये सीमाचिन्ह प्रोजेक्ट कंपनी के दृढ़ समर्पण को दर्शाते हैं. लगभग 17 करोड के कुल मूल्य के साथ प्राप्त हुए ये प्रोजेक्ट उद्योग लीडर के रूप में फैंटमएफएक्स की स्थिति मजबूत करते हैं.

नए प्राप्त हुए प्रोजेक्ट में भारत, यूनाइटेड स्टेट्स और कनाडा के क्लाइंट्स की डायनेमिक जरूरत को पूरा करने के लिए वर्क के व्यापक स्कोप का समावेश है. भारतीय क्षेत्र के प्रोजेक्ट का मूल्य लगभग 3 करोड़ है, जो अपने लोकल बाजार की सेवा करने की कंपनी की दृढ़ प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है. साथ ही अंतर्राष्ट्रीय घटक का मूल्य लगभग 14 करोड है, जो फैंटमएफएक्स की वैश्विक पहुंच और उत्कृष्टता के लिए ख्याति पर प्रकाश डालता है.एक्सपर्टीज और क्रिएटिविटी की उसकी समृद्ध विरासत को देखते हुए फैंटमएफएक्स विजुअल इफेक्ट्स उद्योग में इनोवेशन और ग्राहक संतुष्टि के लिए नए सीमाचिन्ह स्थापित करते हुए इन प्रोजेक्ट की श्रेष्ठ सफलता सुनिश्चित करने के लिए तैयार है.

7 मई को लगेगा निःशुल्क नेत्र शिविर

दमुआ। लायंस सेवा समिति दमुआ व लायंस क्लब परासिया के तत्वावधान में 07 मई दिन मंगलवार सुबह 11 बजे से दोपहर 3 बजे तक बेरियल कॉलरी ऑफिस के सामने गरीब भोज परिसर दमुआ में विशाल निःशुल्क नेत्र शिविर का भव्य आयोजन किया गया है आधुनिक सुविधाओं से संपन्न लायंस नेत्र चिकित्सालय परासिया के नेत्र रोग विशेषज्ञों द्वारा मोतियाबिंद का कुशल ऑपरेशन कर लाभान्वित किया जाएगा निःशुल्क जांच शिविर में मरीज को अपना आधार कार्ड, राशन कार्ड ,की फोटो कॉपी और मोबाइल नंबर लाना अनिवार्य है। निःशुल्क सुविधाओं में आंखों की जांच मोतियाबिंद का ऑपरेशन, लेंस, दवाइयां,काला चश्मा, चाय, नाश्ता भोजन मरीजों को लाना ले जाना बिस्तर व देखभाल इत्यादि सम्मिलित है !

श्रमिकों को सम्मानित किया

दमुआ। शासकीय महाविद्यालय दमुआ में राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वाधान में विश्व श्रमिक दिवस के उपलक्ष्य में कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस वर्ष की थीम बदलते माहौल में काम पर सुरक्षा और स्वास्थ्य सुनिश्चित करने पर केंद्रित है अतः विद्यार्थियों को बताया गया कि यह दिन दुनिया भर के मज़दूर वर्ग के योगदान और बलिदानों को सम्मानित करने का अवसर है इस उपलक्ष में महाविद्यालय में काम कर रहे श्रमिकों को तिलक लगाकर धन्यवाद ज्ञापित किया गया ।

दीक्षा गौतम बनी टॉपर

दमुआ- शासकीय हाई स्कूल कालीछापर 10वीं 2024 में अध्यनरत छात्र-छात्राओं का वार्षिक बोर्ड परीक्षा परिणाम घोषित हुआ जिसमें शासकीय कन्या हाई स्कूल की संस्थागत छात्र दीक्षा गौतम पिता डॉ महेंद्र प्रताप गौतम माता आशा गौतम ने 91.2त्न अंक पाकर शाला में अव्वल स्थान प्राप्त किया इन्होंने स्कूल के प्राचार्य शिक्षक शिक्षिकाओं का माता-पिता के मार्गदर्शन व उनके अपार तथा डॉक्टर बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर जी व शिक्षा की देवी माता सावित्रीबाई फुले के जीवन से प्रेरणा पाकर अपने कठिन मेहनत से अच्छी सफलता पाने का श्रेय दिया।

कबड्डी का प्रशिक्षण 5 मई से

छिंदवाड़ा। जिला कबड्डी संघ द्वारा कबड्डी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 5 मई से प्रारंभ होगा । प्रशिक्षण शिविर का संचालन स्थानीय ओलम्पिक स्टेडियम मैदान में किया जाएगा। प्रशिक्षण का समय शाम 5ः00 से 7ः00 बजे होगा। इस दौरान खिलाड़ियों को खेल की बारीकियां अनुभवी प्रशिक्षकों के द्वारा सिखाई जाएगी ।संघ के पदाधिकारी प्रसून श्रीवास्तव, अनुराग श्रीवास्तव, राकेश चौरसिया, प्रीति मार्को,देवचंद सूर्यवंशी सहित समस्त सदस्यों द्वारा खिलाड़ियों से अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने की अपील की गई है। जिन खिलाड़ियों को प्रशिक्षण में भाग लेना हो वे ओलम्पिक स्टेडियम मैदान में उपस्थित होकर संपर्क कर विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते है।

मेंटेनेंस के चलते विद्युत सप्लाई 7 से 12 तक रहेगी सुबह

अमरवाड़ा। 33/11 केवी लाइनों का प्री मानसून मेंटेनेंस कार्य किया जाना है जिसके चलते दिनांक 3 में शुक्रवार को 33/11 सिंगोड़ी फीडर के हिवरखेड़ी सिंगोड़ी एवं भोकई उप केंद्र से जुड़े समस्त निम्न दाब उपभोक्ता दिनांक 4 अप्रैल दिन शनिवार को 33 केवी सिंगोड़ी फीडर के छुई खिरेटी एवं सिमरिया से जुड़े समस्त निम्न दाब उपभोक्ता दिनांक 6 में दिन सोमवार को 33 केवी हर्रई फीडर के रातामाटी स्वामी सलैया हड़ाई उपकरण से जुड़े समस्त निंबाड़ा उपभोक्ता 7 में मंगलवार को सुरलाखापा की जुंगावानी एवं सुरलाखापा उपकेंद्र से जुड़े समस्त निम्न दाब उपभोक्ता 9 में दिन गुरुवार को घोघरी फीडर के घोघरी बटकाखापा एवं धानेरा उप केंद्र 10 मई दिन शुक्रवार अमरवाड़ा रीडर के अमरवाड़ा केंद्र से जुड़े समस्त उपभोक्ताओं की विद्युत सप्लाई सुबह 7ः00 बजे से 12ः00 बजे तक बाधित रहेगी मेंटेनेंस कार्य की दृष्टिगत आवश्यकतानुसार उक्त समय अवधि को घटाया बढ़ाई सकती है।

परासिया न्यायालय से मात्र एक पीएससी में सफल
गरीब की बेटी को मिली सफलता

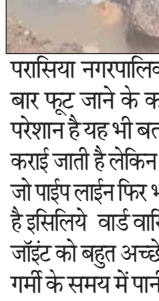

परासिया। परासिया वासियो के लिए एवं परासिया न्यायालय परिवार का उस वक्त खुशी का ठिकाना नहीं रहा जब परासिया निवासी गरीब बेटी एडवोकेट शाहजहां अंसारी ने सहायक जिला लोक अभियोजक के पद पर सफलता पा ली और परासिया न्यायालय की एकमात्र गरीब बेटी ने इस कामयाबी को हासिल किया है। जबकि गरीब बेटी के पिता टेलर हैं एवं उनके पति साधारण गेराज चलाते हैं। रिजल्ट आते ही परासिया एवं समस्त जिले में खुशी की लहर दौड़ गई बधाई देने वालों के ताता लग गया इस कामयाबी के लिए शाहजहां अंसारी ने अपने परिजनों का आभार माना एवं एडीपीओ घनश्याम प्रजापति के मार्गदर्शन को सराहा है एवं अपने अधिवक्ता साथी संध्या सूर्यवंशी हेमलता बनकर कुंदन सराठे एवं बृजलाल वर्मा और अधिवक्ता संघ परासिया का आभार माना है बधाई देने वालों में कमलनाथ व नकुल नाथ एवं जिले के अनेकों गणमान्य अधिवक्ता एवं न्यायाधीश शामिल है इस अवसर पर स्टेट हेड आरटीआई एक्टिविस्ट एडवोकेट एस के जागीरदार ने भी बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की और सभी ने शाहजहां अंसारी के उज्जवल भविष्य की कामना की है।

पाईप लाईन फूटी, 2 महीने से जानता पानी के लिये परेसान

परासिया। कोयलांचल क्षेत्र परासिया के वार्ड नंबर 19 के वार्ड वासियों से मिली जानकारी परासिया नगरपालिका वार्ड नंबर 19 में पाईप लाईन बार बार फूट जाने के कारण 2 महीने से जनता पानी के लिए परेशान है यह भी बताया गया है कि बार-बार पाईप लाइन ठीक कराई जाती है लेकिन न जाने किस तरह से ठीक कराई जाती है जो पाईप लाईन फिर भी वह पाईप का जॉइंट बार बार खुल जाता है इसिलिये वार्ड वासियों का कहना है कि इस पाईप लाईन के जॉइंट को बहुत अच्छे से ठीक कराया जाए ताकि जनता को गर्मी के समय में पानी के लिए परेशानियाँ ना हो।

सोने-चांदी के जेवरात सहित आरोपी पकड़ाया

पुलिस ने जब्त किया मशरूका

छिंदवाड़ा। कोतवाली पुलिस ने सूने आवास से चोरी गए सोने चांदी के जेवरात और नगदी चोरी करने वाले आरोपियों को पकड़ने में सफलता हासिल की है। पुलिस ने प्रार्थिया सविता पिता अनिल वरकडे उम्र 34 वर्ष निवासी पंचमढी ढाना चंदनगांव की रिपोर्ट पर प्रकरण दर्ज किया था। पुलिस के अनुसार परिवार लोग जंवारे के कार्यक्रम में मायके गई थी वापस अपने घर छिन्दवाडा आने पर देखा की घर के सामने का ताला टूटा हुआ, घर के अंदर आलमारी में रखा सोने चांदी के आभूषण (जेवरात) जिसमे एक सोने का हार, एक सोने का मंगलसूत्र, एक सोने की बंदियाँ, एक चांदी का करदोना, एक सेमसंग कंपनी का कीपेड मोबाईल एवं 15 हजार नगदी कुल मशरुका 1 लाख रुपये करीबन का अज्ञात चोर द्वारा चोरी कर ले गये हैं, पुलिस ने विवेचना के दौरान वरिष्ठ अधिकारियों के मार्गदर्शन में टीम गठित कर कड़ी मेहनत, लगन से मोहल्ले में लगे समस्त सीसीटीव्ही फुटेज को खंगाला गया, मुखबिर तंत्र सक्रिय कर आरोपी रोहित पिता रामकलेश यादव उम्र 19 वर्ष 7 माह निवासी एकता कालोनी चंदनगांव थाना कोतवाली जिला छिन्दवाडा को अभिरक्षा में लेकर बारीकी से पूछताछ करने पर आरोपी द्वारा उक्त घटना कारित करना स्वीकार किया, आरोपी के कब्जे से चोरी किया मसरुका सोना चांदी के जेवरात बरामद कर, आरोपी को गिरफ्तार किया जाकर न्यायालय पेश किया गया। गिरफ्तार आरोपी रोहित पिता रामकलेश यादव उम्र 19 वर्ष 7 माह निवासी एकता कालोनी चंदनगांव जब्त की गई मशरूका में 1 सोने का हार, । सोने का मंगलसूत्र, । सोने की बंदियों, चांदी का करदोना, 1 सेमसंग कंपनी का कीपेड मोबाईल कुल मशरुका 1 लाख 20 हजार रुपये शामिल है। आरोपी को पकडने में निरीक्षक उमेश कुमार गोल्हानी और स्टॉप का योगदान रहा।

अंगेजी, देशी शराब जब्त

नवेगांव थाना के अंतर्गत मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने 64 लीटर देशी विदेशी मदिरा शराब जब्त की है। थाना प्रभारी राजेश साहू ने बताया कि शराब की कीमत 31 हजार 990 रूपए है आरोपी शिवराज पिता धरमू निवासी खिड़की कनेरी, शिवकुमार पिता धरमू धुर्वे पर आबकारी अधिनियम के तहत कार्रवाई की गई।

लगातार जांच से यातायात के प्रति जागरूकता बढ़ी
हेलमेट पहने दिखने लगे वाहन चालक, प्रतिदिन हो रही वाहनों की जांच

छिंदवाड़ा। शहर में लगातार हो रही वाहनों की जांच से अब हेलमेट लगाए हुए दो पहिया चालक शहर में नजर आने लगे हैं। पिछले कुछ दिनों से ट्रैफिक पुलिस तिराहे और चौराहों पर दोपहिया वाहन व चौपाइयां वाहनों में हेलमेट व सीट बेल्ट की जांच कर रही है। इसके साथ ही वाहनों के दस्तावेज भी देखे जा रहे हैं। जिसके चलते अब शहर में यातायात जागरूकता नजर आने लगी है। कई दो पहिया चालक हेलमेट लगाकर चलते दिखाई दे रहे हैं तो वही नो पार्किंग में भी कम वाहन नजर आ रहे हैं। पुलिस अधीक्षक मनीष खत्री और अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एपी सिंह के निर्देशन में डीएसपी ट्रैफिक रामेश्वर चौबे और रक्षित निरीक्षक राकेश तिवारी के मार्गदर्शन में लगातार शहर में विभिन्न तिराहाओं चौराहों पर वाहनों की जांच की जा रही है। इस जांच करवाई में पुलिस हेलमेट पहन कर वाहन चलाने वाले और चौपाइयां वाहनों में सीट बेल्ट का उपयोग न करने वालों के खिलाफ चालानी कार्रवाई कर रही है। लगातार जांच के कारण शहर में अब यातायात के प्रति जागरूकता दिखाई देने लगी है। इसके साथ ही वाहनों के दस्तावेज इंश्योरेंस और नो पार्किंग जैसे मामलों में भी यातायात पुलिस की सक्रियता बढ़ी है जिसके कारण सड़कों पर खड़े रहने वाले वाहनों की संख्या भी कम हुई है और अब सड़के साफ दिखने लगी हैं

128 वाहन चालकों से वसूला 65000 जुर्माना

यातायात पुलिस की लगातार चेकिंग अभियान शहर के विभिन्न क्षेत्रों में चलाया जा रहा है। 2 मई को भी शहर में कई जगह चेक पोस्ट लगाकर वाहनों की जांच की गई। जिसमें लगभग 128 वाहनों के खिलाफ चालानी कार्रवाई की गई है। इसमें दोपहिया और चौपाइयां सभी तरह के वाहन शामिल है। यातायात पुलिस ने 128 वाहनों में अलग-अलग कार्रवाई कर लगभग 65000 समान शुल्क वसूल किया है। कारवाई में हेलमेट, सीट बेल्ट, नो पार्किंग, तेज गति और जरूरत से ज्यादा सवारी बैठाने वाले वाहन भी शामिल है जिनके खिलाफ कार्रवाई की गई है।

जिले में नवाचार के रूप में होगी लौंग एवं काली मिर्च की खेती
कलेक्टर ने ली कृषि एवं संबंधित विभागों की साप्ताहिक समीक्षा बैठक जारी रबी विपणन वर्ष में फसल उपार्जन की भी समीक्षा की

छिन्दवाड़ा। कलेक्टर शीलेन्द्र सिंह की अध्यक्षता में आज कृषि एवं सम्बध्द विभागों और फसल उपार्जन की साप्ताहिक समीक्षा बैठक कलेक्टर कार्यालय के सभाकक्ष में संपन्न हुई। बैठक में जिले के वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिकों के साथ ही कृषि, उद्यानिकी, मत्स्य पालन, सहकारिता, कृषि अभियांत्रिकी, पशुपालन, खाद्य आपूर्ति सहित संबंधित सभी विभागों के प्रमुख अधिकारी उपस्थित थे। बैठक में कलेक्टर श्री सिंह द्वारा जिले के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र तामिया, हर्रई, अमरवाड़ा एवं जुन्नारदेव विकासखंड में नवाचार के रूप में लौंग, कालीमिर्च एवं इलायची फसल की खेती करने के लिये किसानों का चयन कर इसी वर्ष वर्षा ऋतु में रोपण कराने के निर्देश दिये हैं, जिससे जिले के आदिवासी कृषकों की आमदनी में वृध्दि की जाकर किसानों के आय के नवीन स्त्रोत सृजित किए जा सकें। विशेषकर यह नवाचार तामिया के पातालकोट क्षेत्र में किया जायेगा, जिससे यहां के भारिया आदिवासियों को इसका लाभ मिले। लौंग, कालीमिर्च एवं इलायची के पौधे जिले के तामिया, हर्रई, अमरवाड़ा विकासखंड में उद्यान विभाग की रोपणियों पर भी पायलट प्रोजेक्ट के रूप लगवाए जायेंगे। मसाला बोर्ड के वैज्ञानिक श्री भारत अर्जुन ने बताया कि इनके पौधों की व्यवस्था दक्षिण भारत में स्थित मसाला बोर्ड की रोपणियों से की जायेगी। बैठक के दौरान लौंग, कालीमिर्च और इलायची के पौधे भी कलेक्टर श्री सिंह एवं अन्य अधिकारियों के अवलोकन के लिए लाए गए थे। इस संबंध में उन्होंने बैठक में उपस्थित कृषि वैज्ञानिकों से सुझाव और इन फसलों के लिए जिले में अनुकूल क्लाइमेट की उपलब्धता की जानकारी भी प्राप्त की। इसी तरह कृषकों के हित में अन्य नवाचारों की संभावना पर भी विचार विमर्श किया गया। बैठक में फसल उपार्जन की समीक्षा करते हुए कलेक्टर श्री सिंह ने रबी विपणन वर्ष 2024-25 में निर्धारित मापदंड एफ.ए.क्यू. के अनुरूप ही गेहूं, चना, मसूर, सरसों आदि फसलों का कृषकों से उपार्जन करना सुनिश्चित करने और नियत समय में कृषकों को भुगतान करने के निर्देश दिये । उन्होंने निर्देश दिए कि किसी भी उपार्जन केंद्र में अनियमितता पाये जाने की स्थिति में संबं?धित उपार्जन केन्द्र प्रभारी, सर्वेयर के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जायेगी। उपार्जन को सुचारू रूप से संचालित करने के लिये सभी उपार्जन केन्द्रों पर पर्याप्त मात्रा में बारदाने उपलब्ध कराये जाने के निर्देश जिला विपणन अधिकारी को दिये गये। उपार्जन के ंद्रों के तौल कांटों व वेइंग मशीन का औचक निरीक्षण करते रहने के निर्देश नाप तौल विभाग के अधिकारी को दिए। जिला आपूर्ति अधिकारी को उपभोक्ताओं का ई-के वाईसी कार्य 77 प्रतिशत पाए जाने पर गति के साथ शत-प्रतिशत पूर्ण कराने के निर्देश दिए। खाद्यान्न आवंटन एवं अप्रैल माह के खाद्यान्न वितरण की समीक्षा की और तामिया व जुन्नारदेव क्षेत्र में खाद्यान्न वितरण में विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए।

एस.बी.आई लाईफ को 38,238 करोड़ का प्रीमियम मिला
1894 करोड़ रूपए का लाभ कमाया

छिंदवाड़ा। एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस ने 31 मार्च, 2024 को समाप्त वर्ष के लिए 38,238 करोड़ रुपये का न्यू बिजनेस प्रीमियम दर्ज किया।

देश की अग्रणी जीवन बीमा कंपनियों में से एक, एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस ने 31 मार्च, 2024 को समाप्त वर्ष के दौरान 38,238 करोड़ रुपये का न्यू बिजनेस प्रीमियम दर्ज किया, जबकि 31 मार्च, 2023 को समाप्त वर्ष के दौरान यह 29,589 करोड़ रुपये था। पिछले वर्ष की तुलना में सिंगल प्रीमियम में 44 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

सुरक्षा पर स्पष्ट ध्यान केंद्रित करते हुए, एसबीआई लाइफ का न्यू बिजनेस प्रीमियम 31 मार्च, 2024 को समाप्त वर्ष के लिए 4,165 करोड़ रुपये रहा, जो 15त्न की वृद्धि दर्शाता है। सुरक्षा व्यक्तिगत न्यू बिजनेस प्रीमियम 31 मार्च, 2024 को समाप्त वर्ष के लिए 951 करोड़ रुपये रहा। व्यक्तिगत नया व्यवसाय प्रीमियम पिछले वर्ष की तुलना में 14 प्रतिशत वृद्धि के साथ 23,832 करोड़ रुपये रहा। 31 मार्च, 2024 को समाप्त वर्ष के लिए एसबीआई लाइफ का कर पश्चात लाभ 1,894 करोड़ रुपये रहा।कंपनी का सॉल्वेंसी अनुपात 31 मार्च, 2024 तक 1.96 पर मजबूत बना हुआ है, जबकि नियामक आवश्यकता 1.50 है। एसबीआई लाइफ का एयूएम भी 31 मार्च, 2023 को 3,07,339 करोड़ रुपये की तुलना में 27त्न बढ़कर 31 मार्च, 2024 को 3,88,923 करोड़ रुपये हो गया, जिसमें 64ः36 का ऋण-इक्विटी मिश्रण है। 95 प्रतिशत से अधिक ऋण निवेश एएए और सॉवरेन इंस्ट्रूमेंट्स में हैं। कंपनी के पास 3,16,038 प्रशिक्षित बीमा पेशेवरों का एक व्यापक वितरण नेटवर्क है और देश भर में 1,040 कार्यालयों के साथ इसकी व्यापक उपस्थिति है, जिसमें मजबूत बैंक एश्योरेंस चैनल, एजेंसी चैनल और कॉर्पोरेट एजेंट, ब्रोकर, पॉइंट ऑफ सेल पर्सन (POS), बीमा मार्केटिंग फर्म, वेब एग्रीगेटर और प्रत्यक्ष व्यवसाय शामिल हैं।

जिले में पेय जल की पर्याप्त व्यवस्था हो: अभय वर्मा
हेण्डपम्प व नलो की मरम्मत करें

छिन्दवाड़ा। जबलपुर संभाग के आयुक्त अभय कुमार वर्मा गुरूवार को भ्रमण पर जिला पांढुर्णा पहुंचे। जहां उन्होंने विभिन्न शासकीय संस्थाओं व कार्यालयों का निरीक्षण करने के साथ ही विभागीय अधिकारियों की समीक्षा बैठक भी ली। आयुक्त श्री वर्मा द्वारा कलेक्टर न्यायालय, अनुविभागीय अधिकारी पांढुर्णा न्यायालय, लोक सेवा केन्द्र पांढुर्णा और सिविल अस्पताल पांढुर्णा का औचक निरीक्षण किया गया और आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये। लोक सेवा केन्द्र के निरीक्षण के दौरान लोक सेवा केन्द्र मैनेजर को भवन मरम्मत, शुद्ध पेयजल, फेन एवं आम जनता को बैठने के लिए कुर्सियों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिये निर्देशित किया। इस दौरान कलेक्टर पांढुर्णा अजय देव शर्मा, एसडीएम पांढुर्णा सुश्री नेहा सोनी व एसडीएम सौंसर सिध्दार्थ पटेल सहित अन्य अधिकारी भी साथ थे। निरीक्षण उपरांत आयुक्त श्री वर्मा की अध्यक्षता में कलेक्टर कार्यालय पांढुर्णा के सभाकक्ष में कलेक्टर श्री शर्मा की उपस्थिति में जिले से संबंधित सभी विभागों के विभाग प्रमुख अधिकारियों की विभागवार समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में अतिरिक्त कलेक्टर पांढुर्णा, अनुभाग पांढुर्णा एवं सौंसर के राजस्व अनुविभागीय अधिकारी, तहसीलदार, नायब तहसीलदार एवं राजस्व विभाग, पंचायत एवं ग्रामीण विकास, नगरीय प्रशासन एवं विकास, उद्यानिकी, मत्स्य, जिला व्यापार एवं उद्योग, कृषि, स्वास्थ्य, उच्च शिक्षा, स्कूल शिक्षा, जल संसाधन, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, महिला बाल विकास, खाद्य आपूर्ति, खनिज एवं लोकनिर्माण विभाग के अधिकारी उपस्थित थे। संभागीय कमिश्नर श्री वर्मा ने बैठक में विभागीय अधिकारियों से विभागवार समीक्षा के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति की समीक्षा के दौरान नल जल योजना के तहत् पर्याप्त जल की व्यवस्था एवं माह मई-जून की गर्मी के दृष्टिगत क्षेत्रों में बंद पडे हैंडपंप, नल की मरम्मत करते हुए पेयजल व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के निर्देश दिये ।

अनियमितता पाये जाने पर 5 लोक सेवा केन्द्र के संचालकों को कारण बताओ सूचना पत्र जारी

छिन्दवाड़ा। कलेक्टर शीलेन्द्र सिंह द्वारा दिये गये निर्देशों के परिपालन में जिला प्रबंधक (लोकसेवा) द्वारा म.प्र.लोक सेवाओं के प्रदाय की गारंटी अधिनियम 2010 के अंतर्गत लोक सेवा केन्द्र चौरई, पांढुर्णा, सौंसर, परासिया व उमरेठ का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान विभिन्न अनियमितता पाये जाने पर कलेक्टर श्री सिंह ने 5 लोक सेवा केन्द्र के संचालकों को कारण बताओ सूचना पत्र जारी किया है तथा 7 दिवस के अंदर अपने जबाव प्रस्तुत करने के निर्देश दिये गये हैं।

कलेक्टर श्री सिंह ने बताया कि म.प्र.लोक सेवाओं के प्रदान गारंटी अधिनियम 2010 के सुचारू क्रियान्वयन एवं संचालन के लिये आर.एफ.पी. में दिये प्रावधानों के अनुसार जिला प्रबंधक (लोकसेवा) द्वारा 01 मई 2024 को लोक सेवा केन्द्र परासिया व उमरेठ, 27 अप्रैल को पांढुर्णा व सौंसर तथा 29 अप्रैल को लोक सेवा केन्द्र चौरई का निरीक्षण किया गया। इस दौरान लोक सेवा केन्द्रों में विभिन्न अनियमितता पाये जाने पर लोक सेवा केन्द्र चौरई की संचालक श्रीमती सरला तिवारी, लोक सेवा केन्द्र पांढुर्णा के संचालक श्री मुसरूल्लाल नागले, लोक सेवा केन्द्र सौंसर के संचालक श्री धनराज खत्रा, लोक सेवा केन्द्र परासिया की संचालक/प्रो.सांईदीप एग्रो प्रोडक्ट श्रीमती मृदुला सिंह तथा लोक सेवा केन्द्र उमरेठ के संचालक संतोष कुमार चौरसिया को लोक सेवा केन्द्र के संचालन में की गई अनियमितताओं एवं घोर लापरवाही करते हुये आर.एफ.पी. की कंडिकाओं का उल्लंघन करने पर आर.एफ.पी. में दिये प्रावधानों के अनुसार जुर्माने से दंडित किया गया है। इस संबंध में संबंधित संचालकों को 7 दिवस के अंदर अपना जवाब उपलब्ध कराने के निर्देश दिये गये हैं। समय सीमा में जवाब प्राप्त न होने की दशा में एक पक्षीय कार्यवाही की जायेगी।

कलेक्टर ने खजरी में जैविक मार्ट का किया निरीक्षण

छिंदवाड़ा। कलेक्टर शीलेन्द्र सिंह द्वारा आज छिंदवाड़ा शहर के खजरी रोड में संचालित जैविक मार्ट का औचक निरीक्षण किया गया। इस दौरान सीईओ जिला पंचायत श्री पार्थ जैसवाल, कृषि विज्ञान केन्द्र-2 देलाखारी तामिया के वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ.आर.सी.शर्मा, उप संचालक कृषि श्री जितेन्द्र कुमार सिंह सहित कृषि विभाग एवं आत्म परियोजना के अन्य अधिकारी भी साथ थे। इस जैविक मार्ट में गौ-आधारित कृषि कर रहे किसानों से प्राप्त अनाजों से चोकर निकाले बिना नवरत्न आटा बनाकर विक्रय किया जाता है। इसके अतिरिक्त गौ-आधारित अन्य जैविक कृषि उत्पाद भी विक्रय किए जाते हैं। जैविक मार्ट के संचालक श्री राहुल वसूले ने नवरत्न आटा तैयार करने की प्रक्रिया भी बताई। कलेक्टर श्री सिंह द्वारा अधिकारियों के साथ नवरात्र आटा तैयार करने की प्रक्रिया का अवलोकन भी किया गया। जिसके बाद उन्होंने ग्राम जामुनझिरी में देव डेयरी का भी औचक निरीक्षण किया।

रोटरी मेंबर्स ने तामिया ,सप्तधारा, देनवा नदी सहित सतपुड़ा के जंगल में किया भ्रमण
रोटेरियन ने जल, जंगल, सहित वन्य जीव जंतुओं के संरक्षण हेतु किया चिंतन

छिंदवाड़ा। रोटरी क्लब ऑफ छिंदवाड़ा द्वारा रोटरी फेलोशिप एवम पर्यटन स्थलों का भ्रमण कार्यक्रम के अंतर्गत गत दिवस रोटरी का 22सदस्यीय दल छिंदवाड़ा से तामिया, तुलतुला पहाड़, सप्तधारा,होते हुए देनवा नदी तट तक पहुंचे।रोटरी क्लब का उद्देश्य सेवा भावी कार्यों के साथ साथ शांति सदभाव एवम मित्रता को बढ़ावा देना भी है इन्ही उदेश्यो को पूरा करती रोटरी क्लब की यह यात्रा मनोरंजन और खुशनुमा वातावरण का लुफ्त उठाते हुए सतपुड़ा की वादियों के बीच अपने अनमोल धरोहर वाटर फॉल, नदिया पहाड़ों सहित अन्य पर्यटन स्थलों का भ्रमण किया गया।इस यात्रा में रोटरी क्लब के युवा साथियों के साथ साथ चार्टर मेंबर भी शामिल हुए।रोटरी क्लब के अध्यक्ष अभय दुग्गड के साथ प्रोजेक्ट डायेक्टर संदीप सिंह चंदेल,अर्पित नेमा, दीपक खंडेलवाल,चार्टर मेंबर डाक्टर एच वी सुनेजा,अशोक अग्रवाल, पंकज अग्रवालअमित महेश्वरी, मनोज अग्रवाल,विनोद तिवारी,शरद पंपालिया, दीपक साहू, हरीश गुगनानी, अंशुल गोयल,जयेश गुप्ता, अशीष जैन, मुकेश जैन, अरविंद अग्रवाल ,निलेश गुप्ता ,संजय जैन रूपल अग्रवाल, नंदकिशोर डोडानी, सहित अन्य मेंबर्स शामिल थे।दो दिवसीय पर्यटन स्थलों के भ्रमण एवम रोटरी पिकनिक में सभी मेंबर्स ने सतपुड़ा की वादियों में प्रकृति के नजारो को करीब से देखा एवम इस अनमोल धरोहर की खूबियां जानी। सतपुड़ा की तलहटी में देनवा नदी के किनारे देनवा विंड रिसोर्ट से रोटरी क्लब की प्रकृति भ्रमण कार्यक्रम का लुफ्त उठाया।रोटरी क्लब के अध्यक्ष अभय दुग्गड ने कहा की आगामी समय में रोटरी कार्निवाल सहित अन्य प्रोजेक्ट को रोटरी क्लब करेगा।पदाधिकारी रोटेरियन संदीप सिंह चंदेल ने सभी से रोटरी क्लब के द्वारा कार्ययोजना बनाकर रोटरी 3040 के अनुरूप प्रोजेक्ट पर कार्य करने की बात कही साथ ही इस तरह के रोटरी क्लब के मेंबर्स के लिए दो दिवसीय प्रकृति भ्रमण कार्यक्रम से अपनी धरोहर को करीब से जानने का अच्छा प्रकल्प बताया। रोटेरियन अर्पित नेमा ने कहा की विगत वर्ष भी पेंच नेशनल पार्क का भ्रमण किया गया था।इस वर्ष देनवा नदी के पास प्रकृति की अनमोल धरोहर को करीब से निहारने का मौका मिला है।रोटेरियन विनोद तिवारी ने बताया की इस प्रकृति यात्रा का छिंदवाड़ा से प्रथम पड़ाव तामिया रेस्ट हाउस से सतपुड़ा के जंगलों ऊंचे ऊंचे पहाड़ों सहित वल्चर पॉइंट तक जाने का सुअवसर मिला साथ ही पहाड़ियों के बीच चट्टानों में गिद्ध,के रहवास को देखने का सुअवसर भी मिला। रोटेरियन मनोज अग्रवाल ने कहा की देनवा विंड रिसोर्ट में प्राकृतिक वातावरण,स्वादिष्ट व्यंजन,मनोरंजन गेम्स,स्वेमिंग पुल का लुफ्त सहित अन्य प्रकृति की अनुभूति लेने का सुअवसर सभी रोटरी मेंबर्स को मिला।यात्रा के समापन पर रोटरी क्लब के सचिव विनित पाटोदी ने सभी के प्रति मंगलमय प्रकृति भ्रमण कार्यक्रम संपादित होने पर धन्यवाद ज्ञापित किया।

जैन बाल संस्कार शिविर का हुआ शुभारंभ...

तारण भवन छोटी बाजार में आठ दिनों तक होगा संस्कारों का बीजारोपण

छिंदवाड़ा। मध्य प्रदेश की धर्म नगरी छिंदवाड़ा के हृदय स्थल छोटी बाजार स्थित तारण भवन में श्री तारण तरण दिगंबर जैन समाज के तत्वावधान में श्री तारण तरण दिगंबर जैन नवयुवक मंडल द्वारा बुधवार 1 मई से 8 मई तक चलने वाले श्री तारण तरण जैन बाल संस्कार शिविर का भव्य शुभारंभ हुआ। मंडल अध्यक्ष राजा जैन एवं सचिव सुमित जैन मोनू ने बताया कि शिविर का शुभारंभ बाल ब्रह्मचारी अध्यात्मरत्न श्री बसंतजी, बाल ब्रह्मचारणी डॉक्टर आरती बहिनजी छिन्दवाड़ा सहित सर्वश्री पंडित सचिनजी शास्त्री भोपाल, अनुभवजी शास्त्री सिलवानी, प्रदीपजी शास्त्री दमोह, अभिनयजी शास्त्री जबलपुर के मंगल सानिध्य में सकल तारण समाज, नवयुवक मंडल एवं महिला मंडल की विशेष उपस्थित में प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर सभी त्यागी व्रतियों सहित अतिथि विद्धानों के साथ समाज अध्यक्ष सुभाष बाबू जैन एवं शिविर संयोजक संकेत जैन ने सम्पूर्ण रूपरेखा बताकर शिविर शुभारंभ की मंगलमय शुभकामनाएं दी, सभा का सफल संचालन तरुण जैन एवं आभार प्रदर्शन प्रदीप जैन ने किया। तारण भवन में वर्ष 2004 से प्रारंभ हुए संस्कार शिविर का इस वर्ष 20 वर्ष है जो आगामी 8 मई तक चलेगा। जिसमे 250 से अधिक शिविरार्थी हिस्सा ले रहे हैं, जिसमे प्रातः 7 बजे से 11 बजे तक एवं रात्रि 7 बजे से 9.30 बजे तक शिक्षण कक्षाओं सहित विविध ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताओं के माध्यम से संस्कारों का बीजारोपण कर जिनशासन की मंगल प्रभावना की जावेगी। वहीं सकल समाज को प्रातः एवं रात्रि 8.30 बजे से श्री तारण तरण दिगंबर जैन चैत्यालय जी छोटी बाजार में अतिथि शास्त्री विद्धान् के श्रीमुख से मां जिनवाणी का रसास्वादन करने का सौभाग्य मिलेगा जिसमे सकल समाज सादर आमंत्रित है।

भाजपा प्रत्याशी ने हनुमानजी के दर्शन कर कोहेफिजा से जनसंपर्क शुरू किया

भोपाल। भाजपा प्रत्याशी आलोक शर्मा ने आज सबसे पहले कोहेफिजा स्थित हनुमान जी के मंदिर पहुंचकर दर्शन किये और अपनी प्रचंड जीत की कामना की। जनसंपर्क के दौरान वे दुर्गा मंदिर, ग्वाल बाबा क्षेत्र, बरेला गांव, महादेव नगर, गंगा जमुना मल्टी, गोल फीलिंग, गुफा मंदिर, रामानंद कॉलोनी, दुर्गा नगर कॉलोनी, ईदगाह हिल्स गुरुद्वारा होते हुए शहीद गेट, कोहेफिजा थाना व शहीद नगर में अपना जनसंपर्क किया। आगे के जनसंपर्क में आलोक शर्मा मरघटिया मन्दिर, हमीदिया रोड, इब्राहिमगंज, शीतला माता मंदिर और डीआईजी बंगला क्षेत्र में पहुंच रहे हैं। जनसंपर्क में गुरुनानक मंडल अध्यक्ष राकेश कुकरेजा, पार्षद व एमआईसी सदस्य मनोज राठौर, महेश मकवाना, अशोक सैनी, राजेंद्र गुप्ता,अतुल घेंघट सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता शामिल रहे।

प्रदेश के 10 जिलों में हीट वेव का अलर्ट, 6-7 मई को बूंदाबांदी का अनुमान

भोपाल। मई के शुरुआती दो दिन तक मध्यप्रदेश में तेज गर्मी रही। कई शहरों में तापमान 42 डिग्री सेल्सियस के पार रहा। शुक्रवार को भी गर्मी का असर रहेगा, जबकि 4-5 मई को ग्वालियर, खरगोन, खंडवा, दतिया समेत 10 जिलों में हीट वेव, यानी गर्म हवाएं चलने का अलर्ट है। 6 और 7 मई को पूर्वी हिस्से में हल्की बूंदाबांदी होने का अनुमान है।

आईएमडी भोपाल के वैज्ञानिक प्रकाश धावले ने बताया कि ईरान की ओर से वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) एक्टिव हो रहा है। इस वजह से 6 और 7 मई को पूर्वी मध्यप्रदेश में कहीं-कहीं हल्की बूंदाबांदी हो सकती है। सामान्य से साढ़े 4 डिग्री तापमान ज्यादा होने पर हीट वेव चलने लगती है। अगले दिनों में हीट वेव का असर भी रहेगा।

4 और 5 मई को ग्वालियर, दतिया, टीकमगढ़, छतरपुर, रीवा, मऊगंज, सीधी, सिंगरौली, खरगोन और खंडवा में हीट वेव चल सकती है। मौसम विभाग ने यह अलर्ट जारी किया है।

गुरुवार को सबसे गर्म रहा नरसिंहपुर

नरसिंहपुर सबसे ज्यादा गर्म रहा। यहां दिन का तापमान 41.8 डिग्री रहा। सीधी में 40 डिग्री, धार में 40.2 डिग्री, खंडवा में 40.5 डिग्री, खरगोन में 41 डिग्री दर्ज किया गया। बड़े शहरों में की बात करें, तो भोपाल में 37.8 डिग्री, इंदौर में 37.8 डिग्री, ग्वालियर में 36.5 डिग्री, जबलपुर में 37.7 डिग्री और उज्जैन में 38 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

मई में इन जिलों में सबसे ज्यादा गर्मी

मौसम विभाग की मानें, तो ग्वालियर, छतरपुर, नरसिंहपुर, निवाड़ी, मैहर, टीकमगढ़, भिंड, दतिया, खरगोन, बड़वानी, खंडवा, मुरैना, राजगढ़, रायसेन, शाजापुर, श्योपुरकलां, शिवपुरी और विदिशा जिलों में तापमान 45 डिग्री या इससे ज्यादा रहने का अनुमान है। इनमें ग्वालियर-चंबल संभाग के साथ मालवा-निमाड़ के कुछ शहरों में भी तेज गर्मी रहेगी। छतरपुर के खजुराहो और नौगांव में पारा 48 डिग्री तक पहुंच सकता है। भोपाल में टेम्प्रेचर 44 से 45 डिग्री के बीच रहने का अनुमान है, जबकि इंदौर, जबलपुर और उज्जैन में भी पारा इतना रह सकता है। बड़े शहरों में ग्वालियर में सबसे ज्यादा गर्मी पड़ेगी। यहां पारा 47 डिग्री के बीच पहुंचने का अनुमान है।

कांग्रेस आपसी भाईचारा बढ़ाने में विश्वास रखती है: श्रीवास्तव

भोपाल लोकसभा के कांग्रेस उम्मीदवार ने सर्व समाज बैठक में लिया हिस्सा

भोपाल। लोकसभा के कांग्रेस उम्मीदवार अरुण श्रीवास्तव ने सर्व समाज बैठक में हिस्सा लिया और कहा कि कांग्रेस देश की सबसे पुरानी पार्टी है और आज भी उसका सबसे बढ़ा मुद्दा सामाजिक भाईचारा है। दूसरी पार्टियां समाज को बांटने का काम करती हैं, लेकिन कांग्रेस एकजुटता में विश्वास रखती है।

श्री श्रीवास्तव ने सामाजिक प्रतिनिधियों से कहा कि भोपाल में पिछले तीन दशक से हम जिस पार्टी के प्रतिनिधियों को विजयी बनाते आए हैं, उनमें से किसी भी सांसद की कोई विशेष उपलब्धि हो तो बताएं। राजधानी में भेल से लेकर तमाम केंद्रीय संस्थान कांग्रेस की ही देन हैं। ये लोग तो आते हैं और सरकार की वाहवाही में लग जाते हैं। भ्रष्टाचार भी करते हैं, लेकिन अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाते। हमारी माताजी स्व.श्रीमती विमला श्रीवास्तव यहां जनपद और जिला पंचायत अध्यक्ष रही हैं, ग्रामीण क्षेत्र के लोग आज भी उन्हें क्यों याद करते हैं? क्योंकि उन्होंने वहां काम किया है। लोगों से उनका व्यवहार ऐसा था कि लोग उन्हें मम्मीजी कहने लगे।

श्री श्रीवास्तव ने कहा कि आज भी गांव के लोगों से उनके पारिवारिक संबंध हैं। वहां उन्हें वैसा ही प्यार आज भी मिलता है। राजधानी में भी उनके सैकड़ों परिवारों से संबंध रहे हैं। सामाजिक जुड़ाव पीढ़ियों से चला आ रहा है। एक बार उन्हें मौका दिया जाए तो वे संसदीय क्षेत्र की बेहतरी के लिए जीतोड़ मेहनत करेंगे। भोपाल को आईटी हब बनाने की बात हो या फिर पर्यावरण के मामले में और बेहतर करने की, सुव्यवस्थित यातायात की बात हो या फिर आर्थिक क्लस्टर बनाने की, हम इन मोर्चों पर काम करेंगे। ये लोग केवल राजनीति करते हैं, चंदा इनका मुख्य धंधा बना हुआ है। हम मिलकर राजधानी को भ्रष्ट और चंदाखोर नेताओं से मुक्ति दिलाएं, यह संकल्प लें, तो इस शहर का बहुत भला हो सकेगा। बैठक में आदिवासी, पिछड़े वर्ग सहित कई समाज के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

झेलम एक्सप्रेस में बम की सूचना, भोपाल में एक युवक गिरफ्तार

भोपाल। झेलम एक्सप्रेस को बम की सूचना के बाद रानी कमलापति स्टेशन पर शुक्रवार सुबह करीब 8.30 बजे रोक लिया गया। आरपीएफ व जीआरपी ने बोगी में चेकिंग की। मौके पर डॉग स्क्वॉड को भी बुला लिया गया। इस मामले में झेलम एक्सप्रेस में यात्रा कर एक यात्री को आरपीएफ ने गिरफ्तार भी किया है।

आरपीएफ कमांडेंट प्रशांत यादव ने बताया की ट्रेन में किसी युवक द्वारा यात्रा करते समय कहा गया कि ट्रेन में बम है। इसकी सूचना मिलते ही हमने ट्रेन को रानी कमलापति स्टेशन पर रोक लिया। आरोपी को हिरासत में लिया गया है। उसके अनुसार बताए गए कोच को भी पूरी तरह से चेक कर लिया गया है। इस पूरे प्रोसेस में करीब आधा घंटे का समय लगा, इसके बाद हमने ट्रेन को भोपाल के लिए रवाना कर दिया। युवक अभी मानसिक रूप से बीमार नजर आ रहा है। हालांकि, पूछताछ के बाद ही कुछ कह पाना संभव होगा।

रानी कमलापति स्टेशन पर श्रीराम ट्रेन में बम की सूचना मिलते ही जिसे बम की सूचना दी थी उसे पुलिस ने दबोचा। पुलिस ने स्टेशन पर सर्चिंग करते हुए स्टेशन पर अंदर जाने से यात्रियों को रोका, सर्चिंग ना होने के बाद ही स्टेशन के अंदर प्रवेश करने दिया गया।

इमरती देवी पर विवादित टिप्पणी को लेकर जीतू पटवारी पर भड़की भाजपा, जीतू ने किया खेद व्यक्त

भोपाल। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी द्वारा भाजपा नेत्री व पूर्व मंत्री इमरती देवी को लेकर की गई विवादित टिप्पणी पर सियासत गरमा गई है। भाजपा ने तय किया है कि पटवारी जहां-जहां भी जाएंगे, वहां काले झंडे दिखाकर विरोध किया जाएगा। दरअसल, ग्वालियर में मीडिया को संबोधित करते हुए जीतू पटवारी ने कहा था कि देखो ऐसा है कि अब इमरती देवी का रस खत्म हो गया है। पटवारी के इस बयान के बाद भाजपा जीतू के खिलाफ चौतरफा हमलावर है। जीतू पटवारी ने मामला तूल पकड़ने के बाद भले ही खेद व्यक्त कर दिया हो, लेकिन भाजपा उन्हें बख्शने के मूड में नहीं है।

माफी मांगें जीतू - कृष्णा गौर- इस मामले को लेकर शुक्रवार को राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार कृष्ण गौर ने भाजपा मीडिया सेंटर में पत्रकारवार्ता कर कहा कि जीतू पटवारी को एक महिला का अपमान करने के लिए माफी मांगनी चाहिए। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की डिक्शनरी में महिलाओं का अमपान करने वाले एक से बढ़कर एक शब्द हैं।

जीतू ने दी सफाई- इधर, इस मामले पर जीतू पटवारी ने सफाई दी है कि उनके बयान को तोड़मरोड़ कर गलत संदर्भ में प्रस्तुत किया जा रहा है। इमरती मेरी बड़ी बहन जैसी हैं और बड़ी बहन मां के समान होती है। यदि फिर भी किसी को ठेस पहुंची हो, तो मैं खेद व्यक्त करता हूं।

आर्ट टीचर्स की वर्कशॉप एन आई डी में अपने तरह की अनूठी कार्यशाला 28 मई से

भोपाल। मध्यप्रदेश में डिज़ाइन और कला शिक्षा को समृद्ध और उपयोगी बनाने के लिए स्कूलों आर्ट और क्राफ़्ट टीचर्स की एक वर्कशॉप राष्ट्रीय डिज़ाइन संस्थान मध्यप्रदेश द्वारा आयोजित की जा रही है। ये जानकारी देते हुए नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ डिज़ाइन, भोपाल की कार्यवाहक निदेशक नीतिका देवगन ने बताया कि अपनी तरह के इस अनूठे आयोजन में स्कूली कला शिक्षकों को डिज़ाइन की भाषा, व्याकरण और अनुप्रयोग से परिचित होने का मौक़ा मिलेगा। वे चाइल्ड राइट्स ऑब्ज़र्वेटरी और आर्ट डिज़ाइन टीचर्स फ़ोरम द्वारा आयोजित डिज़ाइन डायलॉग में स्कूल के प्राचार्य और कला शिक्षकों से बातचीत कर रहीं थीं।

उन्होंने बताया कि ये वर्कशॉप विशेष रूप से मध्यप्रदेश के कला शिक्षकों और कला पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर आयोजित की जा रही है इसलिए डिज़ाइन थिंकिंग जैसे आधुनिक अनुप्रयोग को भी शामिल किया जाएगा। इससे स्कूली आर्ट और क्राफ़्ट टीचर्स डिज़ाइन से वाबस्ता हो कर अपने स्टूडेंट्स को नॉलेज ट्रांसफ़र कर सकेंगे जो बेहद उपयोगी होगा।

एन.आई.डी. फ़ैकल्टी डॉ. शबरीधरन ने बताया कि रचनात्मक कार्यशाला नामक इस चार दिवसीय वर्कशॉप में एन.आई.डी. की फैकल्टी के अलावा बाहर से विशेषज्ञ भी

बुलाए जाएँगे जो एस्थेटिक्स ऑफ़ आर्ट एंड डिज़ाइन, इंपैक्ट ऑफ़ आर्ट, माइंड डायनामिक्स एंड वेल-बीइंग जैसे विषयों पर चर्चा करेंगे। इसके अलावा इम्पोर्टेंस ऑफ़ डिज़ाइन एजुकेशन इन स्कूल टीचिंग, क्रिएटिविटी एंड मैडनेस सहित टेक्सटाइल, वीविंग जैसी वर्कशॉप प्रैक्टिस भी शामिल होगी।

डिज़ाइन डायलॉग में चाइल्ड राइट्स ऑब्ज़र्वेटरी की सचिव रश्मि सारस्वत, आर्ट डिज़ाइन फोरम के संयोजक सुनिल शुक्ल और वरिष्ठ कलाकार देवीलाल पाटीदार ने भी कला शिक्षकों से संवाद किया और ऐसे आयोजन दोहराए जाने का आश्वासन दिया। इस सत्र में क़रीब 40 आर्ट टीचर्स, 4 प्रिंसिपल्स और मीडिया कर्मी शामिल हुए।

भाजपा विधायक ने टीआई को दी धमकी-ऐसी जगह फिकवाऊंगा कि वापस नहीं आएगा

मंडीदीप। पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की एक चुनावी सभा में माइक बंद हुआ तो उन्होंने भाषण रोक दिया। घड़ी दिखाते हुए पूछा- माइक कैसे बंद कर दिया? अभी दस नहीं बजे हैं, चालू करो। उन्होंने तो केवल कहा, लेकिन मंच पर मौजूद विधायक सुरेंद्र पटवा ने थाना प्रभारी को धमकाते हुए कहा, इधर आ, ऐसी जगह फिकवाऊंगा कि वापस नहीं आएगा।

मंडीदीप में गुरुवार रात को हुई सभा का वीडियो आज सामने आया है। इसके अनुसार पूर्व सीएम और विदिशा से लोकसभा प्रत्याशी शिवराज प्रचार करने मंडीदीप पहुंचे थे। उन्होंने दुर्गा मंदिर से रोड शो किया। इसके बाद वे एक चुनावी सभा को संबोधित करने सतलापुर चौराहे पर पहुंचे। रात के 10 बजते के आसपास माइक बंद हो गया। इस पर विधायक सुरेंद्र पटवा थाना प्रभारी महेंद्र सिंह ठाकुर पर भड़क गए। यह देख शिवराज भी कुछ पल असहज दिखाई दिए। हालांकि, इसके बाद माइक पुनः चालू कर दिया गया। शिवराज ने अपना भाषण शुरू कर दिया।

तकनीकी समस्या के चलते हुआ माइक बंद- रायसेन एसपी विकास कुमार शहवाल का कहना है कि रात 10 बजे के दो या तीन मिनट पहले तकनीकी समस्या के चलते माइक बंद हुआ था, जो कुछ सेकेंड में फिर चालू हो गया। अभी किसी प्रकार कोई शिकायत नहीं आई है।

कांग्रेस ने अशोभनीय और निंदनीय कृत्य बताया

प्रदेश कांग्रेस ने भाजपा विधायक सुरेंद्र पटवा का वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर करते हुए लिखा- बीजेपी का अहंकार देखो, चुनाव आचार संहिता का पालन कराने पर बीजेपी के मंच से पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सवाल किए और सुरेंद्र पटवा ने थाना प्रभारी महेंद्र सिंह ठाकुर को बदतमीजी करते हुए धमकाया। शिवराज जी, एक पूर्व मुख्यमंत्री का यह स्तर? बेहद अशोभनीय और निंदनीय कृत्य।

श्रमिकों का न्यूनतम वेतन पुनः निर्धारण किया जाए

मुख्य सचिव को पत्र लिखकर कर्मचारी मंच ने मांग की

रीवा। मध्य प्रदेश के दैनिक वेतन श्रमिकों का वेतन 20 साल पुराने इंडेक्स के आधार पर निर्धारित किया गया है जिस कारण दैनिक वेतन श्रमिकों को हजारों रुपए कम वेतन मिल रहा है मध्य प्रदेश कर्मचारी मंच ने मुख्य सचिव को पत्र लिखकर मांग करी है कि प्रदेश में दैनिक वेतन श्रमिकों का वेतन पुनः निर्धारित करके सन् 2021 के इंडेक्स के आधार पर वेतन निर्धारण किया जाए।

मध्य प्रदेश कर्मचारी मंच के प्रदेश अध्यक्ष अशोक पांडे ने जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि अप्रैल 2024 से दैनिक वेतन भोगी श्रमिकों अकुशल श्रमिक अद्ध कुशल श्रमिक कुशल श्रमिक उच्च कुशल श्रमिक का वर्तमान में किया गयान्यूनतम वेतन संशोधन निराशा जनक है केंद्र के दैनिक वेतन श्रमिकों एवं राज्य के दैनिक वेतन श्रमिकों के वेतन में भारी अंतर है मध्य प्रदेश के दैनिक वेतन भोगी श्रमिक को केंद्र सरकार के श्रमिकों से 43त्न से लेकर 63त्न कम वेतन मिल रहा है मध्य प्रदेश में 1 अप्रैल 2024 से दैनिक वेतन श्रमिकों के वेतन में मात्र 20त्न की वृद्धि की गई है यह वृद्धि 20 साल पुराने इंडेक्स के आधार पर की गई है जिस कारण मध्य प्रदेश के दैनिक वेतन भोगी श्रमिकों को बड़ा आर्थिक नुकसान हो रहा है भीषण महंगाई में श्रमिकों को 20 साल पुराने 2001 के इंडेक्स के आधार पर वेतन भुगतान करना दैनिक वेतन श्रमिकों के साथ अन्याय है भारत सरकार रोजगार एवं श्रम मंत्रालय मुंबई द्वारा जारी परिपत्र में स्पष्ट निर्देश है कि जहां केंद्र और राज्य सरकार ने मिनिमम वेज फिक्स किए हैं वहां केंद्र व राज्य सरकार जिसकी भी मिनिमम वेज दर ज्यादा होगी वही अधिक दर लागू की जाए लेकिन मध्य प्रदेश में अनुचित फार्मूला अपना कर वेतन निर्धारण 1 अप्रैल 2024 से किया गया है जिसे सरकार तत्काल पुनः निर्धारण करके श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के निर्देशानुसार नवीन वेतन निर्धारण करे।